नवरात्रि विशेषांक
मार्च-2021
मूल्य-40/-
वर्ष 11
अंक 6
नारायण-मंत्र-साधना
विज्ञान
तारा साधना
साबर साधना
नवरात्रि पूजन विधान
तांत्रोक्त गुरु साधना
लक्ष्मी का साक्षात् स्वरूप-
लक्ष्मी वरवद माल्य

पूज्य सद्गुरुदेव के आशीर्वाद तले प्रकाशित

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

कृपया ध्यान दें

1. यदि आप साधना सामग्री शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं।
2. यदि आप अपना पता या फोन नम्बर बदलवाना चाहते हैं।
3. यदि आप पत्रिका की वार्षिक सदस्यता लेना चाहते हैं।

तो आप निम्न वाट्सअप नम्बर पर मैसेज भेजें। 8890543002

450 रुपये तक की साधना सामग्री वी.पी.पी से भेज दी जाती है।
परन्तु यदि आप साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं तो सामग्री की न्यौछावर राशि में डाकखर्च 100 रुपये जोड़कर निम्न बैंक खाते में जमा करवा दें एवं जमा राशि की रसीद, साधना सामग्री का विवरण एवं अपना पूरा पता, फोन नम्बर के साथ हमें वाट्सअप कर दें तो हम आपको साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से भेज देंगे जिससे आपको साधना सामग्री अधिकतम 5 दिनों में प्राप्त हो जायेगी।

बैंक खाते का विवरण

खाते का नाम : नारायण मंत्र साधना विज्ञान
बैंक का नाम : स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
ब्रांच कोड : SBIN0000659
खाता नम्बर : 31469672061

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

1 वर्ष सदस्यता 405/– — दुर्गा यंत्र + माला — 405 + 45 (डाक खर्च) = 450

1 वर्ष सदस्यता 405/– — काली यंत्र + माला — 405 + 45 (डाक खर्च) = 450

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 2432209, 7960039

आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

आत्म-प्रकाश

|| ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ||

तेजस्विता एवं सम्पन्नता प्राप्ति हेतु : नवरात्रि दुर्गा पूजन

जीवन के सर्व शोक एवं दोष मिटाने में सहायक : जयादुर्गा साधना

आर्थिक एवं व्यापार वृद्धि के साथ सम्पन्नता प्राप्ति हेतु : लक्ष्मी वरवरद माल्य

सद्गुरुदेव

स्तम्भ

साधनाएँ

ENGLISH

विशेष

स्तोत्र

आयुर्वेद

योग

ज्योतिष

प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

आशीर्वाद
पूजनीया माताजी
(पू. भगवती देवी श्रीमाली)

सम्पादक
श्री अरविन्द श्रीमाली

सह-सम्पादक
राजेश कुमार गुप्ता

प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक
श्री अरविन्द श्रीमाली
द्वारा
प्रगति प्रिंटर्स
A-15, नारायणा, फेज-1
नई दिल्ली: 110028
से मुद्रित तथा
'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'
कार्यालय :
हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर से
प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

एक प्रति 40/-
वार्षिक 405/-

सम्पर्क

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368
नारायण मंत्र साधना विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 7960039
WWW address : http:/www.narayanmantrasadhanavigyan.org E-mail : nmsv@siddhashram.me

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस *'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'* पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायें, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अत: उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आजीवन सदस्यता मान्य है। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पड़े तो आजीवन सदस्यता भी उसी दिन पूर्ण मानी जायेगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेख योगी या संन्यासियों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अत: इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अत: पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

प्रार्थना

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव देव।।

हे गुरुदेव! आप ही हमारे पिता, माता, बन्धु, सखा, विद्या और धन हैं। सही कहूँ तो आप ही मेरे सर्वस्व हैं।

अभिन्नता

महाकवि कालीदास जब तक भावना विहीन थे तब उन्हें यह भी सुधि नहीं थी कि जिस डाल पर वे बैठे हैं उसे ही काट रहे हैं। किन्तु जब विद्योत्तमा के पवित्र प्रेम ने उन्हें झकझोरा तो कालीदास का सम्पूर्ण अंत:करण अंगड़ाई लेकर जाग उठा और महाकवि के गीतों में भगवती सरस्वती को उतरना पड़ा।

ऐसा कहते हैं कि एक बार विवाद उठ खड़ा हुआ कि कवि दंडी श्रेष्ठ हैं अथवा कालीदास। जब इसका निर्णन न हो सका तब दोनों सरस्वती के पास गये और पूछा–अंबे! अब तुम्हीं निर्णय कर दो कि हम दोनों में से श्रेष्ठ कौन है? भगवती ने मुस्कुराते हुए कहा–'कवि दंडी! कवि तो दंडी ही हैं।'

महाकवि कालीदास ने भगवती के चरणों में अपना सर्वस्व समर्पण किया हुआ था।यह सुनकर वह उदास हो गये और पूछ बैठे–'अंबे!यदि दंडी ही कवि हैं तो फिर मैं क्या हुआ?'

भगवती ने उसी स्नेह से कहा–'तात! त्वं साक्षात सरस्वती। तुम तो साक्षात सरस्वती ही हो। हम दोनों अभिन्न हैं,यह सुनकर कालीदास का मन पश्चात्ताप से भर गया। वह भगवती के चरणों में झुक गये तब उन्होंने जाना कि नि:स्वार्थ प्रेम की गरिमा कितनी महान है। निश्छल प्रेम अंत:करण को जाग्रत कर देता है, तभी अभिन्नता आती है।

गुरु कुम्हार
शिष्य कुंभ है

गुरु और शिष्य का सम्बन्ध और किस प्रकार शिष्य गुरुत्व में लीन होकर आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत कर सकता है, इसके साथ ही अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को आत्मश्चेतना जाग्रत करने में व्यतीत कर पूर्णता प्राप्त कर सकता है, इन्हीं सब विषयों के सम्बन्ध में सद्गुरुदेव की ओजस्वी वाणी में यह महान प्रवचन–

हमारे इतिहास में शंकरचार्य जैसा संन्यासी व्यक्तित्व नहीं हुआ, केवल 32 साल की अवस्था में उन्होंने चार स्थानों पर मठ स्थापित कर दिए और शंकरभाष्य जैसा ग्रंथ लिखा। गीता को तो फिर भी लोग समझ सके, शंकरभाष्य को आज भी लोग समझ नहीं पाए कि उसमें कितनी गूढ़ विवेचना है, मेरे मन में भी वही छटपटाहट है कि उस शंकरभाष्य को उन्हीं शब्दों में वापस लिखूं सरल भाषा में जो कि शंकराचार्य के मन में कहने की इच्छा थी। जो बात श्रीकृष्ण गीता में कहना चाहते थे, उसका आने वाली पीढी ने अर्थ तो किया, मगर वे मन की बात नहीं समझ पाए। अर्थ एक अलग चीज है, व्यक्ति या कहना चाहता है वह एक अलग चीज है।

मन के भावों को शब्द कभी-कभी व्यक्त नहीं कर सकते। जब राम-सीता स्वयंवर में गए, विश्वामित्र और लक्ष्मण के साथ और वाटिका में घूम रहे थे तो सीता तुलसी की पूजा करने आ रही थी और राम ने एक क्षण के लिए सीता को देखा। देखा और तुलसी ने चौपाई में लिखा जिव्हा नैन, नैन बिनु वानी कि जीभ बहुत कुछ कहना चाहती है पर उसके पास आँखें नहीं हैं, वह देख नहीं पा रही बेचारी वह बोल सकती है, पर आँखें नहीं हैं।

और नैन बिन वाणी आँखें बहुत कुछ देख लेती हैं पर उनके पास वाणी नहीं है वह कुछ बता नहीं सकती। ठीक उसी प्रकार से शंकर क्या कहना चाहते थे वह हम समझ नहीं पाए, समझा भी नहीं पाए। शायद कोई क्षण मिले कि शंकरभाष्य का सही चिंतन दे सकूं, गीता का सही चिंतन दे सकूं। मगर वह तो जैसा गुरुदेव चाहेंगे, प्रभु चाहेंगे वैसा ही हो पाएगा।

मगर यह सब ज्ञान राख में बदल नहीं जाए, यह ज्ञान अपने आप में जीवित जाग्रत बन सके। शंकराचार्य केवल 32 साल में मृत्यु को प्राप्त हो गए। 32 साल तो कोई उम्र ही नहीं होती और 32 साल में उन्होंने कितने तनाव, तकलीफें झेलीं और उनकी मृत्यु हुई उनके शिष्य के द्वारा। शिष्य ने ही उन्हें कांच घोट कर पिला दिया और केदारनाथ के पास उनकी मृत्यु हो गई।

और अपने अंतिम समय में शंकर ने कहा-

शिष्य शब्द अपने आप में सबसे तुच्छ और घटिया शब्द बन गया है। अगर शिष्य ही गुरु को मारे तो वह शिष्य है ही नहीं। गुरु को गाली बोलना तो बहुत बड़ी बात है, गाली सोचना भी बहुत बड़ा पाप है और अपने स्वार्थ के लिए पादपद्म जैसे घटिया शिष्य ने शंकर को समाप्त कर दिया। ऐसा अधम शिष्य इस पृथ्वी पर पैदा नहीं हो सकता।

और शंकराचार्य को यह पीड़ा थी कि उन्होंने कहा शिष्य शब्द अपने आप में गाली बन गया है।

मैं शंकराचार्य के शब्दों

को सुधारना चाहता हूँ, मैं बताना चाहता हूँ कि शिष्य अपने आप में बड़प्पन का शब्द है, उच्चता का शब्द है। शिष्य घटिया नहीं है कोई जरूरी नहीं, कि सभी पादपद्म बनेंगे। हो सकता है कि कुछ स्वार्थी तत्व हैं परंतु शंकर के शब्दों से पीड़ा झलक रही है।

जो पीड़ा शंकर लेकर चले गए, जो वेदना लेकर चले गए शायद और दस साल जीवित रहते तो और दो, चार शंकरभाष्य जैसे ग्रंथ लिख देते और उनके होठों पर ये शब्द भी न आते कि शिष्य शब्द घटिया है। मगर इन हजारों सालों तक शिष्य शब्द अधम और घटिया रहा और मैं अपने जीवन में उस शब्द को सुधारना चाहता हूँ कि शिष्य शब्द से उच्च कोटि का कोई शब्द नहीं है। वह आपमें ह्रदय का बीज है, ह्रदय का रक्त है। ऐसा ही प्यार आपसे मुझे चाहिए।

आप सोचिए कि अगर आपके शरीर का स्पर्श मेरे शरीर से हो जाता है तो इसलिए नहीं कि मैं बहुत महान व्यक्ति हूँ। मैं तो बहुत सामान्य व्यक्ति हूँ मगर गोविंदपादाचार्य ने शंकराचार्य की मृत्यु के बाद कहा कि वे लोग धन्य हैं जिन्होंने अपने जीवन में शंकराचार्य के चरणों को स्पर्श किया, केवल स्पर्श किया।

गुरु जीवित रहे, पर शंकर की मृत्यु हो गई। गोविन्द पादाचार्य उनके गुरु थे और वे तो वास्तव में ही हजारों हजारों देवताओं से भी अद्वितीय हैं जिनका शरीर शंकराचार्य के शरीर से स्पर्श हुआ होगा, जुड़ा होगा, ह्रदय की धड़कनें जुड़ी होंगी, प्राणों के स्पंदन जुड़े होंगे, वास्तव में ही उनके जैसा तो व्यक्ति हो ही नहीं सकता। क्योंकि एक लोहा भी पारस से स्पर्श करेगा तो कुंदन बन जाएगा, सोना बन जाएगा। एक लकड़ी का टुकड़ा बबूल भी अगर चंदन से रगड़ खाएगा तो अपने आप में सुगंधयुक्त बन जाएगा।

कभी-कभी यह वेदना होती है कि गुरु बनकर ठीक किया या नहीं किया, क्या मैंने वापस गृहस्थ में आकर उचित किया या नहीं किया, कभी-कभी मानसिक पीड़ा होती है। मगर फिर एक बार मन में सोचता हूँ कि जीवन का यही धर्म है।

मैंने पहले भी कहा था कि ऋषि, मुनि, योगी, यति बेकार हैं जो कंदराओं में जाकर बैठ गए, उनको यहाँ आना चाहिए, आग में जलना चाहिए, तपना चाहिए, खून जलाना चाहिए, मगर इन लोगों को यहाँ ज्ञान देना चाहिए। एकांत में जंगली पशु बैठे ही हैं, आप भी

बैठे हैं। उनकी भी जटाएँ बढ़ी हैं, बाल बढ़े हुए हैं, तुम्हारे भी बाल बढ़े हुए हैं। तुमने उच्च कोटि की साधनाएँ कर लीं उनका जीवन में क्या अर्थ है? मैं आवाज दूं तो मुझे इतना विश्वास है कि हजारों, हजारों उठ करके मेरे साथ खड़े हो जाएंगे, हजारों शिष्य खड़े हो जाएंगे,क्योंकि मेरे जीवन में मैंने कोशिश यह की है कि प्यार दूं आपको और मैं कह रहा हूँ मुझे कोई दक्षिणा नहीं चाहिए। आपसे धन नहीं चाहिए, न धोती चाहिए, न कपड़े चाहिए, न आभूषण चाहिए। केवल प्यार दीजिए मुझे।

क्योंकि उससे अमूल्य कोई चीज नहीं है और मैं आपको साधनाएँ देना चाहता हूँ, उच्च कोटि का व्यक्तित्व बनाना चाहता हूँ और उसके लिए आपका साहचर्य चाहिए, सामीप्यता चाहिए। आपके मेरे बीच में स्वार्थ की और न्यूनता की रेखा खिंच जाएगी तो न मेरा आपसे मिलन हो सकेगा, न मैं आपसे मिल सकूंगा।

होठों पर एक मुस्कान रहेगी, हृदय में एक धड़कन रहेगी कि ये शिष्य मेरे हैं, मेरी आवाज पर ये दौड़े चले आते हैं, बलिदान करने को तैयार हो जाते हैं, अपने आपको समाप्त करने को तैयार हो जाते हैं और सब कुछ देने को तैयार हो जाते हैं। कई बार मैंने अनुभव किया है।

शंकर का स्मरण आया तो ये शब्द निकले मेरे मुंह से, उनसे मिलना होता है सिद्धाश्रम में, उनकी मन की पीड़ा को मैं देखता हूँ, मैं कहता हूँ, यहाँ वापस ग्रंथ लिखिए आपके पास श्रेष्ठ श्लोक हैं।

मगर जो कांटा चुभ गया उनके हृदय में, वह निकल नहीं पा रहा है। हर बार चलते हैं और फिर वह कांटा खटक जाता है–जैसे आपने कोई गाली बोली, आप चले गए मैं चला गया मगर दो महीने बाद भी आपका नाम याद आते ही फिर मन में कसक आती है कि उसने मुझे गाली क्यों दी, क्या हो गया? प्यार क्यों नहीं दिया? और देने वाले प्यार भी देते हैं। नहीं मिलते दो-दो, तीन, तीन महीने मना करने पर नहीं मिलते मगर उनकी आँख में हृदय में, कुछ भी अंतर नहीं आता। यह आपकी मजबूरी है कि आप नहीं मिल पाते। कभी मेरी आज्ञा होती है, आप नहीं मिल पाते, कभी आपकी समस्या होती है आप नहीं मिल पाते। ऐसा होता है जीवन में मैं समझता हूँ। इसका मतलब यह नहीं, हमारे पांव ठिठक जाएं, हमारे हाथ रुक जाएं।

आपका जन्म एक गुरु के लिए हुआ है और मेरा जन्म आपको उस गुरु रूप से भी ऊँचा उठाने के लिए हुआ है। यह मेरे जीवन का कर्तव्य है ऐसा ही होगा, ऐसी ही इच्छा है। आपके और मेरे बीच में समय का अंतराल नहीं आना चाहिए, समय बीच में

खड़ा नहीं होता।

अगर समय बीच में खड़ा हो, काल बीच में खड़ा हो जाए तो उसको भी धक्का मारकर हम एक दूसरे से मिल सकते हैं–काल हमारा कुछ बिगाड़ नहीं सकता, समय हमारा कुछ बिगाड़ नहीं सकता।

एक मन में कर्तव्यनिष्ठा, दृढ़निष्ठा हो, संकल्पमस्तु हो, तो ऐसा होगा ही। आगे तो समय आने पर, मगर ऐसा करेंगे हम।

कल रात भी सिद्धाश्रम गया तो शंकराचार्य की व्यथा को देख रहा था। इतने वर्षों के बाद भी उनके मन में एक व्यथा थी।

मैंने उनसे कहा कि आपने जो शब्द शिष्य के लिए कहे मैं उनको पलट करके दिखा देना चाहता हूँ कि शिष्य अपने आप में सब कुछ न्यौछावर कर देने के लिए ही बना है। ऐसा करके मैं दिखा दूंगा।

मैंने उनको आश्वस्त किया है। मैंने आपसे कहा आपके जमाने में अधम शिष्य थे आज भी होंगे। मैं यह नहीं कहता आज जहर नहीं है। इस जमाने में जहर है मगर इस जमाने में अमृत भी है, हो सकता है, 15-20-25 घटिया हों, मगर सैकड़ों शिष्य हैं, जो मेरे पीछे पागल हैं दिवाने हैं, दिवानगी की हद तक हैं। आपने आपको फना करने करने के लिए तैयार हैं, आग में जलने के लिए तैयार हैं, मैंने देखा है, अनुभव किया है, परखा है।

यह मेरा सौभाग्य है, यह आपका सौभाग्य है कि मैं आपके बीच खड़ा हूँ और उन लोगों (देवताओं) और आपके बीच में कड़ी हूँ, आपकी बात उन तक पहुँचाने की क्षमता रखता हूँ और उनकी बात भी आप तक पहुँचाने की क्षमता रखता हूँ। मैं आपको उस जगह पहुँचाना चाहता हूँ कि आप सिद्धाश्रम जा सकें, सूक्ष्म शरीर से वहाँ पहुँच सकें, और देख सकें।

साफल्य रूपं भवतं श्रियंवै, ज्ञातं सदाम पूर्णमदैव तुल्यं

दीर्घो वतां स्थूल तनैव रूपं शिथिर, मदाम व गुरुवै च शब्दं

शंकराचार्य ने इस श्लोक में एक बहुत उच्च कोटि की बात कही है, जिसे समझने की जरूरत है। उसने कहा कि गुरु और सिद्धि या साफल्य सिद्धि-यानि सफलता युक्त सिद्धि दो अलग-अलग चीजें नहीं हैं। जहाँ गुरु हैं वहाँ सिद्धियों में सफलता है, जहाँ सिद्धियों में सफलता है वहाँ गुरु है, इन दोनों में अंतर

नहीं किया जा सकता। अंतर तब होता है जब गुरु-शिष्य के बीच में अंतर होता है। और अगर यह अंतर है तो शंकराचार्य कहते हैं कि यह गुरु का कर्तव्य है कि इस अंतर को मिटाए क्योंकि शिष्य को ज्ञात नहीं कि अंतर है कि नहीं और अंतर कैसे मिट सकता है। उसने गुरु पर ही कर्तव्य डाला। उसने गुरु को भी एक लकीर में बांधने की कोशिश की है। केवल शिष्यों पर ही भार नहीं डाला है। यह कहा कि गुरु का धर्म है और अगर वह न्यूनता बरतता है तो... और आज के युग में आपकी साधना में न्यूनता संभव है, मैंने आपसे अभी कहा कि केवल ऐड़ी के बल पर खड़े हों, पंजे के बल पर खड़े हों और अगर आप की ऐड़ी टिकी एक बार या दो बार तो स्वाभाविक है कि यह आपकी न्यूनता है। क्योंकि इस साधना में जरूरी है कि पंजे के बल ही खड़े हों। ऐड़ी ही ऊपर उठ सकेगी, पूरा पैर उठने में तो टाइम लगेगा। मगर ऐड़ी टिकी रही तो आपकी ही यह न्यूनता रही। इस न्यूनता को मैं समझता हूँ, आप मुझसे कहें या नहीं कहें। शिष्य की गलती नहीं है योंकि वह तो एक हाड़-मांस का व्यक्ति है, प्राणतत्व अभी तक नहीं आ पाया है। आ भी नहीं पाएगा एकदम से। उसे सफलता देना गुरु का धर्म और कर्तव्य है कि अंतिम क्षण तक उसको गुरु सफलता प्रदान करे। वह नहीं कहे तो भी करे। थप्पड़ मारकर भी सफलता दिलाए, प्यार करके भी सफलता दिलाए, मगर उसे सफलता दिलाए यह गुरु का धर्म है, यह गुरु का कर्तव्य है।

उसके थप्पड़ मारने में भी एक प्यार होता है, गाली देने में भी एक प्यार होता है, एक मधुरता होती है। उसकी गाली क्रोधयुक्त नहीं होती।

कबीर ने कहा है-

गुरु कुम्हार शिष्य कुंभ है। गढ़ी गढ़ी काढ़े खोट।
भीतर भीतर सहज के बाहर बाहर चोट।

एक छोटी सी सुराही भी होती है उसे बाहर से चोट देता है कुम्हार, मगर अंदर हाथ लगाए रखता है और धीरे-धीरे फिर उसे बना देता है। अंदर से उसे सहेजता है। मैं भी अंदर से सहेजता हूँ, ऊपर से डांटता हूँ, फटकारता हूँ। मगर उसमें भी प्यार है, एक अपनापन है। आपको डांटने-फटकारने में मुझे कोई आनन्द नहीं है। मगर मैं चाहता हूँ आपको सफलता मिले।

कल ही एक प्रसंग में शंकराचार्य कह रहे थे कि शिष्य को मंत्र दें मगर मंत्र देने के बाद भी उनको सफलता नहीं मिलती और नहीं मिलती है, तो वे हताश-निराश हो जाते हैं। गुरु से नहीं कहते हैं कि क्या कही हुई बात गलत है, या मैं गलत हूँ।

वह भ्रमित हो जाता है और गुरु को कह नहीं पाता। कहीं न कहीं कोई मजबूरी होती है कि गुरु को कैसे कहूँ।

मगर गुरु को आगे बढ़कर कहना चाहिए कि तुम्हारे अंदर न्यूनता आ रही है तो उस न्यूनता को सुधारना भी मेरा धर्म है, कर्तव्य है–गुरु के रूप में कर्तव्य है।

किस प्रकार से वह सफलता मिले और मैं लोगों को दिखा सकूँ।

शंकराचार्य कल मुझे बोल रहे थे, उन साधकों को, उन शिष्यों को ऐसा ज्ञान, ऐसी चेतना दें कि उनकी साधना में न्यूनता हो भी तब भी उनको सफलता मिल जाए।

रहे न्यूनता, वह तो रहेगी ही। मगर फिर भी सफलता मिले दोनों में विरोधाभास है। आप मंत्र बोले ठीक से न बोलें और फिर भी सफलता मिल जाए।

अब विरोधाभास को मिटाने के लिए क्या किया जाएं?

यह एक कठिन क्रिया है। मैं कहूँ कि तुम्हें इस प्रकार से खड़ा होना पड़ेगा और आप 8 माला के बीच ही घुटने टेक कर बैठ जाएं कि छोड़ो 6 माला ही बहुत हैं, आकाश में तो उड़ने से रहे, ये फालतू की बातें हैं। छोड़िए इसे। ऐसे कोई हवा में उड़ सकते हैं, दिमाग खराब है तुम्हारा, फिर हवाई जहाज किस लिए बने। तुम सोचो ऐसा कैसे हो सकता है और तुम हताश निराश होकर रह जाते हो।

हनुमान जी के पास कोई हवाई जहाज तो था नहीं। जब लंका गए तो हवाई जहाज में तो बैठकर गए नहीं। वे तो उड़ कर गए थे। तो वे कैसे चले गए?

या तो पुराण गलत हैं या फिर हम गलत हैं। वायु वेग के माध्यम से भी व्यक्ति गमनशील हो सकता है और होता है। आज से पचास साल पहले ही विशुद्धानन्दजी ने ये क्रियाएं करके दिखाई थीं। परंतु क्रिया करके दिखाई उसके बाद वे बहुत तकलीफ ही पाए। एक मिनट भी चैन से नहीं बैठ सके। घर में जो शिष्य आता वह बार-बार यही कहता कि करके दिखाओ। उन्हें भी लगा कि मैंने यह बहुत गलत कर दिया कि यह प्रेक्टिकल क्रिया करके दिखा दी।

सबसे ज्यादा जरूरी है साधनाएँ प्राप्त करना, परंतु उनसे भी ज्यादा जरूरी है साधना में
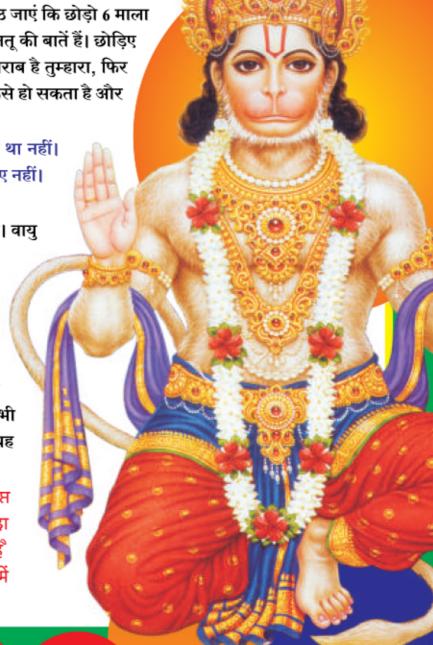
सफलता प्राप्त करना। आपको सफलता एक नहीं, दो साधनाओं में प्राप्त करनी है। मेरे साथ रहकर आपने कम से कम, पचास, साठ साधनाओं में भाग लिया होगा। आपमें से कुछ साधकों को सफलता मिली, कुछ को नहीं मिल पाई।

तो कल शंकराचार्य के साथ प्रश्न यही उठा था कि या कोई ऐसी युक्ति नहीं है कि एक बार के प्रयास में ही उन्हें सफलता दिला दें। उनको एहसास हो जाए, जीवन का एक कर्तव्य, एक धर्म पूरा हो जाए। शंकराचार्य ने कहा ऐसी तो कोई युक्ति है ही नहीं, ऐसी कोई सिद्धि ही नहीं है। ऐसा कोई मंत्र नहीं है।

मैंने कहा आप कुछ हजार वर्ष पहले पैदा हुए, मगर पृथ्वी लोक तो इससे बहुत पहले उत्पन्न हुआ, पच्चीस हजार वर्ष पहले आर्य पैदा हुए। यह मंत्र जरूर है। मैं आपकी बात को काट नहीं रहा हूँ। मगर साधना में सफलता मिले ऐसा मंत्र भी है कि अगर शिष्य में न्यूनता रहे तो न्यूनता रहते हुए भी, पूर्ण बन पाए। ऐसी साधना भी है कि सफलता मिल सके पूर्ण उनको।

मैंने आपको बहुत सी उच्चकोटि की साधनाएँ दीं और आपने बहुत गहराई के साथ प्राप्त की और मुझे विश्वास है कि आप अवश्य उन्हें करेंगे। हो सकता है कक्षा में 50 लड़के बैठे हों, तीस पास हो जाएं और बीस फेल हो जाएं। मगर फेल होने में उस अध्यापक की भी गलती है, शिष्य की तो गलती है ही।

यही प्रश्न विश्वामित्र के भी सामने उठा था और विश्वामित्र ने कहा कि मेरा एक भी शिष्य साधना में असफल नहीं हो सकता, क्योंकि मैं ब्रह्माण्ड की रश्मियों से उस मंत्र को खींच कर प्रस्तुत कर दूंगा कि सफलता मिले ही।

मंत्र किसी ऋषि ने नहीं बनाए अगर ऋषि ने बनाए होते तो वशिष्ठ उपनिषद होता, विश्वामित्र उपनिषद होता। उपनिषद तो लिखे गए पर उनका ज्ञान, उनके मंत्र ब्रह्माण्ड की रश्मियों से अपने-आप निर्मित हुए और आज भी ब्रह्माण्ड की रश्मियों के माध्यम से निर्मित होते हैं।

तो विश्वामित्र ने उस मंत्र को प्राप्त किया जिस मंत्र के माध्यम से न्यूनता,

कमी, अशुद्धता, अशुचिता-अशुचिता का मतलब पवित्रता की न्यूनता होते हुए भी व्यक्ति को साधना में सफलता मिल जाए और विश्वामित्र ने पहली बार उस मंत्र को उजागर किया। उसने शिष्यों को कहा तुम जान-बूझ कर गलती करो मंत्र में और मैं तुम्हें सफलता देता हूँ।

शिष्यों ने कहा ऐसा कैसे हो सकता है? आपने मंत्र दिया हमें तो वह, मंत्र जप करना है। उसने कहा मैं तुम्हें यह एक्सपेरिमेंट करके दिखा देना चाहता हूँ कि मैं वैज्ञानिक भी हूँ। ऋषि हूँ, योगी हूँ, संन्यासी हूँ मगर वैज्ञानिक भी हूँ और यह करके दिखा देना चाहता हूँ। और उन्होंने उन शिष्यों को उस मंत्र के माध्यम से पूर्ण सफलता प्राप्त करके दिखा दी, कि यह मंत्र अपने आप में शिष्यों के लिए वरदान है और इससे उसे साधना में सफलता मिलती ही है। यह मंत्र अपने आप में अद्वितीय है, उच्च कोटि का है, पूरे जीवन को स्वर्णिम बनाने के योग्य है।

मैं आपकी मजबूरी समझता हूँ, समझ रहा हूँ कि साधना करते हैं तो सफलता नहीं मिल पाती मगर नहीं मिलती तो तुम्हारी गलती है ही क्योंकि जहाँ श्रद्धा नहीं है, समर्पण नहीं है, जहाँ आत्मनिवेदन नहीं है वहाँ न्यूनता है।

मगर श्रद्धा-समर्पण होते हुए भी कभी-कभी साधना में सफलता नहीं मिल पाती तो गुरु फिर उस रास्ते को दिखा दे और आपने देखा होगा कि मैं तेजी के साथ उन साधनाओं को देता जा रहा हूँ जो साधनाएँ पहले नहीं दे रहा था क्योंकि बाद में कई प्रकार की और कठिनाइयां पैदा हो सकती है, जैसे शंकराचार्य के सामने पैदा हुई, विशुद्धानन्दजी के सामने पैदा हुई।

विश्वामित्र ने इस प्रकार के मंत्र की रचना की, ब्रह्माण्ड की रश्मियों के माध्यम से कि पिछली जितनी भी साधनाएँ शिष्यों ने की उन साधनाओं में भी शिष्यों को पूर्ण सफलता प्राप्त हो ही जाए। इसमें असंभव या असंदेह कुछ हो ही नहीं सकता। असंभव जैसा शब्द फिर जीवन में नहीं जुड़ सकता, ऐसा मैंने शंकराचार्य से कहा तब शंकराचार्य ने कहा, यह सही है, उन्होंने ध्यान लगाने के बाद ऐसा अनुभव किया।

और यदि वह मंत्र गुरु ने नहीं दिया तो क्या बाकी सारी साधनाएँ अपने आप में न्यून रह जाएंगी, ये साधनाएँ गलत नहीं हैं, मगर शायद आप इतनी तीव्रता से उन्हें कर नहीं पाए। यदि मैंने कभी आपको कुछ मिनट पंजों के बल खड़ा किया तो उसमें पांच बार आपकी ऐड़ी टिकी, घर में भी टिकेगी और फिर साधना में सफलता नहीं मिलेगी तो या मेरा दिया हुआ मंत्र झूठा हो जाएगा। आप कहेंगे कि मंत्र से हुआ ही कुछ नहीं।

इसलिए साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त हो उस प्रयोग को सम्पन्न कराना भी गुरु का कर्तव्य है और

आपका भी कर्तव्य है कि गुरु के कहे अनुसार आप अपने में पवित्रता लायें विकारों से दूर हों और आज्ञा का पालन करें। सारी साधनाओं का निचोड़ वही है कि गुरु शिष्य को सफलता के लिए वह प्रयोग दे जो विश्वामित्र ने ही पहली और अंतिम बार कराया। उसके बाद ऋषियों को दिया ही नहीं गया। वह साधना गुरु अवश्य संपन्न कराए। सारे प्रयोगों से बढ़कर भी यह प्रयोग है कि इससे पहले आपने जितने भी प्रयोग किए उनमें भी आपको सफलता मिले।

आप मुझे फिर मिलें तो बता सकें कि गुरुदेव इसमें मुझे यह सफलता मिली। ऐसा मैं चाहता हूँ। शिष्य को मैं दिव्य पुरुष बनाना चाहता हूँ, शिष्य नहीं रखना चाहता हूँ। परन्तु इसके लिए आपका भी सफलता के लिए दृढ़ निश्चियी होना आवश्यक है।

मैं शंकराचार्य के समान यह नहीं कहना चाहता हूँ कि शिष्य शब्द निकृष्ट है, मैं कहता हूँ कि शिष्य जैसा उच्च कोटि का कोई शब्द ही नहीं है। अद्वितीय शब्द है और उसे सिद्धि पुरुष बनाना मेरा धर्म, मेरा कर्तव्य, मेरे जीवन का उद्देश्य और लक्ष्य है और विश्वामित्र के इस गोपनीय प्रयोग को मैं देना चाहता हूँ।

मैं नहीं चाहता कोई शिष्य खाली हाथ रहे, दस-पांच साल जुड़ने के बाद फिर इनके मन में संशय जैसा शब्द होने ही नहीं चाहिए। मैं इनको कहता हूँ दिव्य पुरुष बनो। कैसे बनेंगे ये क्योंकि इनकी न्यूनता तो रहेगी, घर में समस्याएँ तो रहेंगी।

उन समस्याओं को मिटाते हुए मैं इनको सिद्धि प्रदान करूँ चाहे महालक्ष्मी साधना हो, चाहे ऐश्वर्य लक्ष्मी साधना हो, चाहे महाकाल साधना, चाहे गुरु हृदयस्थ धारण साधना हो।

यह एक अद्वितीय प्रयोग है या समझिए पूरे जीवन का निचोड़ है जो आपके लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

मैं आपको हृदय से आशीर्वाद देता हूँ कि यह प्रयोग आप गुरु से अवश्य प्राप्त करें और उसमें पूर्णता प्राप्त करें।

आपके शरीर में एक दिव्यता है, एक चेतना है, बस यह है कि उसे जगाया नहीं गया। आपके अंदर साधकत्व है, प्राणश्चेतना है मगर उसे उत्तेजित नहीं किया गया है और यदि गुरु अपने प्रयास से उसे जगाता है तो आप उसमें निरंतरता नहीं रखते और वह चेतना फिर से सुप्त अवस्था में चली जाती है। फिर भी अनुभव करें कि जब आप गुरु से नहीं जुड़े थे तब और आज के आपके चेहरे में जमीन आसमान

का अंतर है, एक प्रसन्नता, एक मुस्कुराहट है, एक छलछलाहट है।

शंकराचार्य का व्यथा से व्यथित होना स्वाभाविक था, मगर मेरे जीवन में ऐसी घटना, कि कोई शिष्य कमजोर निकले या घटिया निकले, मेरे सामने तो पूरे जीवन में ऐसा हुआ नहीं, संन्यास जीवन में तो, हुआ ही नहीं और जो आज से 50-60 साल पहले जुड़े थे, वे आज भी जुड़े हैं।

और गृहस्थ शिष्य भी जुड़े हैं। एक-एक शिष्य ने एक-एक प्रांत को संभाल रखा है, साधना शिविरों के लिए।

ऐसा लगता है उनमें ऐसा जोश है, ऐसी उमंग है, ऐसी चेतना है कि वे कहते हैं कि बस आप हमें आज्ञा दें क्या करना है?

दीक्षाओं और साधनाओं के माध्यम से ही चेतना प्राप्त हो सकती है। विवेकानन्द ने राजयोग दीक्षा के बारे में वर्णन किया है। मगर मैं लकीर पीटने वाला व्यक्ति नहीं हूँ, मैं विवेकानन्द के प्रति विनीत भाव रखता हूँ मगर उनको सही ढंग से राजयोग दीक्षा प्राप्त नहीं हुई थी। रामकृष्ण परमहंस अत्यंत उच्चकोटि के विद्वान थे मगर पूर्ण रूप से कुण्डलिनी जाग्रत हुई नहीं थी उनकी। उनकी तो स्थिति यह थी कि वे कहीं गए और किसी ने बोल दिया काली, तो वे काली बोलते ही बेहोश हो जाते थे, मूर्छा आ जाती थी, मुंह से झाग निकलने लग जाते थे और काली-काली चिल्लाने लग जाते थे।

ये नहीं है कि वे संत नहीं थे, उन जैसा संत नहीं मिल सकता, अगले 200 साल में भी ऐसा संत पैदा नहीं होगा। मगर कुण्डलिनी जागरण अपने आप में एक अलग क्रिया है, सातों चक्र जागृत हो जाना जीवन का उच्च कोटि का पर्याय है। एक जीवन की श्रेष्ठता है।

मैं पूरे ब्रह्माण्ड में घूमने वाला व्यक्ति एक 8 फुट की कार में कैद हो कर रह गया। यह मेरी कोई उन्नति नहीं हुई। संन्यासी कहते हैं यह उन्नति कहाँ से है। एक पर्वत से दूसरे पर्वत पर आप एक सैकण्ड में चले जाते थे, अब आप कार में घूमते हैं, यह कौन सी आपकी विशेषता है?

वह कार क्या काम आएगी, वह कार न तो मेरे साथ जाएगी, न यह मकान जाएगा, न यह घर जाएगा। यह जीवन

है ही नहीं, ठीक है मुझे इस जीवन में इसलिए रहना पड़ रहा है क्योंकि इसके साथ मेरे गृहस्थ शिष्य जुड़े हैं और तुम शिष्यों से, साधकों से और साधिकाओं से कुछ ऐसा जुड़ाव, कुछ ऐसा एटैचमेंट सा बन गया है—या तो मैं बहुत ज्यादा भावुक हूँ, या आपने मुझ पर कुछ कर दिया है कि मंत्रों से, उसे अलग नहीं कर सकता। कोई वशीकरण कर दिया है। कोई तोड़ ही नहीं है मेरे पास। कई बार उस वशीकरण को तोड़ने की कोशिश की कि छोड़ो जब घरबार की चिंता नहीं है तो इनकी चिंता छोड़ो।

मगर आपका वशीकरण प्रयोग बहुत स्ट्रांग है, आप मुझे भी सिखा दें। बहुत कमाल का वशीकरण किया है।

उन संन्यासियों से कहा मैंने कि मेरे शिष्यों की आँखों में आँसू होते हैं, उनका गला रुंध जाता है, वे भाव विह्वल हो जाते हैं और बिना देखे रह नहीं पाते हैं, अपने जीवन को होम कर देते हैं, ठीक है उनकी विवशताएँ हैं, मजबूरियाँ हैं, मैं इस बात को समझता हूँ। गृहस्थ की मजबूरियाँ होती हैं, संन्यास की भी मजबूरियाँ होती हैं मगर संन्यासी मजबूरियों से बंधे नहीं हैं। आप गृहस्थ मजबूरियों से बंधे हैं-यह आपकी कमजोरी है। क्या हो जाएगा अगर आप मजबूरियों को तोड़ दें, क्या हो जाएगा अगर आपके पास कैडिलेक गाड़ी हो, गाड़ी तो गाड़ी है चाहे सीयेलो हो, फोर्ड हो या कैडिलैक गाड़ी हो, मैं तो बैलगाड़ी में भी बैठा था और उसमें भी मुझे एक आनन्द आ रहा था, और आज सीयेलो में बैठता हूँ तो भी आनन्द आता है। यह मेरे जीवन का पर्याय या हेतु है ही नहीं। मुझे कोई होटल में जाने में आनन्द होता ही नहीं, मगर जब साधकों के बीच होता हूँ तो मैं चाहता हूँ कि तीसरा कोई व्यक्ति क्या हवा भी बीच में नहीं आए।

शंकराचार्य की मृत्यु नहीं हुई एक युग की मृत्यु हो गई, यह गोविंदपादाचार्य ने कहा अपने शिष्य के लिए। एक व्यक्ति को नहीं मारा, पूरा एक युग अंधकार से ग्रस्त हो गया, और वास्तव में अंधकार में ग्रस्त हो गया क्योंकि शंकराचार्य के बाद में कोई ज्ञान और चेतना देने वाला नहीं रहा। राजपूत युग आ गया और राग, रंग, भोग, विलास और ऐशो-आराम में लोग डूब गए, मुगलकाल आ गया उसके बाद रक्तपात हुआ और अनेकों हमारे ग्रंथ खत्म हो गए। अंग्रेज आए और सब कुछ अंधकार में ग्रस्त हो गया।

शंकराचार्य के बाद ज्योति बंद हो गई, गोविंदपादाचार्य ने बिल्कुल

सही कहा था। उन्होंने कहा यह व्यक्ति की मृत्यु नहीं एक युग की मृत्यु है। और उन्होंने कहा कि जिसने भी शंकराचार्य का चरण स्पर्श किया है, वह अपने आप में उच्च कोटि का व्यक्तित्व बन गया है। हाथ मिलाना, भुजाओं में भर लेना, यह तो शायद कई-कई जन्मों का पुण्य होगा, कि किसी ने शंकराचार्य को अपने सीने से लगाया होगा, अपनी बांहों में समेटा होगा वह तो जीवन का एक स्वर्णिम प्रभात होगा। और वास्तव में ही मैं गोविंदपादाचार्य के शब्दों को एहसास करता हूँ कि उसकी वाणी में कितनी कातरता होगी, कितना दु:ख होगा, कितनी वेदना होगी, कितनी कठिनाई से उस शिष्य को जूझारू बनाया होगा।

मैं तो चाहता हूँ कि आप सब भी उच्च कोटि की सफलता प्राप्त करें, सबके सब सफलता प्राप्त करें क्योंकि कोई बेटा न कपूत होता है न सपूत होता है, उसकी प्रवृत्तियाँ कपूत और सपूत होती हैं। वह अपने-अपने भोग भोगता है, वे शिष्य या तो मुझे सुख देंगे या दु:ख देंगे—बीच में कुछ नहीं रह पाएगा।

और दु:ख देंगे तो भी मैं मांग लूंगा, क्योंकि दुख तो कई बार भोगा है। मैं जब पैदा हुआ तो दु:ख और वेदना मेरे साथ पैदा हुई, अब जो जुड़वे भाई हैं या बहन हैं उन्हें मैं छोड़कर भी कहाँ जाऊंगा। जहाँ भी जाऊंगा कोई न कोई वेदना आएगी, कोई न कोई दुख आएगा, समस्या आएगी। भाई-बहन हैं तो पास में बिठाता हूँ उनको, जहाँ भी जाता हूँ घंटे के बाद कोई नई समस्या आती है।

इस बात की मैं चिंता नहीं करता हूँ और अगर समस्या-बाधा आएगी ही नहीं तो मेरे मनुष्य जीवन की सार्थकता ही क्या है। फिर मनुष्य बना ही क्यों? जीवन में बाधाएं अड़चनें आएं और उनको हम पार करें, समुद्र की लहरें आएं, पचास फुट की और हम उन्हें पार कर सकें यह हमारे जीवन की श्रेष्ठता है, उच्चता है, हमारा साधकत्व है।

मिलने में इतना आनन्द है ही नहीं, विरह में जो आनन्द है वह अलग आनन्द है। एक इंतजार रहता है कि फिर मिलेगा जितने ग्रंथ लिखे गए हैं वे सब विरह में लिखे गए हैं, मिलन का तो कोई ग्रंथ है ही नहीं। मिलन हुआ, आया मिल लिए बस आगे कुछ नहीं। विरह में होता है कि वह आएगा, इधर से आएगा, ऐसा करेंगे, खाना बना देते हैं।
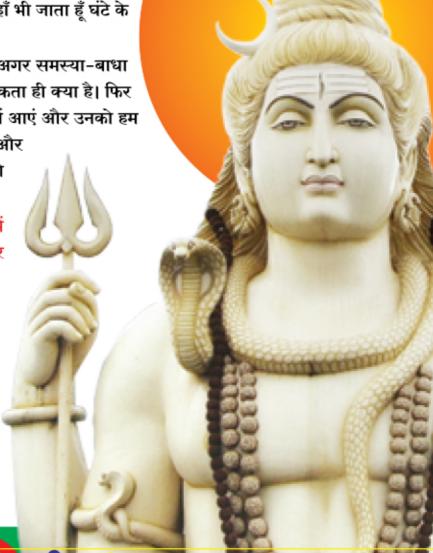
विरह में तो सुख ही सुख है, मगर विरह के बाद मिलन भी होना चाहिए। ऐसा नहीं कि जीवन में विरह ही करते रहें आप। वह तुम्हारे लिए नहीं मेरे लिए तकलीफ हो जाएगी। या तो मुझसे प्रेम करना ही नहीं था, मुझसे दूर रहना था, किया तो और नई समस्या मत पैदा कर देना मेरे लिए।

हर एक चेहरा मुझे याद है, मेरी आँखों में प्रत्येक का बिंब है, मेरी आँखों में अगर आप देखें तो प्रत्येक का फोटो उनमें दिखाई देगा आपको।

मैंने राजयोग दीक्षा के बारे में बताया और उससे भी उच्च कोटि की दीक्षा आज तक पिछले 5000 वर्षों में कोई गुरु दे ही नहीं पाया। शंकराचार्य जिंदगीभर तरसते रहे कि मुझे राज्याभिषेक दीक्षा मिले। पर गोविंदपादाचार्य ने कहा यह दीक्षा मैं नहीं दे सकता, क्योंकि मैं अधिकृत नहीं हूँ। आप शंकरभाष्य पढ़ें।

गांधीजी जिंदगीभर भटकते रहें, उन्होंने चाहा कि मेरा सहस्रार जाग्रत हो। उन्होंने अपनी जीवनी में लिखा है कि मैं क्रिया योग दीक्षा लूँ और उसके लिए कई संन्यासियों से गाँधीजी मिले मगर उन्होंने कहा क्रिया योग हम आपको सिखा ही नहीं सकते, हमें आता ही नहीं।

क्रियायोग जैसा ज्ञान और क्रिया योग से भी कई गुना ऊँचा राजयोग यह प्रत्येक के बस की बात नहीं कि राजयोग दीक्षा दे सके। बहुत एकदम से धधकता हुआ शोला होना चाहिए एक साधना की ऊर्जा, एक तपस्या होनी चाहिए तब पूर्ण राजयोग दीक्षा दी जा सकती है।

शंकरभाष्य में लिखा है— किनियंवदेयं भवतां वदेयं
भाग्यहीनं सहितं सदैव
अज्ञान त्माम गुरुत्माम एव शिष्यं
हत भाग्य मेवं शंकर शंकरं

हे शंकर तुम हत भाग्य हो, तुम्हारा भाग्य ही नहीं, तुम राज्याभिषेक दीक्षा लेना चाहते हो और गुरु ने ही मना कर दिया, गुरु को खुद नहीं प्राप्त है तो वह मुझको कहाँ से देगा? मैं और किस गुरु के पास जाऊं क्योंकि मुझे और कोई गुरु दिखाई नहीं दे रहा है। राजयोग तो मैं समझ लूंगा पर राज्याभिषेक के बिना तो जीवन अधूरा है, अपूर्ण है उस जीवन का फिर मतलब नहीं है।

और उस समय ऐसा गुरु था नहीं जो कह सके कि राज्याभिषेक क्या सम्राटाभिषेक दे सकता हूं। आज के गुरु तो सम्राटाभिषेक क्या, आकाशाभिषेक दीक्षा भी दे देंगे। मगर वहाँ सत्यता थी। गोविंदपादाचार्य ने कहा–शंकर मैं राज्याभिषेक दीक्षा इसलिए नहीं दे सकता हूँ क्योंकि मुझे खुद को ही नहीं आती। मैं अपनी तपस्या की धधकती आग तुम्हें सौंपूंगा तभी तो हो पाएगा। पूरी ज्वाला सौंपनी पड़ेगी तुम्हें। मैंने तुम्हें राजयोग दीक्षा दी है उससे भी तुम पूरे भारतवर्ष में विजित हो जाओगे।

आप इन दीक्षाओं से, प्रयोगों से वंचित न रह जाएं, गुरु से अवश्य प्राप्त करें।

और इतने सामान्य, सहज रूप में प्रयोगों को प्राप्त कर लेना आपका सौभाग्य है। आप तो केवल भारतवर्ष से परिचित हैं। मैं पूरी पृथ्वी से भी परिचित हूँ, पूरी दुनिया से भी परिचित हूँ, पर पूरी दुनिया से भी ऊपर एक ब्रह्माण्ड है उस ब्रह्माण्ड से भी परिचित हूँ और सारे ब्रह्माण्ड के ऋषि–मुनि, योगी यति कह रहे हैं कि आप जैसा अज्ञानी व्यक्ति पृथ्वी पर पैदा हुआ ही नहीं। अरे आप ये दीक्षाएँ ऐसे कैसे दे रहे हैं?

मैंने कहा–फिर कैसे देनी चाहिए? मैं दे रहा हूँ और सही तरीके से दे रहा हूँ। मैं शिविर लगाता हूँ। मंच लगाता हूँ, खाना खिलाता हूँ, हलवा खिलाता हूँ और दीक्षा देता हूँ।

वे कहते हैं आप जैसा व्यक्ति, सब गड़बड़ है! गड़बड़ हो रही है। हो रही है तो होने दीजिए, वे कुढते रहेंगे, क्योंकि गुफाओं में बैठे हैं, हम मुस्कुराते रहेंगे, क्योंकि हम दीक्षा देते रहेंगे, लेते रहेंगे, वे अपना काम कर रहे हैं, हम अपना काम कर रहे हैं।

और वास्तव में वे धन्य हैं जिन्होंने साधकत्व में अपना नाम लिखाया है क्योंकि मैं उनको बिल्कुल अमूल्य वस्तुएँ देता ही रहूँगा। ये साधनाएँ आपके जीवन की धरोहर होंगी, यह तुम्हें आज अहसास नहीं हो रहा है यह तो आने वाले समय में तुम समझ सकोगे, अहसास कर सकोगे। आने वाले वर्षों में तुम उच्चता एवं दिव्यता प्राप्त कर सको। ऐसा ही आपको आशीर्वाद देता हूँ।

पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली जी
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी)

'नारायण मंत्र साधना विज्ञान' पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में संग्रहित है।

- क्या ही अच्छा हो, यदि सामने वाला व्यक्ति वही करे जैसा आप चाहते हो।
- क्या ही अच्छा हो, कि आपका बॉस आपके ऊपर हावी न हो।
- क्या ही अच्छा हो, कि आपके स्वजन, मित्र, पड़ोसी, आपका कहना मानते हों।
- क्या ही अच्छा हो, कि घर में सभी आपका कहना मानते हों।
- क्या ही अच्छा हो, कि जिसे आप चाहें वह आपके वशीभूत हो जाए।

...यह सब इस माला द्वारा सम्भव है, जिसे प्राप्त करना ही सौभाग्य है।

सम्मोहन वशीकरण माला

विधान

किसी भी अमावस्या से इस माला से 'ॐ ह्रीं जगत् सम्मोहन करि सिद्धे वशंकरी ॐ फट् स्वाहा' मंत्र की 1 माला नित्य रात्रि में सोने से पूर्व जप करना है। ऐसा दो माह तक करें। इसके बाद जब किसी पर प्रयोग करना हो, तो यह माला पहन कर उसके समक्ष जाएं, और मन में मंत्र का जप करते रहें, उस पर माला द्वारा सम्मोहन प्रभाव अवश्य पड़ेगा।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को भी बनाकर प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 405/- + 45/- डाक खर्च = 450/- Annual Subscription 405/- + 45/- postage = 450/-

नारायण मंत्र साधना विज्ञान
गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)
फोन : 0291-2433623, 2432010, 7960039

तारा जयंती

21.04.2021

दस महाविद्याओं में एक यह विद्या साधक की आर्थिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है। यह प्रयोग विशेष रूप से आकस्मिक धन प्राप्ति एवं आर्थिक उन्नति के लिए किया जाता है। यह प्रयोग तारा जयंती के दिन से या किसी भी बुधवार से प्रारम्भ करना चाहिए। इसमें साधक को गुलाबी रंग की धोती ही पहननी चाहिए एवं दीपक के लिए रूई को भी पहले से ही गुलाबी रंग में रंग कर सुखा लेनी चाहिए।

साधना सामग्री

मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त तारा यंत्र, तारा चित्र, तारा माला, तेल का दीपक, अगरबत्ती। गुलाबी रंग का ऊनी आसन।

तारा महाविद्या प्रयोग

विधान

रात्रि के समय एक बाजोट पर गुलाबी वस्त्र बिछा कर तारा यंत्र एवं तारा चित्र स्थापित करें, तेल का दीपक जलायें, अगरबत्ती जलायें। पश्चिम की ओर मुंह कर बैठें। यंत्र एवं चित्र पर गुलाबी पुष्प अर्पित करें। फिर गुरु मंत्र की चार माला करके सद्गुरुदेव से सफलता हेतु प्रार्थना करें। इसमें नित्य तारा माला से 51 माला मंत्र जप तीन दिनों तक करना है। साधना काल में कुछ आवाजें आयें तो साधक को घबराना नहीं चाहिए। वैसे इस साधना को पूर्ण रूप से सम्पन्न करने के लिए सवा लाख मंत्र जप का विधान है।

मन्त्र

।। ऐं ओं ह्रीं क्लीं हुं फट्।।

साधना समाप्ति पर मां तारा की कृपा से आर्थिक उन्नति के मार्ग खुलते हैं।

वस्तुतः यह प्रयोग आर्थिक उन्नति और जीवन में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की पूर्णता के लिए श्रेष्ठतम प्रयोग है। सभी साधकों को यह प्रयोग अवश्य करना चाहिए।

साधना सामग्री- 450/-

क्या आप की कोई मनोकामना है जो पूर्ण नहीं हो पाई है तो यह साधना आपके लिए ही है सम्पन्न करें इस साधना को इस दिवस पर

अपूर्ण इच्छा पूर्ति प्रयोग

प्रत्येक वर्ष की चैत्र कृष्ण 5 को अपूर्ण इच्छा पूर्ण सिद्धि दिवस मनाया जाता है, जो कि सिद्धाश्रम पंचाग के अनुसार इस वर्ष 02.04.2021 को सम्पन्न हो रहा है।

यह अपने आप में अद्वितीय दिवस है, और प्रत्येक साधक के लिये यह सौभाग्यदायक पर्व है, क्योंकि निम्न प्रयोग से निश्चय ही साधक की किसी भी प्रकार की कोई भी इच्छा हो, वह पूरी होती ही है।

वैताल भट्ट ने कृपा कर इस प्रयोग को प्रकाशित करने की आज्ञा प्रदान की है, जो अत्यन्त गोपनीय और महत्वपूर्ण प्रयोग है।

ऐसा कौन व्यक्ति है जिसकी सारी इच्छाएँ पूर्ण होती हैं।

एक प्रकार से देखा जाय, तो किसी भी पुरुष या किसी भी स्त्री अथवा किसी भी साधक या साधिका की मनोकामना पूर्ति का प्रयोग है। वर्ष में अनेक बार कई ऐसे कार्य, ऐसी मनोकामनाएँ होती हैं जो कि चाहते हुये भी पूर्ण नहीं हो पाती। मार्ग में बाधाएँ आ ही जाती हैं।

साधक को कई बार साधना करने के उपरान्त भी सफलता नहीं मिलती।

इस पर विचार करते हुये सिद्धाश्रम के योगियों ने वर्ष में एक दिन निश्चित किया है जो कि **2.4.21 दिन शुक्रवार** को आ रहा है। यह बहुत ही लघु साधना है, आप साधना प्रारम्भ करने के पूर्व गुरुदेव का ध्यान करें एवं अपनी इच्छा व्यक्त करें फिर कम से कम 16 माला गुरुमंत्र की करें।

इस दुर्लभ प्रयोग को करने से साधक को निश्चय ही सफलता प्राप्त होती है, इसीलिये शास्त्रों में इसे 'अपूर्ण इच्छा पूर्ण सिद्धि प्रयोग' कहा गया है।

शायद ही कोई साधक वैताल भट्ट के नाम से अपरिचित होगा, और उनकी उच्चकोटि की साधनाओं और ज्ञान से अपरिचित होगा, ये वास्तव में ही इस युग के अद्वितीय आचार्य रहे हैं, और उच्च कोटि के तांत्रिक हैं, जिन्होंने साधनाओं के बल पर जीवन में पूर्णता प्राप्त की है, और सिद्धाश्रम में जिनका नाम अत्यन्त आदर से लिया जाता है।

साधना समय–

यों तो यह प्रयोग किसी भी शुक्रवार की रात्रि को सम्पन्न किया जा सकता है, परन्तु यदि इस महत्वपूर्ण दिवस के अवसर पर यह प्रयोग सम्पन्न किया जाय, तो निश्चय ही प्रयोग सम्पन्न होते-होते उसकी मनोकामना पूर्ण हो जाती है, जब-जब भी मैंने इस प्रयोग को आजमाया है, इसके आश्चर्यजनक परिणाम देखकर मैं चकित रह गया हूँ, मैंने यह अनुभव किया है कि साधक या साधिका किसी भी प्रकार की इच्छा मन में रखकर यदि यह प्रयोग सम्पन्न करते हैं तो प्रयोग सम्पन्न होते-होते उसकी मनोकामना पूर्ति अवश्य हो जाती है।

यदि साधक चाहे तो (1) पूर्ण आयु प्राप्ति, (2) धन प्राप्ति, (3) कर्जे से मुक्ति, (4) संतान प्राप्ति, (5) योग्य संतान सुख, (6) मकान, जमीन या वाहन प्राप्ति, (7) परीक्षा में सफलता, (8) इन्टरव्यू में उत्तीर्णता, (9) योग्य वर या पत्नी की प्राप्ति, (10) शत्रु नाश, (11) भाग्योदय, (12) व्यापार वृद्धि, (13) बीमारी से मुक्ति आदि किसी भी प्रकार की इच्छा यदि साधक के मन में हो तो वह यह प्रयोग कर सफलता प्राप्त कर सकता है।

साधना सामग्री–

यह साधना सरल है, और किसी भी शुक्रवार को या चैत्र कृष्ण पंचमी को, जो कि इस वर्ष 02.04.21 को सम्पन्न हो रही है, सम्पन्न की जा सकती है।

इस साधना में पांच नाभी चक्र की आवश्यकता होती है, जो कि मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हों, और वैताल भट्ट के अनुसार 'इच्छा पूर्ति प्रयोग मंत्र' से सिद्ध ये पांच नाभी चक्र आप कहीं से भी प्राप्त कर मंत्र सिद्ध करवा सकते हैं, अन्यथा पत्रिका कार्यालय में सम्पर्क स्थापित करने से ये नाभी चक्र प्राप्त हो सकते हैं।

साधना प्रयोग

साधक या साधिका स्नान कर अपनी इच्छा के अनुसार पूरे वस्त्र धारण कर कपड़ों पर सुगन्धित पदार्थ छिड़क कर आसन पर बैठे, और सामने एक पात्र में उपरोक्त प्रकार के पांच नाभी चक्र स्थापित कर दें , और इन पर केशर की बिन्दियाँ लगा दें और प्रत्येक के सामने गुड़ का भोग लगा कर दीपक लगा दें, पांच दीपक इस प्रकार लगाने चाहिये जिनका मुंह साधक या साधिका की ओर हो।

इसके बाद 'इच्छा पूर्ति माला' के द्वारा 16 माला मंत्र जप साधक खड़े-खड़े सम्पन्न करे। इस प्रयोग की यह विशेषता है कि ये मंत्र जप आसन पर बैठ कर नहीं करें, अपितु आसन पर खड़े होकर मंत्र जप सम्पन्न करें, इसमें केवल 16 माला मंत्र जप करने का विधान है।

मंत्र जप करने से पूर्व साधक हाथ में जल लेकर अपने मन की इच्छा बोले, और कहे कि मैं अमुक नाम का साधक जल्दी से जल्दी अपनी इस मनोकामना की पूर्ति चाहता हूँ–और ऐसा कहकर वह हाथ में लिया हुआ जल उन नाभी चक्रों के चारों ओर छिड़क दें और फिर खड़े होकर पूर्व दिशा की ओर मुंह कर मंत्र जप करें।

इसका मंत्र अत्यंत तेजस्वी, गोपनीय और दुर्लभ है। यह मंत्र छोटा होते हुए भी तीर की तरह काम करने वाला और शीघ्र सिद्धि दायक है।

मंत्र

।। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फट्।।

जब मंत्र जप पूरा हो जाय तब उस इच्छा पूर्ति माला और पांचों नाभी चक्रों को रात्रि में जहाँ तीन रास्ते मिलते हों, वहां पर रख दें अथवा नदी, तालाब या कुएं में विसर्जित कर दें, या किसी मंदिर में रख कर आ जाएं। इस प्रकार से करने पर यह प्रयोग पूर्ण होता है और प्रयोग का चमत्कार ही यह है कि दूसरे दिन ही अनुकूल आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त हो जाते हैं।

–साधना सामग्री 390/-

साधनात्मक शब्दार्थ

अक्सर यह देखा गया है, कि लोग आम बोल-चाल की भाषा में कुछ शब्दों का प्रयोग तो करते हैं, परन्तु उसका सही अर्थ उन्हें ज्ञात नहीं होता है। यही बात साधनात्मक क्रिया-विधियों से सम्बन्धित अनेकानेक शब्दों के साथ लागू होती है। यदि कोई जिज्ञासावश आपसे पूछ ले, कि 'अंगन्यास' क्या होता है, तो आपके पास स्पष्ट रूप में एक सरल परिभाषा होनी चाहिए, जिससे उस शब्द विशेष का अर्थ स्पष्ट हो सके। साधना क्षेत्र के परिप्रेक्ष्य में साधनात्मक शब्दार्थ एक प्रयास है, आशा है साधकों एवं पाठकों को इससे अवश्य लाभ होगा।

- **पाद्य–** पूजा या साधना में आहूत देवता अथवा अपने आराध्य देव को चरण धोने के लिए जो जल दिया जाता है, उसे पाद्य कहते हैं। हमारी शास्त्रीय परम्परा के अनुसार जिस प्रकार घर में आए हुए अतिथि को पैर धोने के लिए सम्मान के तौर पर जल देते हैं, उसी प्रकार देवताओं को भी **पाद प्रक्षालन** (पैर धोने) के लिए दो आचमनी जल पाद्य स्वरूप दिया जाता है।

- **अर्घ्य–** देवताओं को **हस्त प्रक्षालन** (हाथ धोने) हेतु जो जल दिया जाता है वह अर्घ्य कहलाता है। इसके लिए साधक दाहिने हाथ में जल लेकर उसमें कुंकुम व अक्षत मिलाकर देवता को समर्पित करे।

- **पुष्पांजलि–**आरती के बाद दोनों हाथों में खुले पुष्प लेकर देवताओं के सम्मान के लिए तथा उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए अंजुलि भरकर खुले पुष्प चढ़ाना **पुष्पांजलि** कहलाता है, जो पूजा पूर्णता की अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक है। ''जिस प्रकार ये खिले हुए पुष्प सुन्दर हैं और सभी को आनन्दित कर रहे हैं, आपकी पूजा से प्रसन्न मेरा हृदय पुष्प आपको समर्पित है, उसे आप स्वीकार करें''– पुष्पांजलि के पीछे साधक का अपने इष्ट के प्रति यह भाव होना चाहिए।

- **पुरश्चरण–**किसी भी मंत्र साधना में एक लाख पच्चीस हजार जप करना **पुरश्चरण** कहलाता है। उसके बाद जप मंत्र का दशांश हवन करना चाहिए, हवन का दशांश दर्पण तथा तर्पण का दशांश मार्जन करने की विशेष प्रथा है। यदि कोई हवन न कर सके तो साढ़े बारह हजार अतिरिक्त मंत्र जप करने से हवन करने की आवश्यकता नहीं होती।

- **संकल्प–**प्रतिज्ञा करना और उस प्रतिज्ञा के अनुसार आबद्ध होना संकल्प कहलाता है। किसी भी क्रिया के लिए एक बार आबद्ध होने के बाद उस क्रिया से हटना नहीं चाहिए अन्यथा साधनाओं में पूर्णता प्राप्त नहीं होती और दोष लगता है। संकल्प में जितने मंत्र जप के लिए प्रतिज्ञा की है, उतना करना पड़ता है, उसी तरह जप संबन्धी समय, देश, काल आदि भी संकल्प के अन्तर्गत आते हैं। इन सभी का पालन करना साधक के लिए साधना काल में अनिवार्य होता है।

- **आरती–**अपने इष्ट के प्रति अत्यधिक प्रेम, जहाँ इष्ट और अपने में भेद की प्रतीति न हो, उस प्रीति की अन्तिम परिणति को आरती कहते हैं। जब तक अपने और इष्ट में भेद की प्रतीति है, तब तक सत्य रूप में आरती सम्भव नहीं होती है। हालांकि दोनों में प्रभेद का होना सम्भव है, परन्तु अत्यन्त '**रति**' (अनुरक्ति) होने पर भेद होने से भी भेद की प्रतीति नहीं होती। उसी प्रेम के समर्पण भाव को व्यक्त करने के लिए '**आरती**' एक प्रतीक है, जो दीपक के तुल्य और तेजोमय है। इसी भाव को व्यक्त करने हेतु, इष्ट की स्तुति करते हुए दीपक से आरती की जाती है।

साबर साधनाओं का इतिहास उतना ही पुराना है जितना वेदोक्त साधनाओं का

चमत्कारिक साबर साधनाएं

जिन्हें भगवान शिव ने स्वयं अपने श्रीमुख से युगधर्म को देखते हुये सामान्य साधकों के लिए उच्चारित किया।

सामान्य सी शब्दावली से बने शब्दों का विन्यास, जिसमें ग्रामीण की 'तद्भव' संस्कृत की 'तत्सम', तो कभी अरबी-फारसी शब्दों के प्रयोग से बना छोटा-सा मंत्र, पर प्रभाव अचूक... चाहे वह धन-प्राप्ति के लिए लक्ष्मी की साधना हो, चाहे शत्रु वशीकरण के लिए किया गया प्रयोग.... सम्भव ही नहीं कि प्रयोग असफल हो...

इस देश में साबर साधनाएं कब प्रारंभ हुईं, ऐतिहासिक दृष्टिकोण से कुछ भी नहीं कहा जा सकता। पुराण और इतिहास का कुछ ऐसा सामञ्जस्य भारतवर्ष में दिखाई देता है, कि सब कुछ श्रद्धा और विश्वास का विषय बन जाता है। वैदिक मंत्रों में जो जटिलता होती है, विधि-निषेध होते है, जाति-वर्ण, शुद्धि आदि का विचार होता है, वह सब साबर साधनाओं एवं मंत्रों में नहीं होता और यदि हम साबर मंत्रों का विश्लेषण करें, तो भाषा से, वैज्ञानिक दृष्टि से वे मंत्र बड़े ही विचित्र प्रतीत होंगे, किन्तु साधकों का कहना है कि वे विचित्र मंत्र बड़े ही चमत्कारिक ढंग से सिद्धि प्रदान करते हैं। त्वरित गति से वे मंत्र भौतिक जगत में अपना ऐसा प्रभाव उत्पन्न करते हैं, कि वैज्ञानिक भी चकित रह जाते हैं।

यह देखकर अत्यन्त आश्चर्य होता है, कि साबर मंत्रों में जहां संस्कृत की 'तत्सम' शब्दावलियों का प्रयोग किया जाता है, वहीं ग्रामीण 'तद्भव' शब्दों का भी प्रयोग भी किया जाता है, और कुछ मंत्रों में अरबी-फारसी के शब्दों का भी प्रयोग होता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि भारतवर्ष में, मध्य युग में हठ योगियों और नाथ सम्प्रदाय का प्रभुत्व अधिक था, सिद्ध योगियों ने 'इस्लामिक तंत्र' को भारतीय साधना प्रणालियों में समन्वित कर लिया, जैसे हनुमान जी की, दुर्गा मैय्या की, भैरव देवता की चौकियाँ स्थापित की जाती हैं, चौका विधान किया जाता है, तब साबर साधना से चमत्कार पैदा कर दिया जाता है, वैसे भी अनेक इस्लामिक पीरों की चौकियाँ साबर साधनाओं में स्थापित की जाती हैं। ऐसा विश्वास किया जाता है, कि पीर की साबर साधना से वे साक्षात् प्रकट होते हैं और सभी मनोवांछाएं भी पूरी करते हैं।

भारतीय समाज के सांख्य पर यही प्रतीत होता है कि साबर मंत्रों के प्रणेता वे नाथ, सिद्ध थे, जो अपनी उत्पत्ति सीधे भगवान् अवधूतेश्वर से मानते हैं। 'मत्स्येन्द्रनाथ' और 'गोरखनाथ' इसी परम्परा के प्रवर्त्तकों में माने जाते हैं। महाराष्ट्र में नासिक रोड से थोड़ी दूर 'त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग' है, यहीं से थोड़ी दूर दो पहाड़ी शिखर हैं, गुफायें हैं, जहां विश्वास किया जाता है कि मत्स्येन्द्रनाथ और गोरखनाथ वहां आज भी तपस्यारत हैं। एक लोकगाथा में बतलाया गया है, कि वहां आज भी सिद्ध शिलाएँ हैं, जिन पर दोनों गुरु-शिष्य सिद्ध योगी साधना करते हैं, और शिला पर बैठे-बैठे ही आकाश गमन करते हैं।

ये अचूक साबर प्रयोग

आकस्मिक धन प्राप्ति के लिए

होली पर या किसी भी मंगलवार के दिन सूर्यास्त के बाद, पूर्व की ओर मुख करके लाल आसन पर बैठ जाएं, किसी थाली या प्लेट में केसर से त्रिकोण बनाकर, ऊपर के कोने में एक 'मोती शंख', बाईं ओर तांत्रोक्त नारियल तथा दाईं ओर 'लक्ष्मी गुटिका' रखें, तीनों को कुंकुम से अच्छी तरह रंग दें, उस त्रिकोण के मध्य एक घी का दीपक जलाकर रख दें, फिर निम्न मंत्र का 'सफेद हकीक माला' से 1 घंटा जप करें-

मंत्र : ॐ हिलि हिलि फट्

प्रयोग सम्पूर्ण होने के बाद उस सारी सामग्री को लाल वस्त्र में लपेट कर वहीं रहने दें, प्रातः उस पोटली को जल में प्रवाहित कर दें। कुछ ही दिनों में शीघ्र धन-लाभ के स्रोत बन जाते हैं, वहीं रुका धन भी बिना विवाद के मिल जाता है।

साधना सामग्री 510/-

शीघ्र विवाह

पूर्वजन्म या इस जन्म के किसी दोष के कारण शीघ्र विवाह नहीं हो पा रहा हो या लड़की की बार-बार मंगनी होकर शादी रुक रही हो अथवा किसी लड़की या लड़के के प्रेम-सम्बन्ध में बाधा के कारण विवाह नहीं हो पा रहा हो, तो होली के दिन या किसी रविवार के दिन प्रातः 6 से 8 बजे के बीच 'गौरी गुटिका', एवं 'संभल गुटिका' दोनों को सिन्दूर से रंगकर, छोटे-छोटे लाल कपड़ों में बांधकर एक पात्र में अलग-अलग रख दें, फिर दोनों को एक लाल धागे से बांध दें, और मन में यह चिन्तन करते हुए कि इनका विवाह सम्पन्न हो रहा है, फिर 'कामदेव माला' से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र-जप करें-

मंत्र : ।। ॐ ईं इचै इचै ईं हुं।।

बाद में किसी एकान्त स्थान में घर से दूर सभी सामग्री को जमीन में गाढ़ दें, परिणामस्वरूप शीघ्र विवाह की सम्भावना बनती है, यह प्रयोग अचूक और परीक्षित है।

साधना सामग्री 450/-

पुराणों में समस्त मंत्रों, तंत्रों एवं यंत्रों के अधिष्ठाता तथा जनक भगवान अवधूतेश्वर की ऐसी कल्पना की गई कि वे भवानी-शंकर का रूप होते हैं, अर्थात् आद्यशक्ति माता पार्वती, भगवान शंकर के साथ सदैव विद्यमान होती है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि भगवान भवानी-शंकर प्रतिदिन अपने लोक से नीचे उतरकर ब्रह्माण्ड में विचरण करते हैं। वे प्राणिमात्र के दुःख-दर्दों का निवारण भी करते हैं।

कहा जाता है—एक बार जब भगवान भवानी- शंकर ब्रह्माण्ड में विचरण कर रहे थे, तो वैदिक मंत्रों और तंत्रों की जटिलता को देखकर भगवान शंकर से माता पार्वती ने निवेदन किया कि विधि-निषेध की ऐसी स्थिति में तो मंत्र-तंत्र का कोई लाभ सामान्य जन उठा ही नहीं सकेंगे, इसलिए मंत्र-तंत्र का ऐसा भी स्वरूप हो, जिसमें जटिलता न हो और सभी साधना कर लाभान्वित हो सकें। माता पार्वती के इस निवेदन को स्वीकार कर ही भगवान शंकर ने साबर साधना और मंत्रों का सूत्रपात किया, जो योगी, नाथपंथी या साधक भगवान भवानी-शंकर का अंश होता है, वह अपनी तपस्या से 'परा-शक्ति' और ब्रह्म शक्ति का साक्षात्कार करता है, वह स्वयं मंत्रों का, तंत्रों का आविष्कार कर सकता है।

साबर साधनाओं में गुरु की बड़ी आवश्यकता होती है, बिना गुरु के निर्देशन के तो यह साधना करनी ही नहीं चाहिए। वस्तुसत्य तो यह है, कि साबर साधनाओं में अधिकांशतः परा-शक्ति साक्षात् विराजमान होती है। अतः विधिवत् गुरु दीक्षा लेकर ही साबर साधनाएँ करनी चाहिए। साधना प्रारम्भ करने से पूर्व गुरुपूजन एवं 5 माला गुरु मंत्र जप अनिवार्य है इसके बाद ही साबर मंत्र का जप प्रारम्भ करें। यह एक सामान्य सा नियम है कि बिना श्रद्धा या विश्वास के कोई भी साधना फलीभूत नहीं होती। यह शास्त्रोक्त है, कि मंत्र को यदि संदेह के साथ जपा जायेगा, तो उसकी क्रिया-शक्ति का भी अनुभव नहीं होगा। तंत्र में यह श्रद्धा, विश्वास और अधिक जरूरी इसलिए भी हो जाता है, क्योंकि इसमें गुरु-कृपा ही शक्ति बन कर क्रियाशील होती है।

साबर साधना करते हुए इसीलिए अधिकांश मंत्रों में 'फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा गुरु साचा' का प्रयोग होता है, जिसका भावार्थ यह होता है, कि जो मंत्र गुरु से प्राप्त कर पढ़ा जा रहा है, वह ईश्वर का वचन है, वह शब्द 'ब्रह्म' है, और जब विश्वास के साथ उसका प्रयोग होगा, तो निश्चित रूप से क्रियाशील होगा, यह सच्चे गुरु का प्रताप है।

साबर साधनाओं का कर्मकांडीय पक्ष भी होता है, इसका विधिवत् ज्ञान होना आवश्यक है। शुद्ध पूजन-सामग्री, पवित्र वस्त्र, स्नान, हवन आदि का भी इसमें विधान होता है, इष्ट देवता का स्मरण होता है, श्री गणेश जी का भी पूजन होता है, तब गुरु-कृपा से ही साबर साधनाएँ प्रारम्भ होती हैं। और गुरुकृपा से ही इनमें सिद्धि प्राप्त होती है। इसलिए गुरु पूजन एवं गुरु मंत्र जप इनमें अनिवार्य है।

भगवान शंकर ने साबर साधना और मंत्रों का सूत्रपात किया, जो योगी, नाथपंथी या साधक भगवान भवानी-शंकर का अंश होता है, वह अपनी तपस्या से 'परा-शक्ति' और ब्रह्म शक्ति का साक्षात्कार करता है, वह स्वयं मंत्रों का, तंत्रों का आविष्कार कर सकता है।

व्यापार वृद्धि

किसी कारण विशेष से या किसी व्यापार बन्ध अथवा तंत्र प्रयोग के कारण आप का कामकाज रुक गया हो अथवा कोई नया काम शुरू करके आप घाटे में जा रहे हैं या धन का आगम होते हुए भी घर में पैसे नहीं टिक पा रहे हों, तो होली के दिन या किसी मंगलवार को एक साबर मंत्र-सिद्ध 'सम्भुवाल गुटिका' तथा 'चार हकीक पत्थर' किसी लाल कपड़े में लपेट कर अपनी दुकान, ऑफिस या घर के दरवाजे पर जहां कोई अन्य देख सके, बांध दें, दो मंगलवार तक उसे वहीं रखकर 15 दिन के बाद, उसे शाम को सूर्यास्त के बाद कहीं दूर दक्षिण की ओर फेंक दें, तो व्यापार वृद्धि होती है, आमदनी बढ़ जाती है तथा कोई रुका हुआ कार्य, जो व्यापार बाधा से बन्द था, वह होने लग जाता है। यह प्रयोग व्यापारी बन्धुओं के लिए सौभाग्यदायक प्रयोग है, करना चाहिए।

साधना सामग्री 270/-

रोग निवारण

किसी भी भयानक रोग से, जो काफी पुराना है, आप जिससे बहुत ही दुःखी हैं, और कोई इलाज या उपाय नहीं सूझ रहा है अथवा उपचार करके परेशान हो गए हैं, तो साबर मंत्रसिद्ध एक क्षप्य गुटिका, पांच चिरमी के दाने, एक तांत्रोक्त फल इन तीनों को सिन्दूर से अच्छी तरह रंग कर काले कपड़े में बांध दें तथा होली की रात्रि को या किसी शनिवार की रात्रि को अपने रोग का नाम लिखकर उसी पोटली में बाँध दें, और होलिका दहन में उस पोटली को डाल दें या रात्रि 7 बजे के बाद उसे घर के बाहर पश्चिम या दक्षिण में फेंक दें। इस प्रयोग के बाद उस रोग में आश्चर्यजनक परिवर्तन होने लगेगा और रोग तथा अपने दर्द से वह व्यक्ति निजात पा जाएगा।

साधना सामग्री 270/-

क्या भगवती तारा एक बौद्ध देवी है?

तारा एक बौद्ध देवी है, ऐसा कुछ विद्वानों का मानना है। हिन्दुओं ने बौद्धों की देवी महाचीन तारा को तारा नाम से अपना लिया।

बौद्ध धर्म पर जब महायान सम्प्रदाय का प्रभाव बढ़ा, तो उन्होंने त्रिकाया धारणा को अपनाया तथा इसी तरह ध्यानी बुद्ध। प्रत्येक बुद्ध को एक बोधिसत्व व एक शक्ति रूपी देवी से जोड़ दिया गया। इस तरह अवलोकितेश्वर का सम्प्रदाय तारा से जुड़ा।

महाचीन तारा को ही उग्रतारा कहते हैं। उग्रतारा दस महाविद्या देवियों में से एक मानी गई हैं। दस महाविद्या की देवियां काली, तारा, छिन्नमस्ता, भुवनेश्वरी, बगला मुखी, धूमावती, कमला, मातंगी, षोडशी व भैरवी हैं। तारा अपने भक्तों को सभी तरह के खतरे व दुर्योगों से रक्षा करती हैं। वह सभी बुद्ध व बोधिसत्वों की मां मानी गईं। वह प्रजनपारमिता के नाम से भी जानी जाती हैं। महायान सम्प्रदाय के भारतवर्ष में लोकप्रिय हो जाने तथा उसके तिब्बत और चीन तक प्रसारित हो जाने तक तारा एक सर्वमान्य देवी हो चुकी थीं। इस देवी की प्रार्थना से दस महाभय दूर हो जाते हैं। उग्रतारा महायान सम्प्रदाय के बौद्धों की देवी हैं तथा शाक्त तारा निःसन्देह उनका रूपान्तर।

बौद्ध और ब्राह्मण दोनों ग्रंथों में देवी तारा को स्थान मिला है। बौद्ध ग्रंथ 'साधन माला' में उन्हें स्थान मिला ही है तथा 'तंत्रसार' में भी उनका वर्णन है।

बौद्ध और ब्राह्मण दोनों ग्रंथों में देवी तारा को स्थान मिला है। बौद्ध ग्रंथ 'साधन माला' में उन्हें स्थान मिला ही है तथा 'तंत्रसार' में भी उनका वर्णन है।

उनका रूप-रंग नील कमल के समान है-एक चेहरा, तीन आँखें भव्य होते हुए भी वे भयंकर रूप से हंसती हैं, वे सर्पों की माला से अलंकृत हैं तथा अत्यन्त प्रसन्न दिखाई देती हैं, उनकी गोल आँखें लाल हैं, फैली हुई जिह्वा तथा विषैले दांत, शव के ऊपर खड़ी वे पूर्ण यौवनवती दिखती हैं।

'साधन माला' में इस देवी का वर्णन इस प्रकार किया गया है-देवी का जटा मुकुट अग्निमय है तथा खैरी रंग का है। उसमें अक्षोभ्य की आकृति है। देवी प्रत्यालीढ़ ढंग से खड़ी हैं, उनके गले में लटक रही मुण्डों की माला भय उत्पन्न करती है, उनका उदर फैला हुआ है तथा अपने छोटे कद में वे भयंकर दिखती हैं; उनका रूप-रंग नीलकमल के समान है-एक चेहरा, तीन आँखें भव्य होते हुए भी वे भयंकर रूप से हंसती हैं, वे सर्पों की माला से अलंकृत हैं तथा अत्यन्त प्रसन्न दिखाई देती हैं, उनकी गोल आँखें लाल हैं, फैली हुई जिह्वा तथा विषैले दांत; शव के ऊपर खड़ी वे पूर्ण यौवनवती दिखती हैं; कमर तक वे सिंहचर्म से ढकी हुई हैं, वे पांच मंगलकारी चिह्नों से युक्त हैं, उनके दो दायें हाथों में तलवार और कारटी है तथा दो बायें हाथों में उत्पला और कपाल।

तारा को बौद्ध देवी होने के समर्थन में निम्नलिखित तर्क दिये जाते हैं-

1. हिंदू तंत्र शास्त्र में तारा मूर्ति की आध्यात्मिक व्याख्या का अभाव।
2. हिंदुओं की देवी तारा की ध्यानमग्न पंचमुद्रा की मूल व्याख्या तथा बौद्धों की समीचीन व्याख्या।
3. हिंदू तंत्र में एकजटा नाम का कोई अर्थ नहीं।
4. अक्षोभ्य शब्द की गलत व्याख्या। तारा के मस्तक पर अक्षोभ्य अवस्थित होने के कारण - निर्णय में हिंदुओं की असमर्थता तथा बौद्धों का सही कारण - निर्णय।
5. बौद्ध देवी एकजटा की अवतार मूर्ति महाचीन तारा के साथ हिंदू तारा की समानता।
6. बौद्ध तारा के पूर्व हिंदू तारा के अस्तित्व का प्रमाणाभाव।
7. बुद्धदेव से वशिष्ठ को तारा मंत्र की प्राप्ति।
8. बौद्ध सिद्ध नागार्जुन द्वारा देवी तारा की पूजा का प्रसार।

हिंदू आचार्यों की तरफ से इनके उत्तर इस प्रकार दिय गये-

1. तांत्रिक सम्प्रदाय के गुरु उपयुक्त शिष्य के अतिरिक्त किसी दूसरे को कोई रहस्य नहीं बतलाते थे। अयोग्य को विद्यादान तथा विद्या का रहस्य बतलाने का शास्त्रीय निषेध है-यह आज भी देखा जाता है। सम्प्रदाय परम्परा में जो रहस्य विद्या के नाम से जाना जाता है, उसे उन्होंने ग्रंथों में भी स्थान नहीं दिया। इसलिए उन्होंने एकजटा नाम का रहस्य तथा तारा के मस्तक में अवस्थित अक्षोभ्य की कारण व्याख्या भी नहीं की। 'तोड़ल तंत्र' में अक्षोभ्य का जो अर्थ देखा जाता है, वह रहस्य विद्या नहीं है। अतः रहस्य-प्रकाश नहीं करना अज्ञता नहीं है। फिर तोड़ल तंत्र के अक्षोभ्य तथा तारा के मस्तक स्थित अक्षोभ्य एक नहीं हैं।
2. बौद्ध शास्त्रों में शब्दों का अर्थ जिस-जिस रूप में व्यवहृत होता है, उसी अर्थ में क्या सभी जगहों पर व्यवहृत होता है। मुद्रा शब्द का कपाल अर्थ अन्यत्र प्रसिद्ध नहीं होने पर तंत्र में क्या यह प्रयुक्त नहीं हो सकता है ? ध्यानोक्त शब्द की प्रधानता नहीं है, अर्थ ही प्रधान है। कपाल पंचक भूषित तारा ही जब हिंदुओं की उपास्य हैं, तब मुद्रा शब्द का कपाल अर्थ में प्रसिद्ध नहीं होने के कारण इसे इसी अर्थ में ग्रहण करना होगा। वास्तव में चिह्नार्थक और

कहा जाता है, कि सिद्ध नागार्जुन ने भोट देश से तारा साधना पद्धति का उद्धार किया था, किन्तु इस अनार्य भोट देश में तारा का प्रवर्तक कौन था ?

मां तारा कमर तक सिंहचर्म से ढकी हुई हैं, वे पांच मंगलकारी चिह्नों से युक्त हैं, उनके दो दायें हाथों में तलवार और कारटी है तथा दो बायें हाथों में उत्पला और कपाल।

अलंकारार्थक मुद्रा शब्द का इस तरह का अर्थ असमीचीन नहीं कहा जा सकता, क्योंकि काली, तारा आदि देवियों की मुण्डमाला, पंचमुद्रा ही अलंकार है।

बौद्धों ने मुद्रा शब्द की जो व्याख्या की है, वह तारा के ध्यान व मूर्ति में नहीं देखी जाती है। बौद्ध तारा तथा हिंदू तारा के ध्यान व मूर्ति यदि एक हैं, तो अहिंसा के पूजारी बौद्धों द्वारा नरास्थि द्वारा मुद्रा का निर्माण दूसरों का अनुकरण ही है। देव-देवियों की मूर्तियों में नरास्थि का व्यवहार वेद और आगम में भी देखा जाता है। बुद्ध ने स्वयं किसी ग्रंथ की रचना नहीं की तथा बौद्ध शास्त्र में इसका कहीं उल्लेख भी नहीं है। बुद्ध के शरीर के त्याग करने के बहुकाल पश्चात् बौद्ध धर्म का अध:पतन होने पर बौद्धों ने जिन तंत्रों की रचना की, वे हिंदू तंत्र की ही नकल थीं। कोई किसी विषय पर सुन्दर व्याख्या कर उसे अपना निजी नहीं कह सकता।

3. एकजटा शब्द का सहज अर्थ सभी को ज्ञात है, किन्तु इसका आध्यात्मिक अर्थ अप्रकाश्य है, अत: व्याख्या निष्प्रयोजन है।
4. अक्षोभ्य शिव तारा के सिर्फ मस्तक में ही नहीं रहते हैं, उनके पांव के नीचे भी रहते हैं। बौद्ध मूर्ति शास्त्र के अनुसार तारा के मस्तक में ध्यानी बुद्ध अक्षोभ्य स्थित हैं। हिंदुओं ने तारा के मस्तक में अक्षोभ्य को रखा तथा उन्हें अन्य किसी मूर्ति में नहीं रखा, इसका कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिलता है। अधिदेव द्वारा अध्यात्म का तात्पर्य बतलाने से अधिदेव अर्थात् देवोपासना में लोगों की अश्रद्धा होती, अत: इसका रहस्य नहीं बतलाया गया।

इसके अलावा सिर्फ योग्य शिष्य ही गुरु से रहस्य जान सकता है, सर्व साधारण नहीं।

5. **बौद्ध देवी 'एकजटा' के साथ हिंदू देवी तारा के साम्य रहने तथा बौद्ध देवी 'एकजटा' के पहले हिंदू तारा का अस्तित्व प्रमाणित नहीं होने पर भी तारा को बौद्ध देवी नहीं कहा जा सकता।**
6. सातवीं शताब्दी के मध्य में सिद्ध नागार्जुन एकजटा पूजा के प्रवर्तक थे, अत: तारा इसके पूर्व की नहीं हो सकतीं, किन्तु सिद्ध नागार्जुन ने ही 'भैरव तंत्र' को पुरातन कहा है। वास्तव में यह अति प्राचीन भी है तथा निश्चय ही सातवीं शताब्दी के बहुत पहले की रचना है। यदि तारा मूर्ति की पूजा-पद्धति भैरव तंत्र के अनुसार रची गई, तो तारा पूजा के प्राचीन होने का ही समर्थन होता है।
7. **बौद्ध ग्रंथ 'लंकावतार सूत्र' में दशानन रावण को तंत्र उपदेश दान के लिए बुद्ध का लंका गमन दर्शाया गया है। यह प्रक्षिप्तता का लक्षण है।**

रामायण आदि में वशिष्ठ का जो परिचय मिलता है, इससे वशिष्ठ का बुद्ध से मंत्र ग्रहण करना विश्वसनीय नहीं हो सकता।

8. कहा जाता है, कि सिद्ध नागार्जुन ने भोट देश से तारा साधना पद्धति का उद्धार किया था, किन्तु इस अनार्य भोट देश में तारा पूजा का प्रवर्तक कौन था ? यह भी हो सकता है, कि हिंदू तारा को ही किसी ने भोट देश में पूजा के लिए अपनाया हो।

इस तरह हिंदू आचार्य तारा को बौद्ध देवी मानने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं है। तारा वैसे ही उनकी एक भगवती देवी हैं, जैसे मां काली।

स्पष्ट है कि तारा सभी शास्त्रों एवं धर्मों की आराध्या देवी हैं।
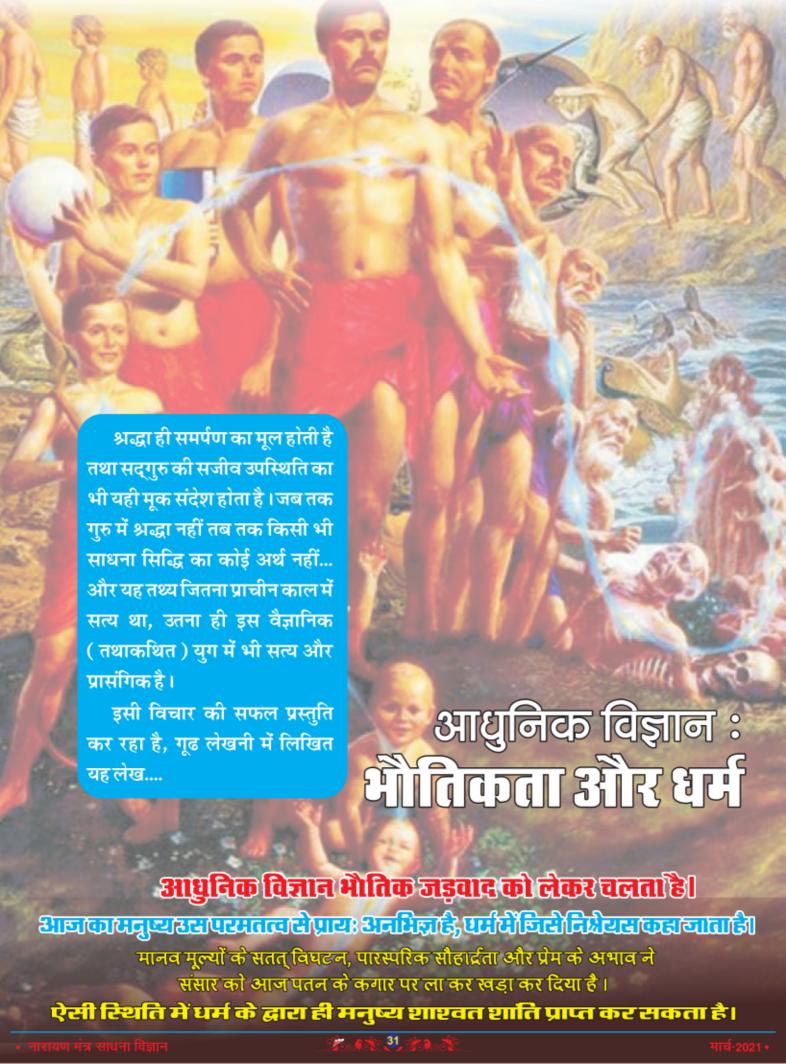
श्रद्धा ही समर्पण का मूल होती है तथा सद्‌गुरु की सजीव उपस्थिति का भी यही मूक संदेश होता है। जब तक गुरु में श्रद्धा नहीं तब तक किसी भी साधना सिद्धि का कोई अर्थ नहीं... और यह तथ्य जितना प्राचीन काल में सत्य था, उतना ही इस वैज्ञानिक (तथाकथित) युग में भी सत्य और प्रासंगिक है।

इसी विचार की सफल प्रस्तुति कर रहा है, गूढ लेखनी में लिखित यह लेख....

आधुनिक विज्ञान : भौतिकता और धर्म

आधुनिक विज्ञान भौतिक जड़वाद को लेकर चलता है।

आज का मनुष्य उस परमतत्व से प्रायः अनभिज्ञ है, धर्म में जिसे निश्रेयस कहा जाता है।

मानव मूल्यों के सतत् विघटन, पारस्परिक सौहार्द्रता और प्रेम के अभाव ने संसार को आज पतन के कगार पर ला कर खड़ा कर दिया है।

ऐसी स्थिति में धर्म के द्वारा ही मनुष्य शाश्वत शांति प्राप्त कर सकता है।

तर्क-बुद्धि मुनष्य के आध्यात्मिक रूपान्तरण में सहायक नहीं है। उसका मुख्य कार्य जीवन और शरीर के बीच मध्यस्थता करना है। वह मनुष्य की शारीरिक और जैविक प्रवृत्तियों को ही नियंत्रित करती है।

यह समझ लेना आवश्यक है, कि मनुष्य केवल स्थूल देह-पिंड नहीं है, उसके भीतर चेतना का वह ऊर्जात्मक स्रोत भी है, जिसके कारण वह दिव्यता के स्तर तक ऊपर उठने में समर्थ होता है, किंतु आधुनिक भौतिक सभ्यता की जटिलताओं ने मानव-चेतना के ऊर्ध्वमुखी द्वारों को अवरुद्ध कर दिया है। जैसे दर्पण पर धूल की परत जम जाती है और उसकी स्वच्छता धूमिल पड़ जाती है, ठीक उसी प्रकार आधुनिक युग की जड़ भौतिक विकास ने आत्मा के प्रकाश को मलिन कर दिया है। मनुष्य की चेतना जैसे यांत्रिक शक्तियों से आबद्ध होकर जड़ित हो गई है और यही कारण है, कि मानव मूल्यों के लिए गहरा संकट उपस्थित हो गया है। मानव-व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए भौतिक विज्ञान के पास आज कोई आध्यात्मिक मूल्य नहीं है, जिसके कारण मानव-विकास के समाप्त हो जाने का अंदेशा उत्पन्न हो गया है।
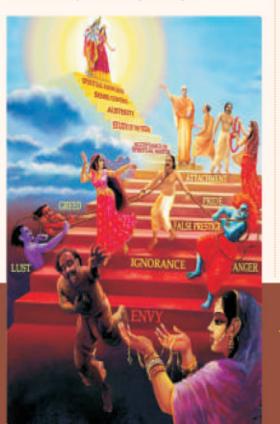
तर्क-बुद्धि मुनष्य के आध्यात्मिक रूपान्तरण में सहायक नहीं है। उसका मुख्य कार्य जीवन और शरीर के बीच मध्यस्थता करना है। वह मनुष्य की शारीरिक और जैविक प्रवृत्तियों को ही नियंत्रित करती है। मनुष्य दिव्यता के स्तर तक ऊपर उठना चाहता है, किन्तु तर्क-बुद्धि उसका मार्ग रोक देती है।
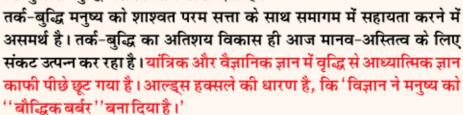
तर्क-बुद्धि मनुष्य को शाश्वत परम सत्ता के साथ समागम में सहायता करने में असमर्थ है। तर्क-बुद्धि का अतिशय विकास ही आज मानव-अस्तित्व के लिए संकट उत्पन्न कर रहा है। यांत्रिक और वैज्ञानिक ज्ञान में वृद्धि से आध्यात्मिक ज्ञान काफी पीछे छूट गया है। आल्ड्स हक्सले की धारणा है, कि 'विज्ञान ने मनुष्य को ''बौद्धिक बर्बर'' बना दिया है।'

भौतिकवादी विचारधारा ने श्रद्धा, विश्वास, प्रेम जैसे उदात्त तत्वों का हनन कर मानव-समाज में पारस्परिक घृणा की भावना का ही विस्तार किया है। मनुष्य लोभ, असुरक्षा और चिन्ताओं से आवृत्त हो गया है। प्रेम और त्याग की अनुपस्थिति में भय, आतंक और शोषण ही सर्वत्र व्याप्त हो गया है। यह समस्त विकार एकमात्र विज्ञान की ही देन है-ऐसा नहीं कहा जा सकता। विज्ञान तो साधन मात्र है, वास्तविक संकट तो स्वयं मानव अपने मूल्यों के पतन, स्वार्थ, अहंकार पर वैचारिक संकीर्णता में है। विज्ञान पर आधारित आधुनिक संस्कृति में प्रेम, सहानुभूति और भातृत्व के भाव नष्ट होते जा रहे हैं। मानव सबंधों में व्यावसायिकता और निर्वैयक्तिता आती जा रही है, इससे समाज की भावना भी नष्ट होती जा रही है।

आधुनिक वैज्ञानिक युग में धर्म से ही एकता और शांति की स्थापना हो सकती है। भौतिकवादी विकास के संदर्भ में 'गीता' उन समस्त विचारों का खंडन करती है, जिनमें मनुष्य की दिव्यता के प्रति संदेह व्यक्त किया जाता है। 'गीता' यह मानती है, कि प्रत्येक जीव परमात्मा का शाश्वत् और सनातन अंश है। व्यक्ति भी भगवान की एक गति है, एक महान जीवन का केन्द्र है। जीवों में विद्यमान परमात्मा की मूर्ति स्वर्ग और पृथ्वी के मध्य बना एक सेतु है। विश्व में प्रत्येक व्यक्ति का शाश्वत महत्व है। मनुष्य जब अपने सीमित अस्तित्व से ऊपर उठता है, तब भगवान में निवास करता है। 'गीता' कहती है, कि जिस परमात्मा से सर्वभूतों की उत्पत्ति हुई है और जिससे यह सम्पूर्ण जगत् व्याप्त है, उस परमात्मा की मानव अपने स्वाभाविक कर्मों द्वारा उपासना कर परम सिद्धि प्राप्त कर सकता है।

भौतिकवादी विचारधारा ने श्रद्धा, विश्वास, प्रेम जैसे उदात्त तत्वों का हनन कर मानव-समाज में पारस्परिक घृणा की भावना का ही विस्तार किया है। मनुष्य लोभ, असुरक्षा और चिन्ताओं से आवृत्त हो गया है। प्रेम और त्याग की अनुपस्थिति में भय, आतंक और शोषण ही सर्वत्र व्याप्त हो गया है।

तर्क-बुद्धि मनुष्य को शाश्वत् परम सत्ता के साथ समागम में सहायता करने में असमर्थ है।

तर्क-बुद्धि का अतिशय विकास ही आज मानव अस्तित्व के लिए संकट उत्पन्न कर रहा है।

यांत्रिक और वैज्ञानिक ज्ञान में वृद्धि से आध्यात्मिक ज्ञान काफी पीछे छूट गया है। आल्ड्स हक्सले की धारणा है, कि विज्ञान ने मनुष्य को 'बौद्धिक बर्बर' बना दिया है।

'गीता' में मनुष्य की महानता और दिव्यता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है, कि स्वयं भगवान मानव शरीर धारण कर मानवों के बीच मित्र और सखा बनकर विचरण करते हैं और लीला करते हैं। मानव रूपधारी ईश्वर को जो कुछ पत्र, पुष्प, फल, जल आदि प्रेमपूर्वक अर्पण करता है, उसे भगवान स्वयं प्रकट होकर रुचिपूर्वक ग्रहण करते हैं।

'गीता' में धर्म का प्रायः यहीस्वरूप है, जिसमें मनुष्य अपने क्रियाचरण से ईश्वर से तादात्म्य स्थापित करता है और धर्म का यही भागवतोक्त तत्व है, जिसका समर्थन प्रायः समस्त वैष्णव सम्प्रदायों ने किया है। इस तरह परमेश्वर की उपासना द्वारा उसकी अपरोक्षानुभूति का उदय होता है, जिससे समस्त दुःखों का नाश हो जाता है। ऐसी उपासना ही मनुष्य को परमेश्वर के निकट ले जाती है।

'अष्टांग-योग' की प्रक्रियाएं भी एक व्यक्ति को परमेश्वर का साक्षात्कार कराती हैं तथा 'कर्म' का अनुपालन भी एक व्यक्ति को ईश्वर-सान्निध्य में सहायक होता है, अपने कर्तव्यों के पालन द्वारा एक व्यक्ति परमेश्वर के आदेशों का अनुसरण करता है। नित्य कर्तव्यों के उदाहरण में कर्त्ता को कोई भौतिक लाभ नहीं होता, क्योंकि उन कर्मों के फल स्वभावतः परमेश्वर को समर्पित कर दिये जाते हैं। यह समर्पण ही भागवत धर्म का सार है। समर्पण केवल धर्मों, धनादि तक ही सीमित नहीं है, इस समर्पण में तो साधक अपनी आत्मा तक को परमेश्वर श्रीकृष्ण को समर्पित कर देता है, जैसा कि गोपियों के उदाहरण में देखा जाता है। धर्म के सारे प्रत्यय और नैतिकता की सारी सीमाएं इस समर्पण में समाप्त हो जाती है।

भागवत-धर्म की सार्वभौमिकता तथा सार्वजनिकता का प्रमाण यही माना जाता है, कि यह सतत् गत्यात्मक युग-धर्म है। युगानुरूप इसमें साधना-विधियों का निरूपण किया गया है। 'भागवत' के अनेक प्रसंगों में कलियुग की निंदा की गई हैं

सत्य-युग में सत्व प्रधान होने से ध्यान मात्र से ईश्वर साक्षात्कार होता था, त्रेता में सत्व और रज की प्रधानता से बड़े-बड़े यज्ञों के द्वारा ईश्वर की आराधना की जाती थी, द्वापर में तमस् के भी सामंजस्य के कारण पूजा-सेवा से ईश्वर-प्राप्ति का निर्देश 'भागवत्' में दिया गया है। कलियुग केवल रज और तम का सामंजस्य है तथा सत्व अत्यंत क्षीण है। अतः श्रीकृष्ण यह निर्दिष्ट करते हैं, कि जब तक सर्व-कर्म समर्पण नहीं होता तब तक ईश्वर-साक्षात्कार संभव नहीं।

यज्ञ, तप, जप आदि भी तभी फलीभूत होते हैं जब उनमें गुरुदेव के प्रति समर्पण का समावेश होता है।

शिष्य धर्म
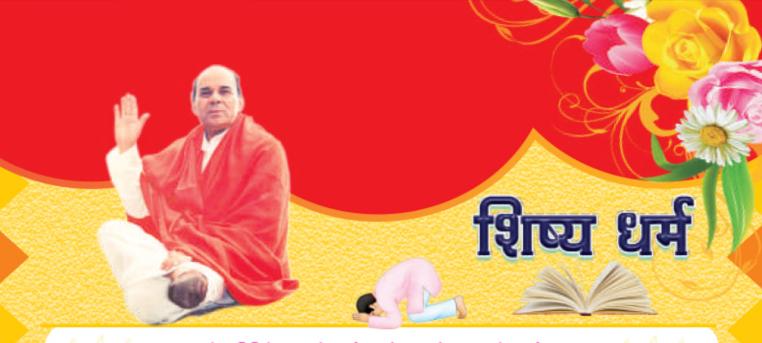
त्वं विचितं भवतां वदैव देवाभवावोतु भवतं सदैव।
ज्ञानार्थ मूल मपरं महितां विहंसि शिष्यत्व एवं भवतां भगवद् नमामि।।

शिष्य क्या है? क्या केवल मुंह से जय गुरुदेव कहने से या फूल माला चढ़ाने से या चरण स्पर्श करने से व्यक्ति शिष्य हो जाता है? सद्गुरुदेव परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी के अनुसार ये तो मात्र गुरु भक्ति की अभिव्यक्ति के साधन मात्र हैं। शिष्य तो व्यक्ति तब होता है, जब उसमें कुछ विशेष गुण उत्पन्न होते हैं। क्या हैं वे गुण? आइए जानें।

- शिष्य वह है जो निरंतर गुरु चिंतन में लीन रहकर अपने कार्य-कलाप करता रहता है। वह इसकी फिक्र नहीं करता कि वह सफल होगा कि असफल, वह तो मात्र कार्य करता है, वह भी पूर्णता के साथ।
- शिष्य वह है जो अगर गुरु को पीड़ा हो तो एक पल सो नहीं पाएं, शिष्य वह है जो एक पल गुरु से दूर नहीं रह पाए, शिष्य वह है जो गुरु की ढाल बन जाता है और सारी परेशानियां और मुसीबतें अपने ऊपर झेलने को तत्पर रहता है।
- शिष्य का एक ही लक्ष्य होता है कि वह किस प्रकार से गुरु को ज्यादा से ज्यादा भार मुक्त करे और वह यह तय कर पाता है जब गुरु के कार्यों को बढ़ाने में उनका सहायक होता है।
- एको ही नामं, एको हि पूजा, एको ही ध्यानम्, एको ही ज्ञानम्,
  आज्ञाम् सदैवं परिपालयन्ति गुरुत्वं शरण्यं गुरुत्वं शरण्यं

  जिसने सब कुछ गुरु को ही मान लिया है जिसकी पूजा, ध्यान, जप, तप सब गुरु ही बन गए हैं, जो सदैव गुरु आज्ञा का पालन करने को तत्पर रहता है उन्हीं की शरण को सर्वश्रेष्ठ मानता हैं, ऐसा शिष्य इस लोक को तो जीतता ही है, अपितु परलोक को भी जीतकर देवताओं द्वारा पूजित होता है . . .
- जो नित्य गुरु मंत्र का जाप करता है, हर गुरुवार को गुरु मंत्रों से आहुति देता है, ऐसे शिष्य के लिए संसार में कुछ भी कठिन नहीं रह जाता।
- तर्क जहाँ सारे जीवन को नष्ट कर देता है, वही श्रद्धा संपूर्ण जीवन का श्रृंगार है। श्रद्धा ही शिष्यत्व का आधार है, प्रेम अंकुर है और सिद्धि फल है . . .
- शिष्यत्व बुद्धि पर आधारित नहीं है, वह तो एक हृदय से प्रेम का प्रस्फुटन है। उस गुरु के लिए जोकि उस शिष्य को नर से नारायण कर देता है।
- वास्तव में ही शिष्य सौभाग्यशाली हैं जिन्होंने अपना सर्वस्व गुरु चरणों में अर्पित कर दिया है ... एवं जिन्होंने अपनी सेवा के माध्यम से गुरु के ओठों पर अपना नाम अंकित कर दिया है . . .
- गुरु एक विशाल सागर के समान है जिसमें उतर कर शिष्य अनमोल आध्यात्मिक मोती प्राप्त कर सकता है। यह शिष्य का धर्म है कि वह गुरु के अंदर पूर्ण रूप से समाहित हो जाए जिससे उसके मन, बुद्धि एवं आत्मा का रूपातंरण हो सके।

- गुरु ही समझा सकता है कि वास्तविक आनंद क्या है और तुम तब समझ सकते हो जब तुम अपने आप को पूरी तरह से गुरु में स्थापित कर दो और गुरु को पूर्ण रूप से अपने आप में समाहित कर दो।
- जिस क्षण गुरु पूर्णता से आप में समाहित हो गए उस क्षण आपको पूर्ण ज्ञान स्वयं ही प्राप्त हो जाएगा। उसके लिए फिर पोथियां पढ़ने की आवश्यकता नहीं रह जाएगी।
- गुरु को केवल हृदय में स्थापित किया जा सकता है या आज्ञा चक्र पर स्थापित किया जा सकता है। परंतु इससे पहले आवश्यक है कि तुम स्वार्थ, छल, झूठ, कपट से मुक्त हो जाओ। ये जब तक तुम्हारे अंदर हैं गुरु स्थापित नहीं हो सकता।
- गुरु से कुछ प्राप्त करने की क्रिया केवल प्रेम और समर्पण के माध्यम से हो सकती है। उसके लिए कोई भौतिकता का रास्ता नहीं है। गुरु को न तुम्हारा धन चाहिए न तुम्हारा ऐश्वर्य। उसे तो केवल पूर्ण समर्पण चाहिए।
- जीवन में यह महत्त्वपूर्ण नहीं है कि आपने कितना धन कमाया था कितना झूठ बोला या कितनी चोरी की। महत्त्वपूर्ण है कि आप गुरु के बताए रास्ते पर कितना चले, कितना गुरु का कार्य किया, तुमने अंधेरे में कितने दीपक जलाएं।
- कोई नहीं कह सकता कि किस शिष्य में, किस साधक में चेतना की कौन सी भावभूमि छिपी है। केवल सद्गुरु ही शिष्य या साधक की क्षमता को जानकर उसे सही मार्ग पर अग्रसर करता हुआ उसे पूर्णता तक पहुंचा सकता है।
- गुरु तुम्हें मोह की निद्रा से बाहर निकालने के लिए झटका दे सकता है, वह प्रहार कर सकता है। जो ठोकरों को झेल लेता है, गुरु के प्रहारों को सहन कर लेता है वह निश्चय ही पूर्णता तक पहुंच सकता है।
- तुम स्वयं नींद से नहीं उठ सकते। सभी महान पुरुष चाहे वह तुलसी हों, सूर हों, बुद्ध हों या महावीर हों सभी ने कठिनाइयां झेली, ठोकर खाई. . .पर ठोकर खाने के बाद वे और मजबूत होकर उठे। वे सामान्य मनुष्य ही थे पर आध्यात्म की उतनी ऊंचाइयों तक पहुंचे! तुम भी पहुंच सकते हो अगर तुममें जूझने की शक्ति हैं तो।
- अगर तुम गुरु की परीक्षाओं से घबराते हो तो तुमसे दुर्भाग्यशाली कोई नहीं। वास्तव में तो गुरु वह है जो शिष्यों को ठोकर मारकर नींद से जगाए, समाज की रुढ़ियों पर बिजली बनकर के टूटे, जो शिष्य को बताए कि जो जीवन वह जी रहा है वह आत्म साक्षात्कार का सही पथ नहीं है।
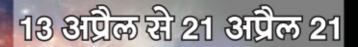
नवरात्रि
दुर्गा पूजन

भारतीय ऋषि परम्परा में प्राचीन काल से शक्ति पूजन का प्राबल्य रहा है। इसी शक्ति पूजन के माध्यम से हमारे वे ऋषि समुदाय समस्त विश्व के लिए हितकर और तेजस सम्पन्न बन पाये। जिनकी साधना और चेतना सदैव से संसार के सामने अनुकरणीय और श्रेयस्पद है, वही पूजन पद्धति इस नवरात्रि के शुभ अवसर पर साधकों के लिए प्रस्तुत है

आचमन–

दाहिने हाथ में जल लेकर स्वयं आचमन करें–

ॐ ऐं आत्मतत्वं शोधयामि नमः।।
ॐ ह्रीं विद्यातत्वं शोधयामि नमः।।
ॐ क्लीं सर्वतत्वं शोधयामि नमः।।

इसके बाद हाथ धो लें।

आसन शुद्धि–

आसन पर जल छिड़कें–

ॐ पृथ्वि! त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनं।।

संकल्प–

दाहिने हाथ में जल लें–

ॐ विष्णु र्विष्णु र्विष्णुःश्रीमद्भगवतो विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अस्य ब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे श्वेत वाराह कल्पे जम्बूद्वीपे भारतखंडे आर्यावर्तैक देशे पुण्य क्षेत्रे कलियुगे, कलि प्रथम चरणे अमुक गोत्रोत्पन्नोऽहं (अपना गोत्र बोलें) अमुक शर्माऽहं (अपना नाम बोलें) सकल दुःख दारिद्रय निवृति पूर्वकं मम मनोकामना पूर्ति निमित्तं भगवती दुर्गा सिद्धि प्राप्ति निमित्तं च पूजनं करिष्ये।।

जल छोड़ दें।

गणपति पूजन–

ॐ गं गणपतिम् आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि नमः। पुष्पासनं समर्पयामि। स्नानं समर्पयामि। तिलकं अक्षतान् च समर्पयामि। धूपं दीपं नैवेद्यं निवेदयामि नमः।।

गुरु पूजन–

इसके बाद पंचोपचार से या षोडशोपचार से गुरुदेव का पूजन करें और प्रार्थना करें–

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै री गुरवे नमः।।

कलश स्थापन–

अपनी बायीं ओर जमीन पर कुंकुम से स्वस्तिक बनाकर उस पर कलश स्थापन करें। उसमें जल भर दें। इसके बाद कलश के चारों ओर कुंकुम से चार तिलक लगा दें। उसमें सुपारी, अक्षत, दूब और पुष्प तथा गंगाजल डालें। ऊपर नारियल रख दें और निम्न मंत्र का उच्चारण करें–

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यां बहो रात्रे।
पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यातम्।
इष्णान्निषाण मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मइषाण।।

इसके बाद कुंकुम से रंगे हुए चावल को दाहिने हाथ से निम्न मंत्र को पढ़ते हुए कलश पर चढ़ावें।

ॐ महाकाल्यै नमः। ॐ महालक्ष्म्यै नमः।
ॐ महासरस्वत्यै नमः। ॐ नन्दजायायै नमः।
ॐ धूमायै नमः। ॐ शाकम्भर्यै नमः।
ॐ भ्रामर्यै नमः। ॐ दुर्गायै नमः।।

इसके बाद भगवती के चित्र के सामने कुंकुम से रंगे हुए लाल चावल की ढेरी बना कर उस पर **नवदुर्गा यंत्र** की स्थापना करें। यंत्र की दाहिने ओर **श्री साफल्य गुटिका** को स्थापित करें। फिर पूजन करें–

स्नानं समर्पयामि, ॐ जगदम्बायै नमः।

पानी का छींटा देकर वस्त्र से यंत्र को पोंछ लें।

तिलकं समर्पयामि, ॐ जगदम्बायै नमः।।

यंत्र पर कुंकुम का तिलक करें।

धूपं आध्रापयामि, दीपं दर्शयामि,
ॐ जगदम्बायै नमः।।

धूप और दीप जलावें।

पुष्पं समर्पयामि, ॐ जगदम्बायै नमः।।

पुष्प चढ़ावें।

नवदुर्गा माला पर भी कुंकुम और पुष्प चढ़ायें।

ध्यान–

दोनों हाथ जोड़ें–

श्री जगदम्बायै ध्यानं समर्पयामि नमः।।

आवाहन–

भगवती का आवाहन करें–

ॐ जगदम्बायै आवाहनं समर्पयामि नमः।।

स्वागतम–

दोनों हाथ में पुष्प लेकर स्वागत करें–

ॐ जगदम्बायै स्वागतं समर्पयामि नमः।।

पाद्य–

जल में दूब या दूध मिलाकर चढ़ावें–

ॐ जगदम्बायै पाद्यं समर्पयामि नमः।।

आचमन–

लौंग तथा जायफल जल में डाल कर चढ़ायें–

ॐ जगदम्बायै आचमनं समर्पयामि नमः।।

अर्घ्य–

दूब, तिल, पुष्प, चावल एवं कुंकुम जल में डालकर चढ़ायें–

ॐ जगदम्बायै अर्घ्यं समर्पयामि नमः।।

मधुपर्क–

दूध में दही, घी एवं शहद मिला कर चढ़ायें–

ॐ जगदम्बायै मधुपर्कं समर्पयामि नमः।।

स्नान–

स्नान हेतु जल चढ़ायें–

परमानन्द बोधब्धि निमग्न निजमूर्तये।
सांगोपांग मिदं स्नानं कल्पयाम्यहमीश ते।।
ॐ जगदम्बायै स्नानं समर्पयामि नमः।।

वस्त्र–

वस्त्र के स्थान पर मौली चढ़ावें–

ॐ जगदम्बायै वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि नमः।
गन्धं अक्षतान् समर्पयामि नमः।।

पुष्प, धूप, दीप–

ॐ जगदम्बायै पुष्पं धूपं दीपं दर्शयामि नमः।।

नवेद्य, दक्षिणा–

ॐ जगदम्बायै नैवेद्यं निवेदयामि नमः।
दक्षिणां द्रव्यं समर्पयामि नमः।।

इसके बाद नवदुर्गा माला से 5 माला निम्न मंत्र का जप करें–

मंत्र

।। ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।।

आरती

इसके पश्चात् मां भगवती जगदम्बा की आरती सम्पन्न करें–

समर्पण–

गुह्यातिगुह्यगोप्तृ त्वं गृहणास्मत् कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु में देवि त्वतप्रसादान महेश्वरि।।

इसके बाद आरती करें।

इस प्रकार नित्य पांच माला उपरोक्त मंत्र का जप करना है। फिर नवमी को मंत्र जप के पश्चात् हवन करें, आरती करें और कुंवारी कन्या को भोजन करा कर उचित दक्षिणा प्रदान करें।

कलश के जल को सारे घर में छिड़के कलश पर जो नारियल है, उसे प्रसाद के रूप में सपरिवार ग्रहण करें।

साधना सामग्री 450/-

आरती

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिव री।। जय।।

मांग सिन्दूर विराजत टीको मृगमदको।
उज्ज्वल से दोउ नैना, चंद्रवदन नीको।। जय।।

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।
रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै।। जय।।

केहरि वाहन राजत, खड्ग खपर धारी।
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुखहारी।। जय।।

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर सम राजत ज्योति।। जय।।

शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर-घाती।
धूम्रविलोचन नैना निशिदिन मदमाती।। जय।।

चण्ड मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे।। जय।।

ब्रह्माणी, रुद्राणी, तुम कमला रानी।
आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी।। जय।।

चौसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरूं।
बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू।। जय।।

तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुख हरता सुख सम्पत्ति करता।। जय।।

भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर नारी।। जय।।

कंचल थाल विराजत अगर कपूर बाती।
(श्री) मालकेतु में राजत कोटि रतन ज्योति।। जय।।

(श्री) अम्बेजी की आरती जो कोई नर गावै।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पत्ति पावै।। जय।।

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिव री।। जय।।

• **20.4.21 या किसी भी माह की शुक्ल पक्ष की अष्टमी**

शक्ति की अधिष्ठात्री देवी यदि आसीन होती हैं तो केवल सिंह के स्कन्धों पर ही।
साधक यदि उन्हें समाहित करना चाहता है, तो आवश्यक है,
कि उसके पास ऐसी साधना का बल हो,
जो उसे सिंहत्व प्रदान कर सके।
जीवन के शोक, दोष मिटाकर,
इसी सिंहत्व प्राप्ति का रहस्य है...
.जया दुर्गा साधना

शक्ति साधनाओं में प्रवेश का सिंहद्वार है

जया दुर्गा साधना

जब पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे विशिष्ट रूप से महाविद्या साधना में दीक्षित किया, तब साथ ही साथ यह भी आज्ञा दी, कि इस साधना को नित्य रात्रि घर से दूर किसी पवित्र एकान्त स्थली पर ही सम्पन्न करना है। ऐसा उन्होंने इस कारणवश कहा था, जिससे स्थल की पवित्रता और शांति के साथ ही साथ विभिन्न सामाजिक विघ्न-बधाओं से भी मुक्ति मिली रह सके। मैंने उनके निर्देशानुसार अपने घर से दूर, नगर से लगभग बाहर एक ऐसा स्थान ढूंढ भी लिया, जो लगभग डेढ सौ वर्ष पुराना एक देवी मन्दिर था तथा वहां उसके पुजारी के अतिरिक्त रात्रि में अन्य कोई नहीं रहता था। नगर से बाहर होने के कारण श्रद्धालुजन सायंकाल के बाद फिर प्रायः नहीं आते थे तथा पुजारी जी ने 'एक से भले दो' सोच कर मुझे सहर्ष अनुमति दे दी थी।

मेरे नगर के बहुत बड़ा न होने के कारण यह असम्भव था कि लोगों को शीघ्र ही इसकी खबर न लग जाती और शीघ्र ही मेरे सभी परिचित इस तथ्य से भी परिचित हो गए कि मैं रात्रि मे 'मंत्र जगाता हूं'। उनके समक्ष महाविद्या साधना की उच्चता आदि का वर्णन करने से कोई लाभ नहीं था, क्योंकि वे इसी धारणा पर दृढ़ प्रतिज्ञ थे, कि मैं कोई 'सिद्धि' प्राप्त करने जा रहा हूं। इसी कारणवश वे मुझे भय-घृणा मिश्रित भाव से मिला करते थे। इस काल के मध्य मुझे अनेक प्रकार की सलाह-मशवरे और झिड़कियां मिलीं, लेकिन सबसे अद्‌भुत तो मुझे तब लगा, जब मेरे एक सहयोगी ने मुझसे यह कहा, कि देवी की साधना कर रहे हो, संभल कर रहना कहीं उल्टा न हो जाए।

मैं आश्चर्य से उनको देखता ही रह गया कि साधना और देवी के विषय में लोगों ने कैसी-कैसी धारणाएं बना रखी हैं। तंत्र के विषय में जो धारणाएं प्रचलित हैं, उनका तो फिर भी एक बार तर्क की दृष्टि से औचित्य माना जा सकता है, क्योंकि तथाकथित तांत्रिकों ने अपने आचार-विचार, वेशभूषा से ऐसा ही सिद्ध कर रखा है किन्तु यदि यही धारणा देवी साधना के विषय में है, तो कितने अधिक खेद की बात है।

यह सत्य है कि देवी साधना अत्यन्त दुष्कर होती है, उसको सम्पन्न करते समय अनेक विशिष्ट आचार-विचारों का दृढ़ता से पालन करना ही होता है, किन्तु यदि इसी आधार पर देवी साधना को भयंकर, हानिप्रद, अनिष्टकारी और विपरीत प्रभावकारी वर्णित किया जाए तो विचार करना पड़ जाता है। मैं यहां वही रटी-रटाई बात भी नहीं कहने जा रहा, कि 'माता कुमाता न भवति' किन्तु यही बात इस आधार पर इस प्रकार से कहने का इच्छुक हूं, कि यदि किसी कारणवश, देवी साधना में सफलता न मिले, तो देवी पलट कर 'वार' नहीं करती। यह किसी भी देवी या देवता के स्वभाव का अंग नहीं होता है। जिस 'देवत्व' के आधार पर हम सामान्य बोलचाल में कहते हैं, कि अमुक व्यक्ति एकदम देवता है या अमुक स्त्री बिल्कुल देवी है, उसका यही तो तात्पर्य है, कि वह व्यक्ति या स्त्री प्रत्येक दशा में कल्याणकारी है, उसके अन्दर से राग-द्वेष, घृणा-हिंसा की भावनाएं समाप्त हो गयी हैं, फिर कोई देवी या देवता अपने भक्त या साधक के लिए घातक कैसे हो सकता है ?

'माता कुमाता न भवति'

यही बात इस आधार पर इस प्रकार से कहने का इच्छुक हूं, कि यदि किसी कारणवश, देवी साधना में सफलता न मिले, तो देवी पलट कर 'वार' नहीं करती।

यह सत्य है कि देवी साधना अत्यन्त दुष्कर होती है, उसको सम्पन्न करते समय अनेक विशिष्ट आचार-विचारों का दृढ़ता से पालन करना ही होता है, किन्तु यदि इसी आधार पर देवी साधना को भयंकर,हानिप्रद, अनिष्टकारी और विपरीत प्रभावकारी वर्णित किया जाए तो विचार करना पड़ जाता है।

वस्तुतः देवी साधना या महाविद्या साधना के विषय में एक विशिष्ट प्रकार के संयम एवं आचार-विचार का प्रावधान केवल इस कारणवश किया गया था, जिससे साधक साधना की उच्च भाव भूमि पर आसीन होते समय च्युत न हो सके और इस तथ्य का निरूपण इस प्रकार से किया गया, कि देवी साधना या महाविद्या साधना में अमर्यादा युक्त कार्य करने वाला साधक पतित हो सकता है अथवा उसे संकट का सामना करना पड़ जाता है। इस विशेष स्थिति को सामान्यीकृत करके सम्पूर्ण महाविद्या साधना अथवा देवी साधना को ही निषिद्ध कर देना अथवा उससे भयभीत होकर उसे त्याज्य मान लेना बद्धिमता नहीं कही जा सकती।

इस भ्रामात्मक स्थिति को उत्पन्न करने में उन पंडितों-पुरोहितों की भी बहुत बड़ी भूमिका रही है, जो पूजन-अर्चन से सम्बन्धित कर्मकांड को अपनी पैतृक सम्पत्ति बनाए रखना चाहते थे और यह तभी सम्भव था जब सामान्य जन के मध्य भ्रम एवं भय व्याप्त हो सके।आज भी अनेक पढ़े-लिखे और अन्यथा प्रबुद्ध साधकों को यह कहते पाया जा सकता है, कि दुर्गा साधना के असफल रहने पर व्यक्ति विक्षिप्त हो जाता है या उसके मुंह से खून आने लगता है या घर-परिवार बिखर जाता है इत्यादि। सम्भवतः भ्रम की इससे अधिक कोई भी पराकाष्ठा नहीं हो सकती।

जिस प्रकार एक भीरु व्यक्ति ही लड़ाई के लिए पैंतरे बदलते अधिक दिखता है, उसी प्रकार दीन-हीन-पतित की मानसिकता से युक्त व्यक्ति ही अधिक जोर-शोर से आगे बढ़कर ढोलक पीटता, मंजीरे चमकाता अधिक दिखाई पड़ता है। वह वास्तव में दया का पात्र ही होता है, क्योंकि उसने साधना का मर्म जानकर अपने जीवन को निश्चिंतता नहीं दी है वरन इस प्रकार से वह अपने भय को छिपाने का असफल प्रयास ही तो कर रहा है। यही शक्ति साधना का महत्त्व स्वयमेव स्पष्ट हो जाता है। यदि यह कहा जाए कि शक्ति की साधना ही प्रथम साधना है, तो कोई भी अतिशयोक्ति नहीं होगी। आवश्यकता है तो केवल इस बात की कि साधक अपने विभ्रमों से मुक्त होने की क्रिया करे तथा उसे उचित साधना-विधि प्राप्त हो सके, क्योंकि प्रायः उचित साधना-विधि प्राप्त न होने के कारण एवं तदनुसार असफल रह जाने के कारण ही व्यक्ति के मन में यह धारणा प्रबल हो जाती है, कि शक्ति साधना में सभी को प्रवेश का अधिकार नहीं है। यदि कोई आठ वर्ष का बालक स्नातक स्तर की पाठ्यपुस्तक को पढ़ कर न समझे और कहे कि यह पुस्तक व्यर्थ है, तो इसमें त्रुटि कहां है और कितनी है ?

किन्तु योग्य साधक वही होता है, जो अपने स्तर, अपनी क्षमता ईमानदारी से स्वीकार कर, अपने स्तर एवं क्षमता की विधि प्राप्त करने की चेष्टा में रत रहता है तथा उसे सम्पन्न कर भविष्य में उच्च कोटि की साधनाओं की ओर अग्रसर होता है।

यद्यपि साधना जगत में उच्च कोटि अथवा निम्न कोटि जैसा कोई भेद नहीं है, प्रत्येक साधना ही अपने स्थान पर श्रेष्ठ है, वंदनीय है, फिर भी कुछ साधनाएं 'शक्ति प्राप्ति' की होती है, और कुछ 'शक्ति-सिद्धि' की।प्रारम्भ में शक्ति प्राप्ति की ही साधनाएं करनी पड़ती हैं, जिस प्रकार एक डायनेमो पहले बाह्य रूप से शक्ति प्राप्त कर गतिशील होता है एवं उसके बाद तो वह स्वयं असीमित ऊर्जा का उत्पादन करने में समर्थ हो जाता है। इसी कारणवश केवल प्रारम्भिक साधक ही नहीं अपितु साधना पथ पर काफी आगे बढ़ चुके साधक भी आत्मविवेचन कर इस प्रकार की प्रारम्भिक साधनाएं प्राप्त करने की चेष्टा में रत रहते ही हैं।

प्रस्तुत लेख में इसी श्रेणी की एक 'प्रारम्भिक साधना' वर्णित की जा रही है, जो साधना के किसी भी आयाम पर स्थित साधक के लिए फलप्रद सिद्ध होगी ही। यह भगवती दुर्गा की विशेष फलप्रद 'जया साधना' है। भगवती दुर्गा की साधना अपनेआप में पूर्ण शक्ति प्राप्ति की साधना है और मूलतः यही जगत की समस्त क्रियाओं की संचालिका है, किन्तु प्रारम्भ में सीधे भगवती दुर्गा की साधना करने से साधक को कोई भी लाभ नहीं हो सकता, क्योंकि कोई भी साधक प्रथम दिन से ही उस भावभूमि और चैतन्यता पर आसीन नहीं होता, कि वह सहज ही भगवती दुर्गा की साधना को सिद्ध कर ले।

यद्यपि पूर्वजन्म की संचित साधना एवं संस्कारों के फलस्वरूप, साधक ऐसी साधना में प्रवृत्त अवश्य होता है, किन्तु यहां एक बात ध्यान में रखने योग्य है, कि भले ही साधक के कितने ही पूर्वजन्मों के संस्कार क्यों न हो, उसे भी वर्तमान जन्म में अपने को जाग्रत करने की क्रियाएं करनी ही पड़ती है, क्योंकि जहां एक ओर इस चित्त पर पूर्वजन्म के शुभ संस्कार अंकित होते हैं, वहीं एक जन्म से अगले जन्म तक की यात्रा में अनेक अशुभ संस्कार भी अंकित हो ही जाते हैं। इसी कारणवश प्रस्तुत साधना न केवल प्रारम्भिक साधकों के लिए है अपितु साधना के पथ पर कुछ समय से गतिशील साधकों के लिए भी समान रूप से फलदायक है।

यह भगवती दुर्गा की साधना में प्रवेश हेतु एक प्रकार से प्रवेश द्वार है और यही सिद्धेश्वरी साधना का भी रहस्य है, क्योंकि जब तक साधक उस मूलभूत शक्ति को अपने अनुकूल नहीं बना लेता, जो साधना

दुःसाध्य अवश्य मानी गई है भगवती दुर्गा की साधना किन्तु असाध्य नहीं। और सहज ही सधित हो जाती है भगवती दुर्गा यदि साधक ने उनकी साधना को सम्पन्न किया हो, एक निश्चित क्रम के अनुसार

हेतु आवश्यक बल एवं तदनुकूल प्रखरता प्रदान करे, तब तक शक्ति की कोई भी साधना सफल हो ही नहीं सकती, चाहे वह कोई भी महाविद्या साधना हो अथवा भगवती दुर्गा की साधना।

भगवती जया की साधना प्राकारान्तर से भगवती दुर्गा की ही साधना है जैसा कि 'दुर्गा सप्तशती' से स्पष्ट होता है–

कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुलेखां
शंखं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्।
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं
ध्यायेद दुर्गा जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामै।।

(दुर्गा सप्तशती–चतुर्थाध्याय)

अर्थात् 'जिनके अंगों की आभा श्यामवर्णीय मेघ के समान है, जो अपने कटाक्षों से शत्रु समुह को भय प्रदान करती है तथा अपने मस्तक पर आबद्ध चन्द्रमा की रेखा से शोभा पाती है, हाथ में शंख, चक्र, कृपाण और त्रिशूल धारण करने वाली, तीन नेत्रों से तीनों लोकों को आपूरित करने वाली उन 'जया' नाम की दुर्गा का ध्यान करें, जिनकी सेवा सिद्धि की इच्छा रखने वाले पुरुष करते हैं तथा देवता जिन्हें सब ओर से घेरे रहते हैं।'

उपरोक्त ध्यान से यह पूर्णतया प्रकट होता है, कि भगवती दुर्गा का ही वरदायक स्वरूप 'जया' है। यह भगवती दुर्गा की कृपा है, कि जहां एक ओर वे साधना के माध्यम से दुःसाध्य कही गयी हैं, वहीं वे अपने एक अन्य कल्याणदायक स्वरूप 'जया' के माध्यम से अपने भक्तों की आशा को पूर्ण करने के लिए तत्पर भी हैं। देवी एवं देवता भय की स्थिति नहीं है वरन वे तो स्वयं आतुर रहते हैं, कि कब उन्हें उचित आधार मिले और वे अपने कल्याणकारी स्वरूप के माध्यम से जगत का कल्याण करे, क्योंकि किसी भी देवी या देवता की मूल चेतना तो केवल करुणामय और कल्याणमय ही होती है। साधक उचित साधना के द्वारा अपने अन्दर ही वह पात्रता उत्पन्न करता है, जिससे फिर सम्बन्धित देवी या देवता उसके अन्दर समाहित हो सके।

स्वयं को प्रत्येक ढंग से परिपूर्ण बना लेना और जीवन की दुर्गतियों का समापन कर सकना, ये दुर्गा की साधना के सहज फल होते हैं, और यदि साधक इसे और भी सरल रूप में सिद्ध करना चाहे, तो प्रस्तुत साधना के माध्यम से सिद्ध कर सकता है।

किसी भी माह की शुक्ल पक्ष की अष्टमी को सम्पन्न की जाने वाली इस साधना का मूल प्रभाव तो दुर्गा साधना का है, किन्तु अपेक्षाकृत सरल और सहज ढंग का है। इस साधना के माध्यम से ही साधक महाविद्या साधनाओं में प्रवेश का केवल अधिकारी ही नहीं वरन सुपात्र भी हो जाता है तथा भगवती जया की विशिष्ट 'जयप्रद' शक्ति के कारण सहज ही उन बाधाओं से मुक्त रहता है, जिनका सामना प्रत्येक महाविद्या साधक को करना ही पड़ता है।

इस साधना को सम्पन्न करने हेतु साधक के पास ताम्रपत्र पर अंकित 'जया दुर्गा यंत्र' होना अति आवश्यक होता है, क्योंकि यही उनकी शक्तियों का वास्तविक एवं कल्याणकारी अंकन जो है। इस महत्वपूर्ण यंत्र के अतिरिक्त एक 'तांत्रोक्त फल' तथा 'हकीक माला' भी आवश्यक है।

साधक लाल वस्त्र धारण कर पश्चिम मुख होकर लाल रंग के आसन पर बैठें। यंत्र तथा तांत्रोक्त फल को स्थापित कर दोनों का पूजन कुंकुम और अक्षत से करें।

तदुपरांत हकीक माला से निम्न मंत्र की ग्यारह माला मंत्र जप करें–

मंत्र

॥ॐ ह्रीं सिद्धिप्रदे जया दुर्गायै नमः॥

OM HREEM SIDDHIPRADE JAYAA DURGAYEI NAMAH

यदि साधक किसी महाविद्या साधना में प्रवृत्त होने की भावना रखता है, तो उसे इस मंत्र की ग्यारह माला मंत्र जप साधना के पूर्व ही करना आवश्यक होता है। मंत्र जप के उपरांत सभी साधना सामग्रियों को किसी देवी मन्दिर में कुछ दक्षिणा के साथ विसर्जित कर दें।

इस अद्भुत चैतन्य, शक्तिदायी एवं सिद्धिप्रद साधना को सम्पन्न कर साधकगण स्वयं अनुभव कर सकते हैं, कि देवी की साधना अपने आप में कितना अधिक प्रवाह, तृप्ति एवं मधुरता लिए हुए है, साथ ही मातृस्वरूपा होने के कारण वे अपने साधकों के उन दुःखों को भी समाप्त करने में समर्थ हैं ही, जिनको साधक प्रकट करें अथवा न प्रकट करें।

न्यौछावर–540

वेदसारशिवस्तव:

पशूनां पतिं पापनाशं परेशं गजेन्द्रस्य कृत्तिं वसानं वरेण्यम्।
जटाजूटमध्ये स्फुरद्गाङ्गवारिं महादेवमेकं स्मरामि स्मरारिम्।।1।।
महेशं सुरेशं सुरारार्तिनाशं विभुं विश्वनाथं विभूत्यङ्गभूषम्।
विरूपाक्षमिन्द्वर्कवह्निस्त्रिनेत्रं सदानन्दमीडे प्रभुं पञ्चवक्त्रम्।।2।।
गिरीशं गणेशं गले नीलवर्णं गवेन्द्राधिरूढं गणातीतरूपम्।
भवं भास्वरं भस्मना भूषिताङ्गं भवानीकलत्रं भजे पञ्चवक्त्रम्।।3।।
शिवकान्त शम्भो शशाङ्कार्धमौले महेशान शूलिन् जटाजूटधारिन्।
त्वमेको जगद्व्यापको विश्वरूप प्रसीद प्रसीद प्रभो पूर्णरूप।।4।।
परात्मानमेकं जगद्बीजमाद्यं निरीहं निराकारमोङ्कारवेद्यम्।
यतो जायते पाल्यते येन विश्वं तमीशं भजे लीयते यत्र विश्वम्।।5।।
न भूमिर्न चापो न वह्निर्न वायुर्न चाकाशमास्ते न तन्द्रा न निद्रा।
न ग्रीष्मो न शीतं न देशो न वेषो न यस्यास्ति मूर्तिस्त्रिमूर्तिं तमीडे।।6।।
अजं शाश्वतं कारणं कारणानां शिवं केवलं भासकं भासकानाम्।
तुरीयं तम:पारमाद्यन्तहीनं प्रपद्ये परं पावनं द्वैतहीनम्।।7।।

नमस्ते नमस्ते विभो विश्वमूर्ते नमस्ते नमस्ते चिदानन्दमूर्ते।
नमस्ते नमस्ते तपोयोगगम्य नमस्ते नमस्ते श्रुतिज्ञानगम्य।।8।।
प्रभो शूलपाणे विभो विश्वनाथ महादेव शम्भो महेश त्रिनेत्र।
शिवाकान्त शान्त स्मरारे पुरारे त्वदन्यो वरेण्यो न मान्यो न गण्यः।।9।।
शम्भो महेश करुणामय शूलपाणे गौरीपते पशुपते पशुपाशनाशिन्।
काशीपते करुणया जगदेतदेक-स्त्वं हंसि पासि विदधासि महेश्वरोऽसि।।10।।
त्वत्तो जगद्भवति देव भव स्मरारे त्वय्येव तिष्ठति जगन्मृड विश्वनाथ।
त्वय्येव गच्छति लयं जगदेतदीश लिङ्गात्मकं हर चराचरविश्वरूपिन्।।11।।

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यकृतो वेदसारशिवस्तवः सम्पूर्णः।

भावार्थ

जो सम्पूर्ण प्राणियों के रक्षक हैं, पाप का ध्वंस करने वाले हैं, परमेश्वर हैं, गजराज का चर्म पहने हुए हैं तथा श्रेष्ठ हैं और जिनके जटाजूट में श्रीगंङ्गाजी खेल रही हैं, उन एकमात्र कामारि श्रीमहादेव जी का मैं स्मरण करता हूँ।।1।।

चन्द्र, सूर्य और अग्नि - तीनों जिनके नेत्र हैं, उन विरूप नयन महेश्वर, देवेश्वर, देवदुःखदलन, विभु, विश्वनाथ, विभूतिभूषण, नित्यानन्दस्वरूप, पञ्चमुख भगवान महादेव की मैं स्तुति करता हूँ।।2।।

जो कैलाशनाथ हैं, गणनाथ हैं, नीलकण्ठ हैं, बैल पर चढ़े हुए हैं, अगणित रूप वाले हैं, संसार के आदिकारण हैं, प्रकाश स्वरूप हैं, शरीर में भस्म लगाये हुए हैं और श्रीपार्वती जी जिनकी अर्द्धाङ्गिनी हैं, उन पञ्चमुख महादेव को मैं भजता हूँ।।3।।

हे पार्वतीवल्लभ महादेव! हे चन्द्रशेखर! हे महेश्वर! हे त्रिशूलिन्। हे जटाजूटधारिन्! हे विश्वरूप! एकमात्र आप ही जगत् में व्यापक हैं। हे पूर्णरूप प्रभो! प्रसन्न होइये, प्रसन्न होइये।।4।।

जो परमात्मा हैं, एक हैं, जगत् के आदिकारण हैं, इच्छारहित हैं, निराकार हैं और प्रणवद्वारा जानने योग्य हैं तथा जिनसे सम्पूर्ण विश्व की उत्पत्ति और पालन होता है और फिर जिनमें उसका लय हो जाता है उन प्रभु को मैं भजता हूँ।।5।।

जो न पृथ्वी हैं, न जल हैं, न अग्नि हैं, न वायु हैं और न आकाश हैं; न तन्द्रा हैं, न निद्रा हैं, न ग्रीष्म हैं और न शीत हैं तथा जिनका न कोई देश है, न वेश है, उन मूर्तिहीन त्रिमूर्ति की मैं स्तुति करता हूँ।।6।।

जो अजन्मा हैं, नित्य हैं, कारण के भी कारण हैं, कल्याणस्वरूप हैं, एक हैं, प्रकाशकों के भी प्रकाशक हैं, अवस्थात्रय से विलक्षण हैं, अज्ञान से परे हैं, अनादि और अनन्त हैं, उन परमपावन अद्वैतस्वरूप को मैं प्रणाम करता हूँ।।7।।

हे विश्वमूर्ते! हे विभो! आपको नमस्कार हैं, नमस्कार है। हे चिदानन्दमूर्ते! आपको नमस्कार है, नमस्कार है। हे तप तथा योग से प्राप्तव्य प्रभो! आपको नमस्कार है, नमस्कार है। वेदवेद्य भगवन्। आपको नमस्कार है, नमस्कार है।।8।। हे प्रभो! हे त्रिशूलपाणे! हे विभो! हे विश्वनाथ! हे महादेव! हे शम्भो! हे महेश्वर! हे त्रिनेत्र! हे पार्वतीप्राणवल्लभ! हे शान्त! हे कामारे! हे त्रिपुरारे! तुम्हारे अतिरिक्त न कोई श्रेष्ठ है, न माननीय है और न गणनीय है।।9।।

हे शम्भो! हे महेश्वर! हे करुणामय! हे त्रिशूलिन्। हे गौरीपते! हे पशुपते! हे पशुबन्धमोचन! हे काशीश्वर! एक तुम्हीं करुणावश इस जगत् की उत्पत्ति, पालन और संहार करते हो, प्रभो! तुम ही इसके एकमात्र स्वामी हो।।10।।

हे देव! हे शंकर! हे कन्दर्पदलन! हे शिव! हे विश्वनाथ! हे ईश्वर! हे हर! हे चराचरजगद्रूप प्रभो! यह लिङ्गस्वरूप समस्त जगत् तुम्हीं से उत्पन्न होता है, तुम्हीं में स्थित रहता है और तुम्हीं में लय हो जाता है।।11।।

विषयों में दुर्गन्ध

एक भक्त-राजा एक महात्मा की पर्णकुटी पर जाया करते थे। उन्होंने एक बार महात्मा को अपने महल में पधारने के लिये कहा, पर महात्मा ने यह कहकर टाल दिया कि ''मुझे तुम्हारे महल में बड़ी दुर्गन्ध आती है, इसलिये मैं नहीं जाता।' राजा को बड़ा अचरज हुआ। उन्होंने मन-ही-मन सोचा - 'महल में तो इत्र-फुलेल छिड़का रहता है, वहाँ दुर्गन्ध का क्या काम! महात्माजी कैसे कहते हैं, पता नहीं।' राजा ने संकोच से फिर कुछ नहीं कहा।

एक दिन महात्मा जी राजा को साथ लेकर घूमने निकले। घूमते घामते - एक ऐसी बस्ती में पहुंच गये जहाँ चमड़े का कार्य हो रहा था और वहाँ वे एक पीपल के वृक्ष की छाया में खड़े हो गये। उन घरों में कहीं चमड़ा सूख रहा था तो कहीं ताजा चमड़ा तैयार किया जा रहा था। हर घर में चमड़ा था और उसमें से बड़ी दुर्गन्ध आ रही थी। हवा भी इधर की ही थी। दुर्गन्ध के मारे राजा की नाक फटने लगी। उन्होंने महात्माजी से कहा - 'भगवान्! दुर्गन्ध के मारे खड़ा नहीं रहा जाता - जल्दी चलिये।' महात्माजी बोले - 'तुम्हीं को दुर्गन्ध आती है? देखो उन घरों की ओर - कितने पुरुष, स्त्रियाँ और बाल-बच्चे हैं। कोई काम कर रहे हैं, कोई खा-पी रहे हैं, सब हँस-खेल रहे हैं। किसी को तो दुर्गन्ध नहीं आती, फिर तुम्हीं को क्यों आने लगी?' राजा ने कहा - 'भगवान्! चमड़े का कार्य करते-करते तथा इस वातावरण में रहते-रहते इनका अभ्यास हो गया है। इनकी नाक ही ऐसी हो गयी है कि इन्हें चमड़े की दुर्गन्ध नहीं आती, पर मैं तो इसका अभ्यासी नहीं हूँ। जल्दी चलिये - अब तो एक क्षण भी यहाँ नहीं ठहरा जाता।' महात्मा ने हँसकर कहा - 'भाई! यही हाल तुम्हारे राजमहल का भी है। विषय-भोगों में रहते-रहते तुम्हें उनमें दुर्गन्ध नहीं आती - तुम्हारा अभ्यास हो गया है, पर मुझको तो विषय वासना देखते ही उल्टी-सी आती है। इसीसे मैं तुम्हारे घर नहीं जाता था।'

राजा ने रहस्य समझ लिया। महात्मा हँसकर राजा को साथ लिये वहाँ से चल दिये।

▪ राजेश गुप्ता 'निखिल'

मेष-माह का प्रथम सप्ताह सुखप्रद है। अपना भवन निर्माण हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। शत्रु पक्ष से सावधान रहें। हर बातमें हठधर्मिता न करें। समय केअनुसार स्वयं में परिवर्तन लायें।आपकी लोकप्रियता बढ़ेगी। माह के मध्य में टेंशन का माहौल रहेगा। आत्मविश्वास कमजोर रहेगा। परिश्रम का पूरा फल नहीं मिलेगा। स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न बरतें। सरकारी कर्मचारियों को शुभ समाचार मिलेगा। इस समय प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी। कोर्ट-कचहरी के कार्य में सफलता मिलेगी। लालच में पड़कर हर जगह पैसों का इन्वेस्टमेंट न करें। जीवनसाथी के साथ समय माधुर्य पूर्ण रहेगा, पुत्र आज्ञाकारी रहेगा। आप भगवान शिव की साधना करें।

शुभ तिथियाँ-1, 2, 9, 10, 11, 18, 19, 28, 29

वृष-सप्ताह का प्रारम्भ शुभ है। परिस्थितियाँ अनुकूल रहेंगी। बड़ों की बात मानकर चलने से कामयागी मिलेगी। प्रॉपर्टी के कार्य में सफलता मिलेगी। शत्रु वर्ग शांत रहेगा। टेंशन से गुजरना पड़ सकता है। वाहन धीमी गति से चलायें। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। मित्र सहयोग करेंगे। माह के मध्य में कोई समस्या आ सकती है। व्यापार में नुकसान भी हो सकता है। विद्यार्थी वर्ग को वांछित सफलता मिलेगी। आपके रुके हुये रुपये प्राप्त होंगे। किसी चलते-फिरते आदमी से वाद-विवाद से उलझन में फंस सकते हैं, सम्भल कर रहें। कोई आकस्मिक आय हो सकती है। भाईयों के सम्बन्ध अच्छे होंगे। आप भाग्योदय दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-2, 3, 4, 11, 12, 13, 22, 23, 30, 31

मिथुन-माह का प्रारम्भ अनुकूल नहीं है। किसी से अनावश्यक झगड़ा हो सकता है। कोई झूठा लांछन भी लग सकता है। विरोधियों से सावधान रहें, आवेश में न आयें। विद्यार्थी वर्ग पढ़ाई में लगा रहेगा। माह के मध्य में जमीन का सौदा लाभदायक रहेगा। कारोबारी अड़चनें दूर होंगी। पारिवारिक समस्यायें आ सकती हैं, जिससे मानसिक शांति भंग होगी। आखिरी सप्ताह विद्यार्थी वर्ग के लिए अच्छा है, प्रतियोगी परीक्षा में सफलता मिलेगी। परिवार में किसी की तबियत बिगड़ सकती है। इस समय सोच-समझकर कदम उठायें अन्यथा भविष्य में नुकसान हो सकता है। आप इस माह शत्रु बाधा निवारण दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-4, 5, 6, 14, 15, 23, 24, 25

कर्क-माह का प्रारम्भ अच्छे परिणाम लायेगा। वांछित सफलता मिलेगी। मन में प्रसन्नता रहेगी। अनावश्यक खर्च की अधिकता रहेगी। रुके कार्य शांति से आप निपटा सकेंगे। उन्नति होगी, जिस कारण विरोधी ईर्ष्या करेंगे। शत्रु पक्ष हावी होने की कोशिश करेगा। अपने लोग ही धोखा करेंगे। उधार दिये पैसे आप वसूल कर सकेंगे। नौकरी के लिए दिये इन्टरव्यू में सफलता के अवसर हैं। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। परिवार में अशांति का वातावरण रहेगा। उदास रहेंगे। लोगों पर विश्वास सोच-समझ कर करें। परिस्थितियां सुधरेगी। मित्रों के सहयोग से नया मार्ग भी चुन सकते हैं। वाहन धीमी गति से चलायें। प्रयत्न करने पर उचित परिणाम अवश्य मिलेगा। इस माह आप मां दुर्गा की साधना करें

शुभ तिथियाँ-7, 8, 16, 17, 18, 26, 27

सिंह-प्रथम सप्ताह का प्रारम्भ सुखद रहेगा। किसी का सहयोग अपने रुके कार्यों में मदद देगा। विरोधी हावी रहेंगे, जिससे आप परेशान रहेंगे। परिवार में वातावरण अच्छा रहेगा। मित्रों का सहयोग मिलेगा। माह का मध्य अनिष्टकारीफल देगा। यात्रा से बचें। कष्टकारी हो सकता है। इसके बाद जीवन में आवश्यक प्रगति होगी। वाहन धीमी गति से चलायें। नया वाहन खरीदने से बचें। शेयर मार्केट से हानि संभव है। आखिरी तारीखों में किसी गलत सोहबत में फंसकर अपना नुकसान कर लेंगे। क्रोध पर काबू रखें। किसी भी कार्य में लापरवाही न करें। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। आप बगलामुखी साधना करें।

शुभ तिथियाँ-2, 9, 10, 11, 18, 19, 20, 28, 29

कन्या-प्रथम सप्ताह खुशनुमा रहेगा। रुके हुये कार्य पूरे होंगे।

दूसरे सप्ताह में संभल कर कार्य करें। बाहरी यात्रा से बचें। विरोधी पक्ष से परेशान रहेंगे। पीठ पीछे लोग बुराई करेंगे। विश्वास डगमगायेगा। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। रास्ते में बिना वजह किसी से न उलझें। तीसरे सप्ताह में मनचाहा कार्य पूर्ण होने से प्रसन्नता रहेगी। आपके सपने साकार होंगे। अविवाहितों के लिए विवाह का समय है। गलत सोहबत के मित्रों से दूर रहें, कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। लापरवाही न करें। बेकार के कार्यों में धन व्यय होगा। पुरखों की सम्पत्ति प्राप्त होगी। आप इस माह महालक्ष्मी साधना करें।

शुभ तिथियाँ-2, 3, 4, 11, 12, 13, 21, 22, 30, 31

तुला-सप्ताह का प्रारम्भ अनुकूल नहीं है। परिवार में कोई परेशानी रहेगी परन्तु कुछ दिनों बाद ही अनुकूलता प्राप्त होगी। आर्थिक स्थिति में सुधार रहेगा, यात्रा लाभदायक होगी। किसी नये व्यक्ति से मुलाकात दिनचर्या बदल देगी। व्यापार में प्रगति होगी। कठिनाई के मध्य सफलता मिलेगी। कोई पुरानी बात पर झगड़े जैसी स्थिति उत्पन्न होगी। अशांति का वातावरण बनेगा। मित्रों का सहयोग मिलेगा। अचानक रुके हुये रुपयों की प्राप्ति सम्भव है। अविवाहितों का विवाह का समय है। संतान का सहयोग मिलेगा। आपका धार्मिक क्षेत्र में रुझान रहेगा। आखिरी तारीखों में कोई अशुभ समाचार मिलेगा। किसी के विवाद में न पड़े अन्यथा अपमानित होना पड़ सकता है। आप विघ्नहर्ता गणेश दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-5, 6, 7, 14, 15, 23, 24, 25

वृश्चिक-माह का प्रारम्भ अनुकूल है। रुकावटें स्वतः दूर होंगी। किसी अन्य के वाद-विवाद से दूर रहें। नशीले पदार्थ का सेवन स्वास्थ्य खराब कर देगा। आपके प्रयास सफल होंगे। दाम्पत्य जीवन में तनाव हो सकता है। प्रतिष्ठा को क्षति पहुंच सकती है। संतान से सहयोग मिलेगा। माह का मध्य अनुकूल लेकिन व्यस्तता लायेगा। दूसरों को सहयोग करेंगे। विद्यार्थी वर्ग को प्रतियोगी परीक्षा में सफलता के अवसर हैं। अचानक कोई अशुभ समाचार चिंता बढ़ायेगा।दूसरों की भलाई के चक्कर में परिवार में अशांति हो सकती है। नौकरीपेशा लोगों से उच्च अधिकारी प्रसन्न रहेगा। कोई भी फैसला सोच-समझ कर ही लें। आप कायाकल्प दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-7, 8, 16, 17, 18, 26, 27

धनु-सप्ताह की शुरूआत ठीक है। मनोवांछित सफलता मिलने के आसार हैं। कोई नुकसान पहुंचा सकता है सावधान रहे, कोई पुराना राज उजागर हो सकता है। मित्रों का सहयोग मिलेगा, परिवार में किसी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। पैसों की तंगी रहेगी। शत्रु हावी रहेंगे परन्तु कोई गलत कदम न उठायें। किसी अन्य की बजाय स्वयं पर भरोसा करें, विद्यार्थी वर्ग को मेहनत का फल मिलेगा। तीसरा सप्ताह उत्साह लायेगा, आकस्मिक धन लाभ होगा। आवेश में आने से कोई मामला बिगड़ेगा। सम्भल कर रहें, शत्रु वर्ग हावी होगा। क्रोध पर काबू रखें। व्यवहार में विनम्रता लायें। आपकी मेहनत रंग लायेगी। आप बगलामुखी साधना करें।

शुभ तिथियाँ-1, 2, 9, 10, 11, 18, 19, 28, 29

मकर-माह का प्रारम्भ मध्यम है। मुश्किलों का सामना करते हुये अपनी मेहनत से सफलता पायेंगे। नौकरीपेशा को पदोन्नति के अवसर हैं, बुजुर्गों का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। मानसिक परेशान रहेंगे। पैसों की तंगी रहेगी, स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। वाहन चालन में सावधानी रखें, उच्च अधिकारियों से जान-पहचान होगी। विद्यार्थी वर्ग पढ़ाई में मन लगायेगा। परिवार में सहयोगपूर्ण वातावरण रहेगा। आय के साधन बढ़ेंगे। शत्रुओं से सावधान रहें। लेन-देन के मामले में सचेत रहें, जल्दबाजी में निर्णन न लें। जीवन में उतार-चढ़ाव रहेगा। गृहस्थ जीवन सुखमय रहेगा। चलते-फिरते किसी से नोक-झोंक हो सकती है। गुस्से से काम बिगड़ सकता है। इस माह भैरव दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-2, 3, 4, 11, 12, 13, 21, 22, 23, 31

कुम्भ-प्रारम्भ अनुकूल नहीं है। गलत तरीके से धन कमाने से बचें वरना मुसीबत में फंस सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों में बाधाएं आयेंगी। पारिवारिक जीवन में तनाव होगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों की स्थिति सुधरेगी। महत्वपूर्ण लोगों से सम्पर्क होगा। कड़ी मेहनत पर ही फल मिलेगा। माह के मध्य में जीवन में सुखपूर्ण वातावरण रहेगा, आर्थिक उन्नति होगी। विरोधी आपकी उन्नति से द्वेषपूर्ण व्यवहार करेंगे। छोटी सी बात से अनावश्यक वाद-विवाद होंगे। शत्रु परेशानी पैदा करेंगे। विद्यार्थियों के लिए अच्छा समय है। इस माह मेहनत करने की जरूरत है अन्यथा असफलता मिल सकती है, मित्रों का सहयोग मिलेगा। आप भाग्य बाधा निवारण दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-4, 5, 6, 14, 15, 23, 24, 25

मीन-माह का प्रारम्भ वांछित फल लेकर आयेगा। अचानक किसी व्यक्ति से मुलाकात व्यापार में लाभदायक होगी। स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें। लापरवाही न करें। शत्रु परास्त रहेंगे। जिसका अच्छा करेंगे, वे ही मुसीबत में डालेंगे पर आप सक्षमता से परेशानियों से बाहर निकल आयेंगे। विद्यार्थी वर्ग को सफलता मिलेगी। नौकरी पेशा लोग उच्च अधिकारियों की प्रसन्नता प्राप्त करेंगे। परिवार में सभी का सहयोग मिलेगा। बिना पढ़े किसी भी पेपर पर हस्ताक्षर न करें। माह के अंत में यात्रा यादगार रहेगी, सोचे गये कार्य पूरे होंगे आखिरी तारीख टेंशन ला सकती है। आप त्रिपुर सुन्दरी साधना सम्पन्न करें।

शुभ तिथियाँ-7, 8, 16, 17, 18, 26, 27

सर्वार्थ सिद्धि योग-	मार्च - 7, 14, 16, 20, 28
अमृत सिद्धि योग-	मार्च- 16, 20
रवि योग-	मार्च- 4, 16, 20, 23, 24, 27

इस मास व्रत, पर्व एवं त्यौहार

06.03.21	शनिवार	सीताष्टमी
09.03.31	मंगलवार	विजया एकादशी
11.03.21	गुरुवार	महाशिवरात्रि
13.03.21	शनिवार	शनैश्चरी अमावस्या
18.03.21	गुरुवार	कायाकल्प दिवस
21.03.21	रविवार	होलाष्टक प्रारम्भ
25.03.21	गुरुवार	आमलकी एकादशी
28.03.21	रविवार	होली
29.03.21	सोमवार	बसंतोत्सव

मैं समय हूं

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत **99.9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है

वार/दिनांक		श्रेष्ठ समय
रविवार (मार्च-7, 14, 21, 28)	दिन	06:00 से 10:00 तक
	रात	06:48 से 07:36 तक
		08:24 से 10:00 तक
		03:36 से 06:00 तक
सोमवार (मार्च-1, 8, 15, 22, 29)	दिन	06:00 से 07:30 तक
		10:48 से 01:12 तक
		03:36 से 05:12 तक
	रात	07:36 से 10:00 तक
		01:12 से 02:48 तक
मंगलवार (मार्च-2, 9, 16, 23, 30)	दिन	06:00 से 08:24 तक
		10:00 से 12:24 तक
		04:30 से 05:12 तक
	रात	07:36 से 10:00 तक
		12:24 से 02:00 तक
		03:36 से 06:00 तक
बुधवार (मार्च-3, 10, 17, 24, 31)	दिन	07:36 से 09:12 तक
		11:36 से 12:00 तक
		03:36 से 06:00 तक
	रात	06:48 से 10:48 तक
		02:00 से 06:00 तक
गुरूवार (मार्च-4, 11, 18, 25)	दिन	06:00 से 08:24 तक
		10:48 से 01:12 तक
		04:24 से 06:00 तक
	रात	07:36 से 10:00 तक
		01:12 से 02:48 तक
		04:24 से 06:00 तक
शुक्रवार (मार्च-5, 12, 19, 26)	दिन	06:48 से 10:30 तक
		12:00 से 01:12 तक
		04:24 से 05:12 तक
	रात	08:24 से 10:48 तक
		01:12 से 03:36 तक
		04:24 से 06:00 तक
शनिवार (मार्च-6, 13, 20, 27)	दिन	10:30 से 12:24 तक
		03:36 से 05:12 तक
	रात	08:24 से 10:48 तक
		02:00 से 03:36 तक
		04:24 से 06:00 तक

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सङ्क ल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

मार्च 21

11. आज शिवरात्रि है भगवान शिव का अभिषेक करें।
12. किसी देवी मन्दिर में तेल का दीपक लगायें।
13. आज शनैश्चरी अमावस्या है, उड़द व तेल दक्षिणा के साथ दान करें।
14. गायत्री मंत्र की 1 माला जप कर के जाएं।
15. आज 'ऊँ नमः शिवाय' का 21 बार उच्चारण करके जाएं।
16. निम्न मंत्र का 21 बार उच्चारण करके जाए- ऊँ हनुमतये नमः।।
17. प्रातः पूजन में दूध से बने प्रसाद का भोग लगायें।
18. प्रातः स्नान के बाद पीपल के वृक्ष में 1 लोटा जल चढ़ायें।
19. घर से बाहर जाते समय सरसों के कुछ दाने अपने सिर पर 7 बार घुमाकर दक्षिणा दिशा में फेंक दें।
20. किसा गरीब को भोजन करायें।
21. आज निखिल स्तवन का 21-41 श्लोक का पाठ हिन्दी भावार्थ के साथ करें।
22. पारद शिवलिंग का अभिषेक करें।
23. आज हनुमान चालीसा का एक पाठ करके जाएं।
24. आज निम्न मंत्र का 21 बार जप करके जाएं- ऊँ श्रीं ह्रीं श्रीं ऊँ।
25. आज निम्न मंत्र का 21 बार जप करके जाएं- ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय।
26. दुर्गाजी के मन्दिर में लाल पुष्प अर्पित करें।
27. आज फर.-21 पत्रिका में वर्णित भैरव प्रयोग सम्पन्न करें।
28. आज होली है फर.-21 पत्रिका से 'धनदा तंत्र की साधना' सम्पन्न करें।
29. प्रातः गणपति मंत्र का 1 माला जप करें- ऊँ गं गणपतये नमः।
30. किसी हनुमान मन्दिर में बेसन के लड्डुओं का भोग लगाकर बांट दें।
31. प्रातः पूजन में चावल की ढेरी पर 1 सुपारी स्थापित करके गणपति मंत्र का 1 माला जप करें।

अप्रैल 21

1. प्रातः गुरु पूजन के बाद ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय का 51 बार जप करें।
2. आज 11 बार ह्लीं मंत्र का उच्चारण करके ही जाएं।
3. आज शनि मुद्रिका (न्यौछावर- 150/-) धारण करें।
4. आज प्रातःकालीन उच्चरित वेद ध्वनि सी.डी. का श्रवण करें।
5. स्नान करके अन्न दान करें।
6. गाय को रोटी खिलायें।
7. आज ऊँ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ऊँ मंत्र का 21 बार जप करके जाएं।
8. गुरु गुटिका (न्यौ. 150/-) धारण करें, सफलता मिलेगी।
9. दुर्लभोपनिषद सी.डी. का श्रवण करें।
10. बगलामुखी गुटिका (न्यौ.-150/-) धारण करें, शत्रु बाधा समाप्त होगी।

पाप मोचनी एकादशी 07.04.21 या
सद्गुरुदेव जन्मदिवस 21.4.2021

अथर्ववेद में वर्णित
पाप–दोष शमन हेतु

तांत्रोक्त गुरु साधना

समस्त दोषों का निवारण होता है अथर्ववेद में वर्णित तंत्र की इस गुरु साधना से। पत्रिका में समय–समय पर गुरु साधना से सम्बन्धित लेख एवं रहस्य प्रकाशित किए जाते रहे हैं, जिनका सजग पाठकों ने उपयोग कर यह अनुभव किया कि वास्तव में अनेक उपायों को अपनाने की अपेक्षा यदि केवल गुरु साधना ही सम्पन्न कर ली जाए तो जीवन में भोग व मोक्ष दोनों सहज ही प्राप्त हो जाते हैं।

वस्तुत: अथर्ववेद में वर्णित ऐसी ही एक गोपनीय तांत्रोक्त गुरु साधना.....

गुरु शब्द जितना पावन है उतना ही प्राचीन भी। प्रारम्भिक साहित्य से ही श्री गुरु सम्बन्धित उल्लेख एवं सम्बन्धित दुर्लभ साधनाएँ मिलनी प्रारम्भ हो जाती हैं। हमारे प्रारम्भिक ग्रंथ वेदों में भी श्री गुरु से सम्बन्धित विस्तृत विवरण प्राप्त होते हैं। भावनोपनिषद् में स्पष्ट उल्लेख है–

श्रीगुरु: सर्वकारणभूता शक्ति: तेन नवरन्ध्ररूपो देह:।

अर्थात् समस्त क्रियाओं की कारणभूत शक्ति श्री गुरुदेव ही हैं और उनके साथ नवरंध्र रूप देह अभिन्न है।
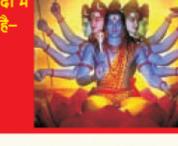
तंत्र शास्त्र में गुरु को तीन स्वरूपों में माना गया है। 1. दिव्य, 2. सिद्ध, 3. मानव। मनुष्य के शरीर में स्थित नवरंध्र श्री गुरुदेव के इन्हीं तीन रूपों से सम्बन्धित हैं, अर्थात् मनुष्य की देह में स्थित नवरंध्र ही श्रीगुरु देव के दिव्यौध, सिद्धौध एवं दानवौध रूप में स्थित हैं। इसका और सूक्ष्म विवेचन इस प्रकार है कि वास्तव में श्री गुरुदेव प्रत्येक जीव के शरीर में अभिव्यक्त रूप में स्थित हैं ही, आवश्यकता है तो केवल सही साधना के द्वारा उनको जाग्रत कर अपने जीवन को सभी प्रकार से आध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर कर लेने की।

प्रत्येक साधना के लिए कुछ न कुछ दिवस निर्धारित होते ही हैं और ऐसे ही दिवसों में प्रमुख दिवस है पाप मोचन दिवस। मानव अपने जीवन में बहुत प्रयास करता है। भौतिक रूप में कोई कोर-कसर बाकी नहीं रहने देता, लेकिन पूर्व जन्म कृत दोष और वर्तमान जीवन के दोष उसे उन्नति नहीं करने देते। इन सभी दोषों और पापों को समाप्त करने के लिए गुरु साधना एक श्रेष्ठ साधना है। क्योंकि जिस ब्रह्मतेज के अंश के द्वारा व्यक्ति का समस्त जीवन प्रकाशित हो सकता है, समस्त पापों की कालिमा धुल सकती है वह ब्रह्मतेज का साकार पुंज केवल श्री गुरुदेव के माध्यम से ही व्यक्ति के जीवन में स्पष्ट होता है और फिर व्यक्ति सहज ही वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है। इन सभी तथ्यों का निचोड़ है अथर्ववेद में वर्णित तंत्र की यह दुर्लभ गुरु साधना।

तांत्रिक ग्रन्थों में गुरुदेव के नौ रूप वर्णित किए गए हैं–

1. श्री उन्मनाकाशानंदनाथ,
2. श्री समनाकाशानंदनाथ
3. श्री व्यापकानंद नाथ,
4. श्री शत्याकाशानंदनाथ,
5. श्रीध्वन्याकाशानंदनाथ,
6. श्री ध्वनिमात्राकाशानंदनाथ,
7. श्री अनाहताकाशानंदनाथ,
8. श्री विन्द्वाकाशानंदनाथ और 9. श्री द्वन्द्वाकाशानंदनाथ।

इनमें से प्रथम तीन श्री गुरुदेव के दिव्योध स्वरूप द्वितीय तीन सिद्धौध स्वरूप एवं अंतिम तीन मानवीय स्वरूप के रूप में वर्णित किए गए हैं। इन्हीं नौ स्वरूपों की साधना से सम्पूर्ण रूप से श्री गुरुदेव का प्रकटीकरण एवं उनकी दिव्य व अलौकिक शक्तियों का प्रादुर्भाव अपने जीवन में किया जा सकता है। यह हमारा सौभाग्य है कि हमें वर्ष के प्रारम्भ में ही ऐसा श्रेष्ठ अवसर मिल रहा है जबकि हम ऐसी अद्वितीय साधना सम्पन्न कर, केवल वर्ष को ही नहीं अपितु अपने सम्पूर्ण जीवन को सफल बना सकते हैं।

श्री गुरु साधना जीवन की आधारभूत साधना है। तांत्रोक्त गुरु साधना अपने आप में केवल एक सिद्धि नहीं, वरन स्वयं में 51 सिद्धियों को समाहित किए एक सम्पूर्ण जीवन पद्धति है।

श्री गुरु साधना को इस पापमोचनी दिवस के दिन या सद्गुरुदेव जन्मदिवस के दिन साधक को हर हालत में सम्पन्न कर, अपने आगामी जीवन के लिए एक श्रेष्ठ आधारशिला रखनी ही चाहिए। प्रात: उठकर सफेद आसन बिछा कर, उस पर सफेद धोती पहन कर बैठें और ताम्र पत्र पर अंकित पूज्य गुरुदेव के चित्र एवं गुरु यंत्र को स्थापित करें। इस विशेष यंत्र को अथर्ववेद के सूक्तों द्वारा प्राणप्रतिष्ठित किया गया हो। यंत्र को तांबे के पात्र अथवा चावलों की ढेरी अथवा सुगन्धित पुष्प की पंखुड़ियों पर सम्मानपूर्वक स्थापित करें। इसके आगे एक रेशमी वस्त्र पर नवनाथ गुटिकाएं स्थापित करें। सामने घी का दीपक जला दें एवं वातावरण को सुगन्धित द्रव्यों धूप आदि से पवित्र कर तीन बार ॐकार ध्वनि कर अन्त: व बाह्य को पवित्र कर लें। हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि मैं अमुक (अपना नाम), अमुक गोत्र का साधक इस विशेष दिवस के दिन अपने पूर्वजन्म कृत और इह जन्म कृत समस्त ज्ञात व अज्ञात दोषों की शांति के लिए और जीवन में नया अध्याय प्रारम्भ करने के लिए श्री गुरुदेव को साक्षीभूत रखते हुए यह महत्वपूर्ण तांत्रोक्त साधना सम्पन्न कर रहा हूँ–ऐसा कह कर जल भूमि पर छोड़ दें तथा यंत्र पर हाथ रख उसका अपने प्राणों से निम्न मंत्र के द्वारा सम्पर्क एवं सम्बन्ध स्थापित करें, जिससे श्री गुरुदेव की शक्तियाँ जीवन पर्यन्त प्राप्त होती रहें–

मंत्र

ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नम:।

इस मंत्र का 21 बार उच्चारण करें। उपरोक्त प्राण प्रतिष्ठाकरण के पश्चात् सामने जो नवनाथ गुटिकाएँ स्थापित की हैं, उनका केशर व चंदन से पूजन करें। और क्रम से उच्चारण करें।

ॐ श्री उन्मनाकाशानंदना-जलं समर्पयामि
श्री समनाकाशानंदनाथ-गंगाजलं स्नानं समर्पयामि
व्यापकानंदनाथ-सिद्धयोगाजलं समर्पयामि
शक्त्याकाशानंदनाथ-चंदनं समर्पयामि
ध्वन्याकाशानंदनाथ-कुंकुमं समर्पयामि
ध्वनिमात्राकाशानंदनाथ-केशरं समर्पयामि
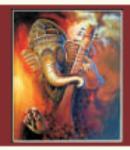
वेदों तथा उपनिषदों का सारभूत तथ्य ही है गुरु के साथ 'एक प्राणता' और गुरु कृपा की प्राप्ति ही 'गुरु साधना' में सिद्धि प्रदायक है...

–हिमालय का सिद्ध योगी

अनाहतकाशानंदनाथ-अष्टगन्धं समर्पयामि
विन्द्वाकाशानंदनाथ-अक्षतं समर्पयामि
द्वन्द्वाकाशानंदनाथ-सर्वोपचारार्थे समर्पयामि

उपरोक्त नवनाथ पूजन के उपरान्त पूज्य गुरुदेव का ध्यान करें–

द्विदल कमलमध्ये बद्धसंवित् समुद्रं
धृतशिवमयगात्रं साधकानुग्रहार्थम्
श्रुतिशिरसि विभान्तं बोधमार्तण्डमूर्तिम्
शमितिमिरशोकं श्रीगुरुं भावयामि
हृदंबुंजे - कर्णिकमध्यसंस्थितं
सिंहासने संस्थित दिव्यमूर्तिम्।
ध्यायेद्गुरुं चंद्रशिलाप्रकाशं
चित्पुस्तकाभीष्टवरं दधानम्।
श्री गुरुवे नमः ध्यानं समर्पयामि।।

उपरोक्त ध्यान के पश्चात् गुरु यंत्र का पूजन गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य और ताम्बूल इन छः उपचारों से करें तथा पुनः गुरुदेव से मानसिक रूप से प्रार्थना करते हुए निम्न मूल मंत्र का जप स्फटिक माला से करें।

मंत्र

ॐ ह्रौं मम समस्त दोषान् निवारय ह्रौं फट्

उपरोक्त मंत्र का इस दिवस पर विधान 31 माला मंत्र जप करने का है और जो साधक एक बार में मंत्र जप न सके वे 21 माला के बाद विश्राम ले सकते हैं। मंत्र जप के उपरान्त एक आमचनी में जल लेकर पूज्य गुरुदेव के श्री चरणों में अर्पित करने की भावना रखते हुए निम्न मंत्र जप के साथ भूमि पर छोड़ दें।

मंत्र

**ॐ गुह्यातिगुह्य गोप्ता त्वं गृहाणास्मत् कृतं जपं।
सिद्धिर्भवतु मे देवत्वत् प्रसादान्महेश्वर।।**

तंत्र के विधान में उपरोक्त मंत्र और यह पूजन अत्यन्त श्रेष्ठ और तुरंत फलदायक माना गया है। कई बार मंत्र जप के मध्य साधक को अपना शरीर ऐंठता हुआ लग सकता है। मन में विरोधी विचार आ सकते हैं, झुंझलाहट और एकदम से पूजन छोड़कर उठ जाने की भावना मन में आने लगती है किंतु भयभीत होने की अथवा विचलित होने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि शरीर स्थित पाप व दोष जब निकलेंगे तब वे विरोध तो प्रकट करेंगे ही। सम्पूर्ण पूजन के उपरांत 21 माला गुरुमंत्र का भी जप अवश्य करना है।

।। ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः।।

अंत में हाथ जोड़कर कृतज्ञता ज्ञापित करें कि मुझे पूज्य गुरुदेव की कृपा से ही एक ऐसा श्रेष्ठ प्रयोग प्राप्त हुआ तथा यह सम्पूर्ण पूजन उन्हीं को समर्पित है–
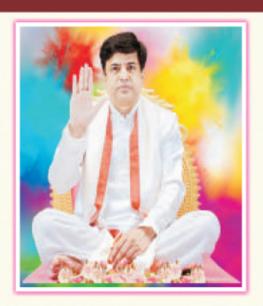
देवनाथ गुरौस्वामिन् देशिक स्वात्म
नायकम् त्राहि त्राहि कृपासिन्धु
पूजां पूर्णतराम् कुरु अनयापूजया
श्री गुरुः प्रीयन्ताम्
ॐ तत्सत् ब्रह्मार्पणम् अस्तु।

यह कहकर एक आचमनी जल अथवा श्रेष्ठ पुष्प, गुरुदेव के समक्ष प्रदान करें तथा गुरु आरती सम्पन्न कर इस दिन का विशेष पूजन सफल समझें।

यह साधना केवल पूर्वजन्म कृत एवं इह जन्म कृत दोषों को समाप्त करने वाली साधना ही नहीं वरन जीवन के तीन प्रमुख ऋणों, मातृ ऋण, पितृ ऋण एवं गुरु ऋण को समाप्त करने की क्रिया भी है। इन ऋणों के हट जाने के उपरान्त व्यक्ति सहज रूप से अपने आप को दबावों से मुक्त समझता है। आज के युग में व्यक्ति जिस तरह तनाव और अनावश्यक रूप से चिंतित होने की बात कहता है अथवा जिनमें उलझ कर वह भटकता रहता है, इसका मूल कारण ये ऋण ही होते हैं। जिनका उपचार औषधियां या मनोवैज्ञानिक उपाय नहीं अपितु साधना की ऐसी श्रेष्ठ पद्धतियाँ ही होती हैं।

साधना सामग्री

यंत्र व माला 450/-
नवनाथ गुटिका 150/-

जब सब तरफ से परेशान हों और कोई साधना भी न कर पा रहे हों तब इस श्री पंचमी लक्ष्मी दिवस पर या किसी भी बुधवार को इस वरवरद माल्य को धारण कर लें। जो कि लक्ष्मी का साक्षात् प्रकट स्वरूप है। इसका प्रत्येक मनका लक्ष्मी मंत्रों से प्राण-प्रतिष्ठित एवं चैतन्य है।

श्री पंचमी
17.04.2021

त्रिभुवनवशं करी सर्वाभरण भूषिते पद्म नयने!

लक्ष्मी वरवरद माल्य

भगवती लक्ष्मी के चित्र में आपने ध्यान दिया होगा उसमें कमल का बाहुल्य होता है। लक्ष्मी और कमल एक दूसरे के पूरक ही तो हैं, लक्ष्मी को यदि समझना है तो कमल से श्रेष्ठ कोई उपमा ही नहीं, ठीक उसी के समान गुलाबी आभा से दैदीप्यमान मुख मण्डल, उसी के समान उज्ज्वल और कोमल स्वरूप, उसी के समान समीप से निःसृत होती पद्मगंध, ठीक वैसी ही निर्लिप्तता और पद्म के सैकड़ों दलों की भाँति सैकड़ों स्वरूप! लक्ष्मी अपने-आप में दैवी सौन्दर्य से भरी, नारीत्व की गरिमा की एक ऐसी देवी है, जिसका अभी तक शायद सही मूल्यांकन नहीं किया गया, एक ओर जहां उन्हें इस धन-लोलुप समाज ने धन देने की ही देवी मात्र समझ कर उनसे व्यापारिक सा सम्बन्ध जोड़ा, वहीं दूसरी ओर कुण्ठित और निराश शास्त्रकारों ने उन्हें उपेक्षा की दृष्टि से देखा, धन को सभी बुराइयों का मूल कहा और लक्ष्मी को चंचला आदि कहा।

जिस व्यक्ति की पत्नी में लक्ष्मी तत्व समाविष्ट हो जाए, वह व्यक्ति स्वत: ही नारायण-तुल्य बन पूर्ण राजसी सुख का भोग करता है। केवल पत्नी ही नहीं, वाहन लक्ष्मी, आयु-लक्ष्मी, भू-लक्ष्मी, पुत्र-लक्ष्मी, धरा-लक्ष्मी, धान्य-लक्ष्मी, लक्ष्मी के तो सौ स्वरूप निर्धारित किए गए हैं।

परन्तु वस्तुस्थिति इससे कुछ अलग हटकर ही है, धन की अधिष्ठात्री यह देवी मूल रूप से नारी ही तो है, जिस प्रकार एक नारी स्वभावत: कोमल, स्नेहशील, दयालु और ममत्व से भरी होती है, किन्तु प्रबल स्वाभिमानिनी भी। वह इस बात की तरफ इच्छुक और आतुर होती है कि उसकी सराहना की जाए और सप्रयास उसे कोई जीवन में लाए, उसी प्रकार इस तथ्य को हम लक्ष्मी साधना के सन्दर्भ में भी कह सकते हैं। नारी या तो प्रबल पौरुष के माध्यम से अथवा प्रबल प्रेम के माध्यम से ही वशीभूत होती है, अन्य कोई उपाय ही नहीं। इस तथ्य को ध्यान में रखकर जहां एक ओर तांत्रोक्त रूप से लक्ष्मी को वश में करने के उपाय खोजे गए हैं और विश्वामित्र सरीखे, हठीले ऋषियों ने उन्हें चुनौती पूर्वक, पौरुषतापूर्वक अपने आश्रम में बांधकर रहने को विवश कर दिया, वहीं दूसरी ओर वैदिक काल में यज्ञ के माध्यम से, स्तोत्र रचना के माध्यम से उनकी अभ्यर्थना की गई और उनके स्थापन की कामना की गई। भगवती महालक्ष्मी को दस महाविद्याओं में एक महाविद्या कमला के रूप में प्रतिष्ठित कर एक प्रकार से उनके प्रति सम्मान ही व्यक्त किया गया। यंत्र के माध्यम से भी उनके स्थापन में आबद्धीकरण के प्रयास किए गए। श्री यंत्र, कनकधारा यंत्र एवं अन्य विशिष्ट यंत्रों की रचना कर उनके आबद्धीकरण का ही तो प्रयास किया गया, सर्वथा निर्लिप्त रहने वाले और मोह-माया से परे रहने वाले औघड़ों ने भी उनके वशीकरण के उपाय ढूंढे।

लक्ष्मी एक ऐसी श्रेष्ठ देवी है जिसके स्पर्श मात्र से ही व्यक्ति में पूर्णता का प्रादुर्भाव हो जाता है। लक्ष्मी की उपेक्षा ही व्यक्ति को जीवन में दरिद्री और अपमानित बनाती है। कई ऐसे धनाढ्य भी हैं जिन्हें छोटे-छोटे कार्यों के लिए सामान्य से व्यक्ति के सामने भी गिड़गिड़ाना पड़ता है, ऑफिसों के चक्कर लगाने पड़ते हैं। यदि धन ही लक्ष्मी का प्रतीक होता तो यह सब क्यों होता? लक्ष्मी सम्पूर्ण रूप से जीवन की आभा है, व्यक्ति का प्रभामण्डल है, आन्तरिक रूप से मिली तृप्ति का प्रकटीकरण है। लक्ष्मी को जीवन में और शरीर में स्थापित कर लेना, सारे जीवन, तन और मन को पद्मगंध की दिव्य सुगन्ध से सुगन्धित कर लेने की क्रिया है।

लक्ष्मी के सौ स्वरूप

लक्ष्मी का तो अत्यन्त विस्तृत क्षेत्र है। पत्नी को भी लक्ष्मी स्वरूपा माना गया है, कहते हैं कि जिस व्यक्ति की पत्नी में लक्ष्मी तत्व समाविष्ट हो जाए, वह व्यक्ति स्वत: ही नारायण-तुल्य बन पूर्ण राजसी सुख का भोग करता है। केवल पत्नी ही नहीं, वाहन लक्ष्मी, आयु-लक्ष्मी, भू-लक्ष्मी, पुत्र-लक्ष्मी, धरा-लक्ष्मी, धान्य-लक्ष्मी, लक्ष्मी के तो सौ स्वरूप निर्धारित किए गए हैं। जो कुछ भी व्यक्ति के जीवन में 'श्री' वृद्धि करे, उसके प्रभामण्डल को और अधिक आलोकित करे, समाज में उसका और अधिक सम्मान बढ़ाए, उसके पीछे लक्ष्मी का ही स्वरूप है। स्थान भय के विस्तार से लक्ष्मी के सभी सौ स्वरूपों का वर्णन यहाँ पर कर पाना कठिन है, किन्तु इसका अनुमान तो आप जीवन में पग-पग पर लगा सकते हैं। जहाँ भी आपको लगे कि काश! मेरे जीवन में यह होता, तो बस उसके पीछे लक्ष्मी का ही कोई स्वरूप छुपा है। उसी रूप में आप लक्ष्मी का ही वह वरदान व्यक्त अथवा अव्यक्त रूप में मांग रहे होते हैं।

लक्ष्मी के विविध स्वरूपों को जान भी लें फिर भी मुख्य प्रश्न तो शेष रह ही जाता है कि हम इन्हें जीवन में कैसे प्राप्त करें? यह जीवन इतना बड़ा नहीं होता और न ही व्यक्ति में इतनी सामर्थ्य होती है कि वह सप्रयास अपने जीवन में लक्ष्मी के विविध स्वरूपों को उतार सके। येन-केन-प्रकारेण व्यक्ति जीवन में मात्र चार या पांच प्रकार की लक्ष्मी का अर्जन ही कर पाता है और उनका भी केवल अर्जन मात्र, उपभोग नहीं। जबकि जीवन में होना तो यह चाहिए कि हम अपनी अर्जित वस्तु का सुख भी प्राप्त कर सकें। व्यक्ति अर्जित कर लेने के पश्चात् भी इस रूप में असफल रह जाता है कि वह उसे जीवन में धारण किए रह सके। **लक्ष्मी अर्थात् जीवन में सुख परन्तु 'श्री' का उपभोग न कर पाना, उसे बचा कर न रख पाना, एक प्रकार से उसे न प्राप्त करने के समान ही है।**

इस तथ्य को लेकर पर्याप्त समय से मंत्रवेत्ता और श्रेष्ठ साधक शोध कर रहे थे कि ऐसा क्या उपाय प्राप्त किया जाए कि व्यक्ति के जीवन में लक्ष्मी तत्व के समावेश के साथ ही साथ उसे स्थायित्व भी दिया जा सके। श्री यंत्र, कनकधारा यंत्र, अष्टलक्ष्मी यंत्र एवं कई अन्य यांत्रिक एवं मांत्रिक उपाय प्रचलित तो हैं लेकिन महत्वपूर्ण बात तो यह है कि ऐसा कौन सा उपाय हो कि व्यक्ति के शरीर में ही लक्ष्मी के समस्त सौ स्वरूपों को स्थापित किया जा सके और उसे अक्षुण बनाये रखा जा सके। इन्हीं शोधों के परिणामस्वरूप जो उपाय सामने आया, उसका नाम है लक्ष्मी वर-वरद माल्य। जिसके माध्यम से सदा-सदा के लिए व्यक्ति के शरीर में लक्ष्मी का स्थायी निवास हो सके।

विचित्र व अद्भुत मनकों से बनी लक्ष्मी आबद्धीकरण की क्रिया से युक्त इस दुर्लभ माला में कुल 108 मनके होते हैं जिनमें से आवश्यकता तो केवल सौ मनकों की ही होती है लक्ष्मी के सौ स्वरूपों को स्थापित करने के लिए, आठ मनके विशेष सौन्दर्य

लक्ष्मी को जीवन में और शरीर में स्थापित कर लेना, सारे जीवन, तन और मन को पद्मगंध की दिव्य सुगन्ध से सुगन्धित कर लेने की क्रिया है।

प्रभाव के लिए प्रदान किए जाते हैं साधक के शरीर में। इसका प्रत्येक मनका लक्ष्मी मंत्रों से सिद्ध कर, प्रत्येक मनके में लक्ष्मी के किसी एक विशेष स्वरूप का स्थापन किया जाता है एवं 'श्री सूक्त' में गुह्य रूप में वर्णित गोपनीय पद्धति से ऐसा विशेष प्रभाव दिया जाता है कि व्यक्ति के जीवन में लक्ष्मी के सौ स्वरूपों का स्थायी निवास हो सके। ऐसी माला केवल धारण करने वाले व्यक्ति के लिए ही नहीं, उसके पुत्रों-पौत्रों और वंशजों के लिए भी उसी प्रकार से उपयोगी रहती है। स्पष्ट रूप से कहा जाए तो यह केवल एक माला नहीं अपितु धरोहर है, आपकी पीढ़ियों के लिए। आप जिस प्रकार अपने पुत्र-पौत्रों के लिए धन-संचय, भूमि व मकान के रूप में अपनी याद छोड़ जाते हैं, ठीक उसी प्रकार आने वाली पीढ़ियाँ कृतज्ञता से गद्गद् हो उठेंगी कि उनके पूर्वज उनके लिए कैसा अनोखा उपहार छोड़कर गए हैं! यह ऐसी माला नहीं कि इसे जब चाहें तब बाजार में जाकर खरीद लें और धारण कर लें। इस प्रकार की माला को तो बिरले ही सिद्ध करना जानते हैं।

इस माला को धारण करने से व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन आने लगते हैं। लक्ष्मी-तत्व के स्पर्श से उसका चिन्तन भी बदल जाता है। आर्थिक दरिद्रता के साथ-साथ दैन्यता और कायरता समाप्त हो जाती है। उसके जीवन में सही अर्थों में आध्यात्मिकता का पूर्ण-सुख, सौभाग्य और मानसिक शान्ति का समय प्रारम्भ हो जाता है। लक्ष्मी भी अन्य देवी-देवताओं के समान मूल रूप में आध्यात्मिक स्वरूपा ही है। आध्यात्मिकता की प्रचलित परिभाषा के कारण उन्हें समझ नहीं पाए क्योंकि आध्यात्मिकता का अर्थ, भगवे वस्त्र धारण करने तक ही सीमित जो कर दिया गया है। घर में पुत्र हो, पौत्र हों, सुलक्षणा पत्नी हो, परस्पर मेल-मिलाप हो, अतिथि सत्कार हो, आत्मीय मित्रों के संग हास्य-विनोद के क्षण हों, साधु-संतजनों का सत्कार व दान हो, धार्मिक स्थानों की यात्राएँ हों और फिर भी मन निरन्तर प्रभु चिन्तन में ही लीन रहे, यही आध्यात्मिकता की सही परिभाषा है।

पूज्यपाद गुरुदेव ने एक अवसर पर स्पष्ट किया था कि वर-वरद का तात्पर्य होता है कि हम किसी को कुछ प्रदान कर सकें। केवल अपने ही लिए अर्जित व संचित न करें। यह विशिष्ट माला इसी लक्ष्य की पूर्ति करती है कि आप अपने आप को समृद्ध करें ही, अपना जीवन सुख-पूर्वक व्यतीत कर निश्चिंत भाव से प्रभु चरणों में लीन हो सकें-ताकि जो आपके सम्पर्क में आए उसे भी आप कुछ प्रदान करने की सामर्थ्य रखते हों।

यह निश्चित है कि आध्यात्मिक उन्नति तभी हो सकती है, जब पारिवारिक समृद्धि एवं उन्नति हो। पारिवारिक उन्नति के अभाव में गृहस्थ की कठिनाइयों के साथ चलते व्यक्ति अपने जीवन में श्रेयता नहीं ला सकता। यह माला ऐसी ही अनेक पारिवारिक जीवन में आने वाली कठिनाइयों का निदान प्रस्तुत करती हैं।

पारिवारिक उन्नति के साथ-साथ, व्यक्ति का सामाजिक जीवन भी समानान्तर रूप से चलता रहता है। उस पर गृहस्थ का दोहरा दायित्व होता है। वह जितने अंशों में पारिवारिक होता है, उतने ही अंशों में उसे सामाजिक भी होना ही पड़ता है। सामाजिक जीवन में अनावश्यक विवाद, शत्रु-बाधा, सहयोगियों से तनाव जैसी कई समस्याओं से उसको नित्य-प्रति के जीवन में उलझना पड़ता है। यह माला ऐसे अवसरों के लिए भी पूर्ण रूप से सफलतादायक है, क्योंकि जिस व्यक्ति में लक्ष्मी-तत्व समाहित हो जाता है, उसे स्वत: ही यश-लक्ष्मी प्राप्त होती है, उसे राज्य-लक्ष्मी भी प्राप्त होती है, और लक्ष्मी के इन श्रेष्ठ स्वरूपों के रहते व्यक्ति के सामाजिक जीवन में फिर बाधाएँ उपस्थित हो ही नहीं सकती। यदि कोई विरोध करता भी है तो स्वत: ही वह निस्तेज हो उठता है।

व्यापार वृद्धि के क्षेत्र में भी इस माला का अद्भुत प्रभाव देखा गया है। अनुभव में आया है कि व्यापारी बन्धुओं ने (अथवा जिन साधकों एवं शिष्यों का जीवनयापन किसी व्यवसाय से होता है उन्होंने) इस माला को धारण करने के पश्चात् न केवल अपने-आप में सम्मोहन सा भर लिया, वरन् ऐसा लगा कि उन्होने मनकों के रूप में लक्ष्मी को ही अपनी दुकान में बांध सा लिया है। जो प्रभाव उन्हें श्री यंत्र, कनकधारा यंत्र, कुबेर यंत्र स्थापित करने से मिले थे, वैसा ही प्रभाव इस माला के धारण करने से प्राप्त हुए हैं।

इस माला के अनेक लाभ सम्भव हैं, जिनसे व्यक्ति का जीवन सुखी एवं सफल हो उठता है। ऐसी माला का नित्य दर्शन और धारण अपने-आप में पुण्यदायी कार्य है, जिसमें न किसी लम्बी-चौड़ी साधना की आवश्यकता है और न किसी आडम्बर की। यह तो एक ऐसी विशिष्ट माला है कि इसे घर का प्रत्येक सदस्य धारण कर सकता है। घर के मुखिया के साथ-साथ उसकी पत्नी को भी यही माला धारण करना अतिआवश्यक रहता है क्योंकि लक्ष्मी स्त्री स्वरूपा है और इसी से वह घर की स्वामिनी में सहज रूप से समाकर घर का सर्वांगीण विकास करती है। यह माला न केवल व्यक्ति को धन-धान्य और लक्ष्मी के विविध स्वरूपों में लाभदायक सिद्ध होती है वरन् ऐसी माला का निरन्तर वक्षस्थल पर स्पर्श उसे नव-जीवन-प्रदाता के साथ ही साथ आध्यात्मिक लाभ भी देने वाला है। भारतीय चिन्तन के अनुसार नाभि से लेकर कण्ठ प्रदेश तक का सारा शरीर, भगवान विष्णु का क्षेत्र है अत: इस स्थान पर निरंतर 'लक्ष्मी का वरवरद माल्य' का सुखद व पवित्र स्पर्श, व्यक्ति के जीवन में लक्ष्मी-नारायण की संयुक्ति का पुण्य देता है। वक्षस्थल का प्रदेश न केवल भगवान विष्णु का क्षेत्र है, वरन् इसी प्रदेश में ही समस्त देवी-देवताओं का भी निवास है।

> व्यक्ति के शरीर में ही लक्ष्मी के समस्त सौ स्वरूपों को स्थापित किया जा सके और उसे अक्षक्षुण बनाये रखा जा सके। इन्हीं शोधों के परिणामस्वरूप जो उपाय सामने आया, उसका नाम है लक्ष्मी वर-वरद माल्य।

आपको सिर्फ इसे 17.04.2021 को या किसी भी बुधवार को सुबह पाँच बजे से साढ़े छ: बजे के मध्य गुरु-पूजन सम्पन्न कर फिर इस माला से चार माला निम्न मंत्र का जप कर इसे धारण कर लें।

मंत्र

ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै पूर्ण सिद्धिं देहि देहि नम:।

आप चाहें तो प्रत्येक बुधवार एक माला जप कर सकते हैं।

साधना सामग्री 450/-

बथुआ

आयुर्वेद सुधा

भाषा भेद से नाम भेद–सं.–वास्तुक, क्षारपत्र, हि.–बथुआ। म.–चाकवत, चिविल। पंजाब–बथुआ। बं.–बथुआ, साग।

वर्णन–बथुए की साग सारे भारतवर्ष में प्रसिद्ध है। इसका पौधा करीब हाथ भर ऊँचा होता है। इसके पत्ते हरे और बीच-बीच में कुछ ललाई लिये हुए होते हैं। इसकी दो जातियां होती हैं एक बथुआ और दूसरा लाल बथुआ।

गुण, दोष और प्रभाव– आयुर्वेदिक मत से बथुआ अग्नि दीपक, मधुर रस युक्त, वात पित्त नाशक, मल मूत्र को शुद्ध करने वाला, नेत्रों को हितकारी, कृमिनाशक और कफ रोग वाले मनुष्यों के लिये विशेष हितकारी है।

दोनों प्रकार के बथुए में लाल बथुआ विशेष गुणकारी होता है।

बथुआ बवासीर, त्रिदोष, अरुचि और कृमियों को नष्ट करता है। यह बुद्धिवर्धक, बलकारक, जठराग्नि को तेज करने वाला, क्षार युक्त और पचने में कड़वा होता है।

यह शरीर में कोमलता और सर्दी पैदा करता है। हर प्रकार की गर्मी की सूजन, चाहे वह शरीर के अन्दर हो चाहे बाहर उसमें यह लाभ पहुँचाता हैं गर्मी की खाँसी तथा क्षय की बीमारी में इसको बादाम के तेल में पकाकर खाना चाहिये।

पित्त प्रकृति वालों के लिये यह विशेष रूप से लाभदायक है।

इसके पत्तों को पानी में उबाल कर उस पानी में शक्कर मिलाकर पीने से दस्त साफ होता है और गुर्दे तथा मसाने की पथरी टूट जाती है तथा तिल्ली की सूजन बिखर जाती है। इसके उबाले हुए पत्तों का लेप करने से गरमी की सूजन मिट जाती है। इसके पत्तों का उबाला हुआ पानी पीने से रुका हुआ पेशाब खुल जाता है।

लाल बथुआ कुछ काबिज होता है। यह दिल को ताकत देता है। कफ, पित्त और खून के उपद्रव को मिटाता है, फोड़े फुन्सी को मिटाता है। तिल्ली की बीमारी और पेट के कीड़ों को दूर करता है।

बथुए के बीज समशीतोष्ण होते हैं। ये सूजन को बिखेरते हैं। इनको नमक और शहद के साथ लेने से आमाशय की सफाई होती है और दूषित पित्त निकल जाता है। गर्मी की वजह से आई हुई शरीर की सूजन में इन बीजों को पानी में पीसकर शहद में मिलाकर लेप करने से सूजन उतर जाती है।

अगर किसी के यकृत में गठन पड़ जाय और उसकी वजह से उसे पीलिया हो जाए तो 7 माशे बथुवे के बीजों को 21 दिन तक प्रतिदिन देने से यकृत की गांठ बिखर जाती है और पीलिया मिट जाता है। इन बीजों के खाने से मनुष्य की लिंगेन्द्रिय में बहुत ताकत और उत्तेजना पैदा होती है।

तिल्ली–तिल्ली और पित्त के रोगों में बथुए का साग बहुत हितकारी होता है।

पेट के कीड़े–बथुए का रस निकाल कर उसमें नमक मिलाकर पीने से पेट के कीड़े मरते हैं।

मूत्र की कमी–बथुए के स्वरस में मिश्री मिलाकर पिलाने से मूत्रवृद्धि होती है।

अर्श–बथुए का साग खिलाने से अर्श के अंदर लाभ होता है।

प्रसूति कष्ट–बथुए के डेढ तोले बीजों को आधा सेर पानी में औटाकर जब आधा पानी रह जाए तब उसको छान कर पिलाने से संतान होने के समय स्त्री कष्ट से छूट जाती है।

नाड़ीव्रण–बथुए के पत्ते और तम्बाखू के फूलों को पीसकर घी में मिला कर लगाने से नाड़ी व्रण मिटता है।

रक्तपित्त–बथुए के बीजों के चूर्ण को शहद में मिलाकर चटाने से रक्तपित्त में लाभ होता है।

सफेद दाग, दाद, खुजली, फोड़े, कुष्ठ आदि चर्म रोगों में नित्य बथुआ उबालकर इसका रस पीने एवं सब्जी खाने से फायदा होता है।

यदि कब्ज की शिकायत है तो बथुआ खाने से दूर हो जाती है, कुछ सप्ताह इसकी सब्जी खाने से कब्ज पूरी तरह दूर हो जाती है और साथ ही ताकत एवं स्फूर्ति बनी रहती है।

- खून साफ करने के लिए बथुआ खाना फायदेमंद होता है। यह एक अच्छा रक्तशोधक है।

- यह पाचन शक्ति को बढ़ाता है इसमें आयरन प्रचुर मात्रा में होता है और कई बीमारियों से छुटकारा दिलाता है।

- गर्भवती महिलाओं को बथुआ अधिक नहीं खाना चाहिए।

(प्रयोग से पूर्व अपने वैद्य की सलाह अवश्य लें)
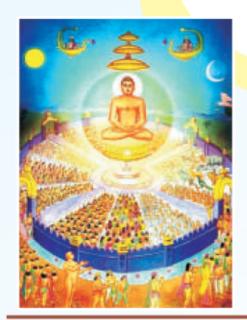
अन्त:करण की शुद्धि हेतु जैन धर्म की...

विपश्यना साधना पद्धति

जिस प्रकार से कपड़ा मैला होने पर साबुन से उसे धोकर साफ कर देते हैं, पर क्या मन मैला होने पर उसे शुद्ध किया जा सकता है, क्या कोई ऐसी विधि है, जिससे अशुद्ध और गंदगी भरा मन पूर्ण शुद्ध हो सके, स्वच्छ हो सके, पवित्र और दिव्य हो सके।

हाँ, इसका उपाय सम्भव है, इसका एक मात्र उपाय विपश्यना साधना है, और यह एक मात्र साधना मन की शुद्धि और पवित्रता के लिए ही है।

एक सारगर्भित लेख, जो आपके लिए विशेष रूप से लिखा गया है।

जब कपड़ा मैला हो जाता है, तो हमें भी अच्छा नहीं लगता और जल्दी से जल्दी उस कपड़े को साफ करने का प्रयत्न करते हैं, साबुन आदि लगा कर जब कपड़े को स्वच्छ कर देते हैं, तभी मन को सुख और संतोष मिलता है।

ठीक उसी प्रकार से बाह्य वातावरण गलत लोगों की संगति, बुरे विचारों वाले लोगों के साथ उठने बैठने से मन भी अशुद्ध और गंदगीयुक्त हो जाता है, जो जीवन भर मैले ही रहते हैं, उनको इसका कुछ भी अहसास नहीं होता, परन्तु जिनका मन दर्पण की तरह स्वच्छ रहा है, यदि कभी उस पर गंदगी, दाग या मैलापन लगता है, तो ऐसे लोग बेचैन हो जाते हैं, उनको कुछ भी अच्छा नहीं लगता, पूजा पाठ ध्यान आदि में इनका जी नहीं करता, दिनभर वे उखड़े-उखड़े से रहते हैं, और ऐसा कोई उपाय ढूंढ़ने का प्रयत्न करते हैं, जिससे कि गंदगीयुक्त मन पुन: स्वच्छ, चमकदार हो जाय और इसका एक मात्र उपाय है, 'विपश्यना साधना पद्धति'।

आज के युग में बाहरी सफाई पर तो बहुत अधिक ध्यान दिया जाता है, स्वच्छ साफ कपड़े पहनते हैं, अपने बालों को शैम्पू से धोते हैं, शरीर पर सुगन्धित साबुन लगाते हैं, और प्रत्येक दृष्टि से नख से शिख तक स्वच्छ बने रहने का प्रयत्न करते हैं, परन्तु हम मन की सफाई और स्वच्छता की ओर बिल्कुल ध्यान नहीं देते। जिसका मन जीवन भर गंदा और अपवित्र रहा है, उसको तो कुछ भी अहसास नहीं होता, परन्तु जिसने एक बार भी स्वच्छ मन का अहसास किया है, जिसने एक दफा पवित्र दिव्य और बेदाग मन का आनन्द लिया है, ऐसे मन पर जब छोटा सा भी कोई दाग या धब्बा लग जाता है, तो वे बेचैन हो उठते हैं, और हर सम्भव तरीके से मन को स्वच्छ करने का प्रयत्न करते हैं।

प्रारम्भ में अगर मन अशुद्ध, अपवित्र, गंदा और गलीच होता है तो कुछ भी अहसास नहीं होता पर धीरे-धीरे यह मन गंदा होता हुआ दुष्ट, पापी, अधर्मी, अत्याचारी और निरंकुश हो जाता है, और यही आगे जा कर विकृति का रूप धारण कर लेता है जिसकी अंतिम परिणिति कुंठा या पागलपन होता है। ऐसी स्थिति आने से पहले ही यदि मन को स्वच्छ कर दिया जाता है तो जीवन में ऐसी कोई समस्या आती ही नहीं, और मन हमेशा प्रसन्न दिव्य और आनन्दयुक्त बना रहता है।

अन्त:करण मैला क्यों होता है

प्रश्न यह उठता है कि जीवन में मन की शुद्धता आवश्यक है और जीवन का आनन्द मन की शुद्धता से ही प्राप्त होता है, तो पहले यह समझ लेना चाहिए कि मन अपवित्र, गंदा या मैला कब और कैसे हो जाता है, इसके लिए थर्मामीटर या यंत्र नहीं है, इसके लिए तो आपको स्वयं को मन के भीतर झांकना पड़ेगा। यदि आपने अन्दर झांक कर नहीं देखा, तो इस प्रश्न का उत्तर आपको मिल भी नहीं सकेगा, आप बाहरी शरीर के मैलेपन को तो देख सकते हैं पर अन्दर के मन के मैलेपन को देखने के लिए आपको ही प्रयत्न करना पड़ेगा।

यदि आप एक क्षण भर शान्ति से बैठ कर विचार करें तो ज्ञात होगा कि आपके मन की व्याकुलता ही आपके मन का विकार है, इसी को ही मन की गंदगी कहा जाता है, मन में किसी विकार का विकार आयेगा तो मन में बेचैनी बढ़ेगी यदि क्रोध आया तो इसका प्रभाव निश्चित रूप से आपके शरीर पर पड़ेगा, मन अत्यन्त ही बेचैन और व्याकुल हो जायेगा, इस क्रोध के असर से शरीर अशांत हो जायेगा, रक्तचाप बढ़ जायेगा हृदय की
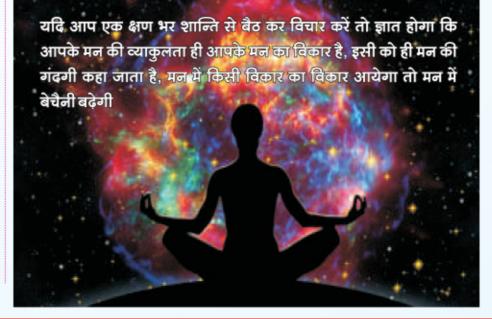
चित्तमन्तर्गतं दुष्टं तीर्थस्नानान्न शुद्धयति
शतशोऽति जलैधौतिं सुरा भाण्डमिवां शुचि।

(स्कन्दपुराण/काशीखण्ड)

चित्त यदि दोषों एवं विकारों से भरा है तो वह व्यक्ति अनेक तीर्थों में जाकर एवं वहाँ स्नान करने पर भी शुद्ध नहीं हो सकता।

जिस प्रकार मदिरा से भरे घड़े को ऊपर से जल द्वारा सैकड़ों बार भी यदि धोया जाए तो भी वह पवित्र नहीं होता। अत: यदि अपने आपको शुद्ध और विकार रहित बनाना है तो अन्त:करण की शुद्धि करें तभी मन:शक्ति जाग्रत हो सकेगी, और सद्गुरुदेव की पूर्ण कृपा प्राप्त होगी।
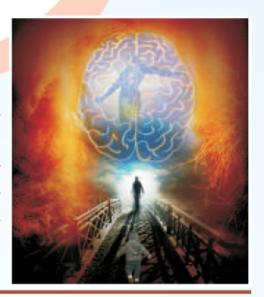
धड़कन तीव्रता से बढ़ने की ओर अग्रसर होगी और काफी समय तक मन व्याकुल बना रहेगा ऐसी स्थिति लालच आने पर होती है जब आप किसी के साथ धोखा या कपट करते हैं तो मन में आशंका, डर और व्याकुलता बढ़ जाती है, यह अलग बात है कि हम इन पर ध्यान नहीं देते, इस बात की चिन्ता भी नहीं करते, परन्तु इससे मन की व्याकुलता ही मन को ऐसा कर बेचैनी बढ़ा देती है।

चिकित्सा शास्त्र के अनुसार मनुष्य शरीर से मरता ही नहीं, जब मन व्याकुल हो कर उसका प्रभाव शरीर पर पड़ता है तब धीरे-धीरे शरीर अशक्त कमजोर और बीमार हो जाता है, यही बीमारी शरीर को जर्जर, कमजोर, अशक्त और बीमार बना देती है।

हमारी यह सबसे बड़ी कमी है कि हम शरीर सुख के लिए मन के सुख की चिन्ता नहीं करते, कहा तो यह गया है कि मन स्वस्थ है तो शरीर स्वस्थ है, पर वास्तविक जीवन में हम इसका उलटा ही करते हैं, मामूली से धन को प्राप्त करने के लिए झूठ, छल, कपट का आचरण करते हैं यह जानते हैं कि यह जमीन हमारी नहीं है फिर भी उसको प्राप्त करने के लिए लड़ाई-झगड़े करते हैं, मारपीट कर बैठते हैं, मुकदमेबाजी में उलझ जाते हैं और यह सब केवल मात्र शरीर सुख के लिए है, जबकि हम यह नहीं सोचते कि इस मामूली से शरीर सुख के लिए हम मन का कितना बड़ा अहित कर रहे हैं, मन को कितना अधिक बीमार और अशक्त बना रहे हैं। परन्तु हमने शरीर सुख पर ज्यादा ध्यान देना शुरू कर दिया है, मन के सुख या मन की शुद्धता पर हमारा ध्यान जाता ही नहीं है, इसीलिए सारे संसार में तड़फ है, असंतोष है।

इसीलिए तो मैं कहता हूँ कि बहिर्मुखी होने से काम नहीं चलेगा, इसके लिए अन्तर्मुखी होना जरूरी है और अन्तर्मुखी पद्धति से ही आप अपने मन के अन्दर झांकने की क्रिया सीख सकेंगे, समझ सकेंगे।

प्रतिक्रमण पद्धति

सामान्य भजन-पूजन या पूजा-पाठ से मन के भीतर नहीं झांका जा सकता, इससे कुछ देर के लिए शान्ति अवश्य मिल जाती है, परन्तु इससे मन की स्वच्छता नहीं हो पाती, मन की स्वच्छता पवित्रता हेतु अन्तर्मन में झांकने के लिए तो प्रतिक्रमण ही श्रेष्ठ पद्धति है।

जैन साधना में प्रतिक्रमण एक आवश्यक प्रक्रिया है, जिसे प्रत्येक श्रावक या साधु को प्रतिदिन करना अनिवार्य है। इस प्रतिक्रमण का अर्थ स्वयं पर नजर डालने की प्रक्रिया है प्रात:काल उठ कर पिछले दिन के जो भी कार्य हुए हैं, जो भी गलत चिन्तन या गलत व्यवहार हुआ है, उसकी समीक्षा कर उन पर प्रायश्चित करने की क्रिया ही प्रतिक्रमण क्रिया है।

इसमें प्रात:काल शांत भाव से बैठकर पहले दिन के गलत कार्यों की समीक्षा करनी होती है, कि कल मैंने किस को गाली दी, किससे लड़ाई की, कौन-कौन से गलत काम किये, कहाँ पैसा खाया, किसको धोखा दिया आदि तथ्यों पर विचार करने पर हमें अपनी गलती का अहसास हो जाता है, मन में यह निश्चित हो जाता है कि अमुक कार्य वास्तव में ही गलत किये हैं, और फिर प्रायश्चित के द्वारा उन गलत कार्यों के लिए क्षमा मांग ली जाती है, और यह दृढ़ संकल्प किया जाता है, कि मैं भविष्य में ऐसा कार्य नहीं करूँगा। इसी प्रकार का प्रतिक्रमण शाम को भी शान्त चित्त से बैठ कर किया जाता है जिसमें दिनभर के गलत कार्यों का लेखा-जोखा होता है, और इसके लिए प्रायश्चित स्वरूप एक दिन का या एक समय का उपवास कर दिया जाता है।

इससे मन को जानने की प्रक्रिया का ज्ञान हो जाता है पर यह क्रिया एक सप्ताह के बाद या महीने के बाद नहीं की जा सकती, क्योंकि हमारा स्थूल शरीर और बुद्धि पुरानी बातों को भूल जाती है, एक दिन पहले की बातें तो याद रहती है इसीलिए जैन धर्म में प्रतिक्रमण उपासना प्रात:काल और सायंकाल दोनों ही समय करने का विधान है।

विपश्यना साधना

केवल उपदेश सुनने से या साधु-सन्तों के विचारों को सुनने से मन की शुद्धता नहीं हो पाती, इसके लिए तो आपको अपने अन्दर उनके उपदेशों को आत्मसात् करना पड़ेगा, गहराइयों तक पहुँचाना पड़ेगा। तभी आप अपने मन की गंदगी को दूर कर सकेंगे, मन की गहराइयों तक पहुँचने की जो विधि है उसी को विपश्यना कहते हैं।

इस सिद्धान्त के लिए किसी भी प्रकार के देवता या पूजा पद्धति की आवश्यकता नहीं है, यह तो केवल स्वयं के आधार पर कार्य पद्धति संचालित होती है, प्रयत्न करते हैं, कि हम शरीर संवेदना को एक जगह स्थिर कर लें, न तो कुछ अच्छा सोचें न बुरा ही सोचे इसमें सोचने और विचार करने की आवश्यकता ही नहीं होती। हम तो केवल तटस्थ भाव से बैठे हुए, सब कुछ देखने लगते हैं, जब हम तटस्थ होकर शांत चित्त से बैठ जायेंगे आँखें बन्द कर लेंगे और सिर की चोटी से ऐड़ी तक इसी क्रिया को करेंगे तो सही अर्थों में हम तटस्थ हो पायेंगे, यह तटस्थता किसी प्रकार का कोई विचार नहीं देता, अब तक तो यह विचार था कि बुरी बात को या बुरे विचारों को हटाना है, अच्छे विचारों को प्राप्त करना है,

जब अन्तर मे परिवर्तन आयेगा तो यह परिवर्तन बाहर स्पष्ट दिखाई देगा,
आंतरिक परिवर्तन से बाहरी परिवर्तन स्थायी हो जाता है,
तब उसका आचरण स्थायी रूप से शुद्ध हो जाता है,
उनके विचार शुद्ध हो जाते हैं,

पर इसमें इन बातों को भी नहीं सोचना है, क्योंकि अब तो मन अच्छाई और बुराई के बीच में तटस्थ होकर बैठ गया है।

बाहरी लड़ाई-झगड़े, मतभेद, अच्छाई-बुराई आदि तो आंख के द्वारा मन से जानी जाती है, पर जब मन केन्द्रीय होकर तटस्थ हो जायेगा, तो वह न अच्छाई को सोचेगा और न बुराई पर विचार करेगा वह तो धीरे-धीरे गहराई तक पहुँचने का प्रयत्न करेगा।

अब मन खुद ही निर्णय करेगा कि अच्छा क्या है, अब यह चिन्तन, बुद्धि के माध्यम से नहीं होगा, मन के माध्यम से होगा, मन यह निर्णय करेगा कि जब हम क्रोध या कोई गलत कार्य करते हैं, तो उसका प्रभाव शरीर पर पड़ता है, विचारों पर पड़ता है, रक्तचाप बढ़ जाता है, धड़कन की गति तीव्र हो जाती है, और इससे मन व्याकुल हो जाता है, तो फिर ऐसा कार्य किया ही क्यों जाय जिससे कि मन व्याकुल हो। वही कार्य करना चाहिए जिससे मन शान्त बना रह सके उसको सुख प्राप्त हो सके, और इससे स्वतः ही मन की गहराइयों से उसके आचरण में शुद्धता और परिवर्तन आयेगा, इसके लिए उपदेश की जरूरत नहीं होती क्योंकि अब यह सब वह खुद ही देख रहा है, उसका मन स्वयं निर्णय कर रहा है, कि क्या उचित है, और क्या अनुचित, और जब मन निर्णय करेगा तो वह सही और अच्छा ही निर्णय करेगा, यही मनुष्य के आन्तरिक परिवर्तन का सही मार्ग है।

जब अन्तर मे परिवर्तन आयेगा तो यह परिवर्तन बाहर स्पष्ट दिखाई देगा, आंतरिक परिवर्तन से बाहरी परिवर्तन स्थायी हो जाता है, तब उसका आचरण स्थायी रूप से शुद्ध हो जाता है, उनके विचार शुद्ध हो जाते हैं, फिर वह अकारण लड़ाई झगड़ा नहीं करता, क्रोध नहीं करता, छल-कपट और असत्य का आचरण नहीं करता और यह परिवर्तन उसके सारे बाहरी व्यवहार को जगमगाहट प्रदान कर देता है।

क्या करें

जब मन को शुद्ध व स्वच्छ करने की प्रक्रिया का ज्ञान हो गया तो केवल यही सोचना है, कि अब क्या किया जाय, इसका उत्तर स्पष्ट है–जिस प्रकार हम शरीर को सुबह और शाम दोनों समय स्वच्छ करते हैं, वैसे ही मन को दोनों वक्त स्वच्छ करना जरूरी है, सुबह भी पहले दिन की सारी बुराइयों को विचार कर लें, देख लें और मन स्वयं निर्णय कर लेगा कि यह गलत हुआ है, और भविष्य में वह ऐसी गलतियाँ नहीं करेगा, इसी प्रकार शाम को भी जब हम शान्तचित्त से बैठेंगे तो दिनभर के क्रियाकलापों पर नजर डालेंगे और हमें ज्ञात हो जायेगा कि हमने कहाँ पर गलती की। किस-किस को धोखा दिया, कहाँ-कहाँ पर झूठ का आश्रय लिया और मन स्वयं निर्णय कर लेगा कि यह गलत हुआ है, जब मन निर्णय लेगा तो गलती की पुनरावृत्ति नहीं हो सकेगी।

धीरे-धीरे तो यह अभ्यास इतना अधिक बढ़ जायेगा कि ज्यों ही हमारे मन में क्रोध आयेगा त्यों ही मन निर्णय देगा कि यह गलत है और उसी क्षण क्रोध समाप्त हो जायेगा, क्रोध समाप्त होते ही मन भी साफ हो जायेगा, उस पर क्रोध का कोई दाग या धब्बा नहीं रहेगा इसके लिए सुबह शाम के वक्त की पाबन्दी की जरूरत नहीं है, जब भी मन में विचार या कुविचार आया तत्क्षण उसकी सफाई आवश्यक है, ज्यादा गंदगी इकट्ठी होने पर उसकी स्वच्छता के लिए बहुत प्रयत्न करना पड़ता है, इससे तो अच्छा यह है, कि जैसे ही गंदगी का ध्यान आये वैसे ही उसको हटाते चलें, और ऐसा करने पर मन पूर्णतः निर्मल रहेगा, स्वभाव में अत्यधिक पवित्रता आ जायेगी और तन-मन दोनों स्वस्थ रहेंगे।

वास्तव में ही आज के युग में प्रत्येक जाति, धर्म या विचारशील व्यक्ति के लिए विपश्यना साधना अत्यधिक आवश्यक है, इससे हमारा मन पूर्ण रूप से पवित्र और दिव्य हो सकेगा, मन में किसी प्रकार का कुविचार आयेगा ही नहीं और धीरे-धीरे अभ्यास ऐसा हो जायेगा कि ज्यों ही चित्त पर या मन पर कुविचार या गंदगी आयेगी तो मन तुरन्त उसे हटा कर स्वच्छ कर देगा। ऐसा ही व्यक्ति सही अर्थों में प्रसन्नचित्त, तनाव रहित स्वस्थ और शुद्ध हो सकता है।

विवाह एवं प्रेम रेखा

हमारे शरीर में सबसे कोमल और विचित्र-सा जो अवयव है, उसका नाम 'दिल' है। एक प्रकार से इसका शरीर में सबसे अधिक महत्त्व है। एक तरफ यह पूरे शरीर में खून पहुँचाने का कार्य करता है, तो दूसरी तरफ अपने-आप में इतना अधिक कोमल होता है कि कई भावनाओं को मन में संजोकर रखता है। कोमल विचार, विपरीत योनि के प्रति भावनाएँ आदि कार्य इसी के माध्यम से सम्पन्न होते हैं। यह इतना अधिक कोमल होता है कि जरा-सी विपरीत बात से इसको ठेस पहुंच जाती है और टूट जाता है। मानवीय कल्पनाओं का यह एक सुन्दर प्रतीक है। करुणा, दया, ममता, स्नेह और प्रेम आदि भावनाएँ इसी के द्वारा संचालित होती हैं।

एक हृदय चाहता है कि वह दूसरे हृदय से सम्पर्क स्थापित करे, आपस में दोनों का प्यार हो। दोनों हृदय एक मधुर कल्पना से ओत-प्रोत हों और जब दोनों हृदय एक सूत्र में बंध जाते हैं, तब उसे समाज विवाह का नाम देता है।

वस्तुतः मानव जीवन की पूर्णता तभी कही जाती है, जबकि उसका अर्द्धांग भी सुन्दर हो, समझदार हो, प्रेम की भावना से भरा हो तथा दोनों के हृदय एक-दूसरे से मिल जाने की क्षमता रखते हों। जिस व्यक्ति के घर में सुशील, सुन्दर, स्वस्थ और शिक्षित पत्नी होती है, वह निश्चय ही इन्द्र भवन से ज्यादा सुखकर माना जाता है। इसलिए हस्तरेखा विशेषज्ञ को चाहिए कि वह जीवन रेखा को जितना महत्त्व दे, लगभग उतना ही महत्त्व विवाह रेखा को भी दे, क्योंकि इस रेखा के अध्ययन से ही मानव जीवन की पूर्णता का ज्ञान हो सकता है।

मानव जीवन की यात्रा अत्यन्त कंटकमय होती है। इस पथ को भली प्रकार से पार करने के लिए एक ऐसे सहयोगी की जरूरत होती है, जो दुख में सहायक हो, परेशानियों में हिम्मत बंधाने वाला हो तथा जीवन में कंधे से कंधा मिलाकर चलने की क्षमता रखता हो।

हथेली में विवाह रेखा या वासना रेखा अथवा प्रणय रेखा दिखने में छोटी होती है, पर इसका महत्त्व सबसे अधिक होता है। कनिष्ठिका उंगली के नीचे, हृदय रेखा के ऊपर, बुध पर्वत के बगल में हथेली के बाहर निकलते समय जो आड़ी रेखाएं दिखाई देती हैं, वे रेखाएं ही विवाह रेखाएं कहलाती हैं।

हथेली में ऐसी रेखाएं दो-तीन या चार हो सकती हैं, पर उन सभी रेखाओं में एक रेखा मुख्य होती है। यदि ये रेखाएँ हृदय रेखा से ऊपर हों, तो वे विवाह रेखाएँ कहलाती हैं और ऐसे व्यक्ति का विवाह निश्चय ही होता है। परन्तु ये रेखाएँ यदि हृदय रेखा से नीचे हों, तो ऐसे व्यक्ति का विवाह जीवन में नहीं होता।

यदि हथेली में दो या तीन विवाह रेखाएँ हों, तो जो रेखा सबसे अधिक लम्बी पुष्ट और स्वस्थ हो उसे विवाह रेखा मानना चाहिए। बाकी रेखाएँ इस बात की सूचक होती हैं, कि या तो विवाह से पूर्व उतने सम्बन्ध होकर छूट जाएंगे अथवा विवाह के बाद उतनी अन्य स्त्रियों से सम्पर्क रहेंगे।

पर इसके साथ ही साथ जो छोटी-छोटी रेखाएँ होती हैं, वे रेखाएँ प्रणय रेखाएँ कहलाती हैं। वे जितनी रेखाएँ होंगी, व्यक्ति के जीवन में उतनी ही पर-स्त्रियों का सम्पर्क रहेगा। यही बात स्त्रियों के हाथ में भी लागू होती है।

पर केवल ये रेखाएँ देखकर ही अपना मत स्थिर नहीं कर लेना चाहिए। पर्वतों का अध्ययन भी इसके साथ-साथ आवश्यक है। यदि इस प्रकार की रेखाएँ हों और गुरु पर्वत ज्यादा पुष्ट हो तो निश्चय ही ऐसा व्यक्ति प्रेम सम्बन्ध स्थापित करता है, पर उसका प्रेम सात्त्विक और निर्दोष होता है। यदि शनि पर्वत विशेष उभरा हुआ हो और ऐसी रेखाएँ हों, तो व्यक्ति अपनी आयु से बड़ी आयु की स्त्रियों से प्रेम सम्बन्ध स्थापित करता है। यदि हथेली में सूर्य पर्वत पुष्ट हो और ऐसी रेखाएँ हों, तो व्यक्ति बहुत अधिक सोच-विचार कर अन्य स्त्रियों से प्रेम सम्पर्क स्थापित करता है। यदि बुध पर्वत विकसित हो तथा प्रणय रेखाएँ हाथ में दिखाई दें, तो ऐसे व्यक्ति को प्रेमिकाओं से भी धन लाभ होता है। यदि हथेली में प्रणय रेखाएँ हों और चन्द्र पर्वत विकसित हो, तो व्यक्ति काम लोलुप तथा सुन्दर स्त्रियों के पीछे फिरने वाला होता है। यदि शुक्र पर्वत बहुत अधिक विकसित हो तथा प्रणय रेखाएँ हों, तो वह व्यक्ति अपने जीवन में कई स्त्रियों से सम्बन्ध स्थापित करता है, तथा पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

प्रणय रेखा का हृदय रेखा से गहरा सम्बन्ध होता है। ये प्रणय रेखाएँ हृदय रेखा से जितनी अधिक नजदीक होंगी, व्यक्ति उतना ही कम उम्र में प्रेम सम्बन्ध स्थापित करेगा, ये प्रणय रेखाएँ हृदय रेखा से जितनी अधिक दूर होंगी, व्यक्ति के जीवन में प्रेम सम्बन्ध उतना ही अधिक विलम्ब से होगा।

यदि हथेली में प्रणय रेखा न हो, तो व्यक्ति अपने जीवन से संयमित रहते हैं तथा वे काम लोलुप नहीं होते।

यदि प्रणय रेखा गहरी और स्पष्ट हो, तो उस व्यक्ति के प्रणय सम्बन्ध भी गहरे बनेंगे। परन्तु यदि ये प्रणय रेखाएँ छोटी तथा कमजोर हों, तो उस व्यक्ति के प्रणय सम्बन्ध भी बहुत कम समय तक चल सकेंगे।

यदि दो प्रणय रेखाएँ साथ-साथ बढ़ रही हों, तो उसके जीवन में एक साथ दो स्त्रियों से प्रेम सम्बन्ध चलेंगे, ऐसा समझना चाहिए। यदि प्रणय रेखा पर क्रॉस का चिह्न हो तो व्यक्ति का प्रेम बीच में ही टूट जाता है। यदि प्रणय रेखा पर द्वीप का चिह्न दिखाई दे तो उसे प्रेम के क्षेत्र में बदनामी सहन करनी पड़ती है। यदि प्रणय रेखा सूर्य पर्वत की ओर आ रही हो, तो उस व्यक्ति का प्रेम सम्बन्ध ऊँचे घरानों से रहेगा। यदि प्रणय रेखा आगे जाकर दो भागों में बंट जाती हो, तो उस व्यक्ति के प्रेम सम्बन्ध जल्दी ही समाप्त हो जाते हैं। यदि प्रणय रेखा से कोई सहायक रेखा हथेली में नीचे की ओर जा रही हो, तो वह इस क्षेत्र में बदनामी सहन करता है। यदि प्रणय रेखा से कोई सहायक रेखा हथेली में ऊपर की ओर बढ़ रही हो, तो उसका प्रणय सम्बन्ध टिकाऊ रहता है तथा जीवनभर आनन्द उपभोग करता है। यदि प्रणय रेखा बीच में टूटी हुई हो, तो उससे प्रेम सम्बन्ध बीच में ही टूट जाएंगे।

अब मैं विवाह रेखा से सम्बन्धित कुछ तथ्य पाठकों के सामने स्पष्ट कर रहा हूँ-

1. यदि विवाह रेखा स्पष्ट, निर्दोष तथा लालिमा लिए हुए हो, तो व्यक्ति का वैवाहिक जीवन अत्यन्त सुखमय होता है।
2. यदि दोनों हाथों में विवाह रेखाएँ पुष्ट हों, तो व्यक्ति दाम्पत्य जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।
3. यदि विवाह रेखा कनिष्ठिका उंगली के दूसरे पोर तक चढ़ जाए तो वह व्यक्ति आजीवन अविवाहित रहता है।
4. यदि विवाह रेखा नीचे की ओर झुककर हृदय रेखा को स्पर्श करने लगे तो उसकी पत्नी की मृत्यु समझनी चाहिए।
5. यदि विवाह रेखा टूटी हुई हो, तो जीवन में मध्यकाल में या तो पत्नी की मृत्यु हो जाएगी अथवा तलाक हो जाएगा, ऐसा समझना चाहिए।
6. यदि शुक्र पर्वत से कोई रेखा निकलकर विवाह रेखा से सम्पर्क स्थापित करती है, तो उसका वैवाहिक जीवन अत्यन्त दुखमय होता है।
7. यदि विवाह रेखा आगे चलकर दो मुंह वाली बन जाती है, तो इस प्रकार के व्यक्ति का दाम्पत्य जीवन सुखमय नहीं कहा जा सकता तथा उसका वैवाहिक जीवन कलहपूर्ण रहता है।
8. यदि विवाह रेखा से कोई पतली रेखा निकल कर हृदय रेखा की ओर जा रही हो, तो उसकी पत्नी से जीवन भर बनी रहती है।
9. यदि विवाह रेखा चौड़ी हो, तो विवाह के प्रति उसके मन में कोई उत्साह नहीं रहता।
10. यदि विवाह रेखा आगे जाकर दो भागों में बंट जाती हो और उसकी एक शाखा हृदय रेखा को छू रही हो, तो वह व्यक्ति पत्नी के अलावा अपनी साली से भी वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करेगा।

11. यदि विवाह रेखा आगे जाकर कई भागों में बंट जाए, तो उसका वैवाहिक जीवन अत्यन्त दुखमय होता है।

12. यदि विवाह रेखा मस्तिष्क रेखा को छू ले तो वह व्यक्ति अपनी पत्नी की हत्या करता है। यदि बुध पर्वत पर विवाह रेखा कई भागों में बंट जाए तो बार-बार सगाई टूटने का योग बनता है।

13. यदि विवाह रेखा सूर्य रेखा को स्पर्श कर नीचे की ओर बढ़ती हो, तो ऐसा विवाह अनमेल विवाह कहलाता है।

14. यदि विवाह रेखा की एक शाखा नीचे झुककर शुक्र पर्वत तक पहुँच जाए तो उसकी पत्नी व्यभिचारिणी होती है।

15. यदि विवाह रेखा पर काला धब्बा हो, तो उसे पत्नी का सुख नहीं मिलता।

16. यदि विवाह रेखा आगे चलकर आयु रेखा को काटती हो, तो उसका वैवाहिक जीवन कलह पूर्ण रहता है।

17. यदि विवाह रेखा, भाग्य रेखा तथा मस्तिक रेखा परस्पर मिलती हों, तो उसका वैवाहिक जीवन अत्यन्त दुखदायी समझना चाहिए।

18. यदि विवाह रेखा को कोई आड़ी रेखा काटती हो, तो व्यक्ति का वैवाहिक जीवन बाधाकारक होता है।

19. यदि कोई अन्य रेखा विवाह रेखा में आकर या विवाह रेखा स्थल पर आकर मिल रही हो, तो प्रेमिका के कारण उसका गृहस्थ जीवन नष्ट हो जाता है।

20. यदि विवाह रेखा के प्रारम्भ में द्वीप का चिह्न हो, तो काफी बाधाओं के बाद उसका विवाह होता है।

21. यदि विवाह रेखा जहाँ से झुक रही हो, उस जगह क्रॉस का चिह्न हो तो उसकी पत्नी की मृत्यु अकस्मात होती है।

22. यदि विवाह रेखा पर एक से अधिक द्वीप हों, तो व्यक्ति जीवन भर कुंवारा रहता है।

23. यदि बुध क्षेत्र के आस-पास विवाह रेखा के साथ-साथ दो तीन रेखाएं चल रही हों, तो जीवन में पत्नी के अलावा उसके सम्बन्ध दो-तीन स्त्रियों से भी रहते हैं।

24. यदि विवाह रेखा बढ़कर कनिष्ठिका की ओर झुक जाए तो उसके जीवन साथी की मृत्यु उसके पूर्व होती है।

25. विवाह रेखा का अचानक टूट जाना, गृहस्थ जीवन में बाधा स्वरूप समझना चाहिए।

26. यदि बुध क्षेत्र में दो समानान्तर रेखाएँ हों, तो उसके दो विवाह होते हैं, ऐसा समझना चाहिए।

27. यदि विवाह रेखा आगे चलकर सूर्य रेखा से मिलती हों, तो उसकी पत्नी उच्च पद पर नौकरी करने वाली होती है।

28. यदि दो हृदय रेखाएँ हों, तो व्यक्ति का विवाह अत्यन्त कठिनाई से होता है।

29. यदि चन्द्र पर्वत से रेखा आकर विवाह रेखा से मिले, तो ऐसा व्यक्ति भोगी, कामुक तथा गुप्त प्रेम रखने वाला होता है।

30. यदि मंगल रेखा से कोई रेखा आकर विवाह रेखा से मिले, तो उसके विवाह में बराबर बाधाएँ बनी रहती हैं।

31. विवाह रेखा पर जो खड़ी लकीरें होती हैं, वे सन्तान रेखाएँ कहलाती हैं।

32. सन्तान रेखाएँ अत्यन्त महीन होती है, जिन्हें नंगी आँख से देखा जाना सम्भव नहीं होता।

33. इन सन्तान रेखाओं में जो लम्बी और पुष्ट होती हैं, वे पुत्र रेखाएँ होती हैं तथा जो महीन और कमजोर होती हैं, उन्हें कन्या रेखा समझना चाहिए।

34. यदि मणिबन्ध कमजोर हो तथा शुक्र पर्वत अविकसित हो तो ऐसे व्यक्ति को जीवन में सन्तान सुख नहीं रहता।

35. यदि स्पष्ट और सीधी रेखाएँ होती हैं, तो सन्तान स्वस्थ होती है, परन्तु यदि कमजोर रेखाएँ होती हैं, तो सन्तान भी कमजोर समझनी चाहिए।

36. विवाह रेखा को 60 वर्ष का समझ कर इस रेखा पर जहाँ पर भी गहरापन दिखाई दे, आयु के इस भाग में विवाह समझना चाहिए।

वस्तुतः विवाह रेखा का अपने-आप में महत्त्व है और इस रेखा का अध्ययन पूर्णतः सावधानी के साथ किया जाना चाहिए।

(पूज्य गुरुदेव की पुस्तक-'वृहद हस्त रेखा शास्त्र' से साभार)

Any day

Navratri Special

Paaradeshwari DURGA

FROM THE VERY ANCIENT TIMES THERE HAVE BEEN SEVERAL SADHANAS AND FORMS OF WORSHIP RELATING TO SHAKTI OR THE DIVINE POWER IN THE FORM OF A GODDESS.

In the ancient Indian scriptures, **Brahm** has been the most emphasized element and it's been said that just as God is present in every particle in this universe in the form of Sat and Chit i.e. Truth and divine soul; similarly the joyous emergy of Goddess Shakti is also omnipresent and it's due to the confluencde of these two that a person is able to attain satisfaction and completeness in life.

Hence in order to acquire all comforts and joys Sadhana of the Goddess is a must. Without the divine energy of the Goddess one cannot enjoy true bless.

The basic requirements of material life are not too many, but in the absence of any one of them life becomes a burden. A common man breaks under the pressure of such deficiencies in life, while a capable Sadhak is able to solve all his problems with the help of Sadhanas. Basic necessities of life can in fact be counted on fingers - a healthy body, wealth, no trouble from enemies or state authorities, a good spouse, intelligent children and above all knowledge of spiritualism for attainging salvation. These are believed to be the seven indispensable requierements of a happy and contented life.

All these material as well as spiritual attainments are achievable only with the help of Shakti or the **Goddess Durga.**

Goddess in a marcurial form

In the ancient times the Yogis developed a very special Sadhana of the Goddess. In those times the Yogis were experts in transforming consecrated or Samskarised mercury into gold. Through

Sadhanas they came to the conclusion that when conserated mercury is brought into use in Tantra Sadhanas their effectiveness increases manifold. Thus Paarad or consecrated mercury gained a significant place in the practices of Tantra.

improvisations in Sadhanas they came to the conclusion that when conserated mercury is brought into use in Tantra Sadhanas their effectiveness increases manifold. Thus Paarad or consecrated mercury gained a significant place in the practices of Tantra.

Among these Sadhanas a very secret and effective ritual is that of **Paaradeshwari Durga**. In this practice an idol of Goddess Durga of Paarad is worshipped. This form of the Goddess is termed as **Paaradeshwari Durga** and such an idol is prepared through a very complex process. Whenever an idol is prepared for Sadhana it is also subjected to various special processess of enlivening through **Pran Pratishttha Mantras**. As this idol is of a special metal, mercury, which generally remains in liquid form, hence the process involved is very compex and intricate. This science has long remained a secret as it was never written down; but was passed on orally from a Guru to his disciples.

On being consecrated or Samskarised, mercury loses all its impurities and becomes solidified. Sadhanas accomplished on idols made of such mercury always prove to be very fruitful. Hence every Sadhak should obtain such an idol from a capable Guru and accomplish Sadhana on it.

Paaradeshwari Durga Sadhana

The Sadhanas of Goddess Shakti attain special significance during Navratri. In these special days tha Goddess is worshipped for nine or eight days this practice can be accomplished to gain the most.

Wear yellow clothes and sit facing the East, on a yellow worship-mat. Before yourself place a wooden seat and on it spread a yellow cloth. In a copper plate spread some flower petals and on these place the mercury idol of **Paaradeshwari Durga.** Light and earthen lamp filled with pure Ghee and pray to the Goddess - ***"Ma Bhagwati Jagdamba, I pray to you to remain permanently in my house in the form of this idol."*** Worship the Goddess by offering betel nuts, unbroken rice grains, flowers, vermilion, red saffron, cloves and cardamom. Then chant the following verse.

Taamagni-vernnaam Tapasaa Jwalanteem,
Veirochaneem Karmphaleshu-jushtaam.
Durgaam Deveem Sharannmaham Prapadye, Sutarasi Tarase Namah.

i.e. I offer myself in the feet of the Goddess who has the brilliance of fire, the radiance of divine powers and who appears on earth to bestow totality to the life of Sadhaks worshipping Her. O Mother ! You are a bridge to the heavens, you are the Goddess capable of blessing me with salvation... I bow down before you.

After this chant the following Mantra with a **Kaamdaa Mala**, a special rosary which if worn around the neck instils divine energy into a Sadhak. Chant 51 rounds of this Mantra if doing a one-day Sadhana.

Om Ayeim Shreem Hreem Paaradeshwaryei Hreem Shreem Ayeim Phat.
ॐ ऐं श्रीं ह्रीं पारदेश्वर्यै ह्रीं श्रीं ऐं फट्

If you wish to perform this Sadhana during Navratri you should chant 11 rounds daily for nine or eight days during the festival period. After Sadhana the idol should be established in the place of worship at home and the rosary can be worn around the neck. Thus this Sadhana is accomplished and one is able to fulful all wishes nurtured in one's heart.

Sadhana Articles : 600/-

आगामी माह में विभिन्न शहरों में आयोजित होने वाले साधना शिविर

07 मार्च, 2021

गुरु-शिष्य मिलन एवं दीक्षा कार्यक्रम

Shivir Address :

Canary Sapphire Hotel, S.C. Road, opp. Annama Devi Temple, Gandhi Nagar, Dist. : Bangalore)

Contact No. : 8210257911, 9199409003, 8660106621, 9632172538, 8310208987, 8660271419

10 मार्च, 2021

महाशिवरात्रि साधना शिविर

शिविर स्थल :

दंतेश्वरी मन्दिर के नीचे, सांस्कृतिक भवन, टाऊन हॉल, नगर पंचायत, अम्बागढ़ चौकी, जिला : राजनांदगांव (36गढ़)

सम्पर्क सूत्र : महेश देवांगन-9424128098, गनपत नेताम- 94060 12157, कार्तिक राम कोमा-9111769650, एम.पी. तिवारी- 90981 57841, थानेश्वरी तुमरेकी-9406422720, नन्दुराम धनेन्द्र- 77728 61646, रेणुका महाले-7771065790, रामजी लाल विश्वकर्मा- 95896 70832, मंगतूराम भारद्वाज-9907948125, ईश्वरी उइके- 78694 41491, प्रहलाद मांडवे-9691824125, पवन सिन्हा -99078 20056, महेन्द्र सारथी-9907129567, केतुलाल चन्देल- 982746958, शशिकांत बाजपेयी-9798310592, शंक कुमार साखरे- 7869766001, लोभान चन्द्रवंशी-7898530976, अशोक निषाद -6260454976

11 मार्च, 2021

महाशिवरात्रि साधना शिविर

शिविर स्थल :

अनन्त पैलेस, पारी नाला, बाईपास रोड, सी.आई.टी. कॉलेज के पास, जिला : राजनांदगांव (36गढ़)

आयोजक : अंतर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार, छत्तीसगढ़ एवं श्री भगवती नारायण धर्मार्थ सेवा समिति छत्तीसगढ़-सम्पर्क सूत्र : महेश देवांगन-9424128098, जी.आर. घाटगे-9425525748, लखेश्वर चन्द्रा-9827492838, सेवाराम वर्मा-9977928379, संजय शर्मा- 99939 09082, दिनेश फुटान-8959140005, लेखराम सेन- 9826957606, हितेश ध्रुव-9826541021, एन.सी. निराला-93292 78047, संजीव तिवारी-7898009665, जनक यादव-9630207072, विकेश शर्मा-7869092221, देवलाल सिन्हा-9009490734, डॉ. जगजीवन निषाद-9977026040, प्रतापसिंह प्रधान-7566555111, पिताम्बर ध्रुव-9993242093, संतोष जैन-9893471488, सियाराम बरेठ- 97558 36240, समयलाल चौहान-7722870684, अजय पटेल-7869775546, संतोष साहू-9300768605, अजय साहू-9009579631, संतोष लहने-9301211762, राजनांद गांव-बेनीराम गजेन्द्र-9409608711, भगवती प्रसाद देवांगन-9827181863, ज्ञानेश तुमरेकी- 990710 26649, डॉ. भूषण आनंद साहू-9753373849, देवेन्द्र साहू-9301731624, डॉ. अभय तेलंग-7694945141, सुबोध राजन- 93000 71111, कान्ती साहू-7489426006, नकुल सिन्हा-98278 10161, चेतन साहू-7771095317, संतोष देशमुख-7869325370, दिनेश यादव-8120160743, भावेश देवांगन-8109450621, डॉ. शांतनु देवांगन-7000395637, लेखराम वर्मा-9981180036, संतोष मण्डलोई-9406239700, कार्तिक साहू-8827275161, गिरवर साहू-78983 51638, मोहन सिन्हा-789882120, बिकहत देवांगन- 7587716589, संतोष वर्मा-9407944699, ओंकार सिन्हा-81036 58512, तेजेश्वर गौतम-9827950765, मुकेश देशमुख-9174830776, गोवर्धन वर्मा-7771802940, पुखराम श्रीवास-9926132675, जितेन्द्र वर्मा-91659 93292, यादव राम कोठारी-9753941224, रामनारायण सोनवानी-9827413295, हेमन्त साहू-9754205015, राजू यदु-9893463106, सुंदर साहू-9165044529, डॉ. जितेन्द्र सिंह-9589445714, अशोक निषाद-6261284718, भोलेशंकर साहू-8878909969, गोपाल साहू-8819974252, मनराखन श्याम-7477002531

2 अप्रैल, 2021

श्री निखिलेश्वरानन्दजी देह स्थापन प्रयोग एवं दीक्षा शिविर

शिविर स्थल :

जोरावर स्टेट पार्टी प्लॉट, वाघोडिया क्रॉसिंग एवं डभोई क्रॉसिंग के बीच, नेशनल हाईवे नं. 8 बाईपास, नियर इस्टर्न आर्केड, जिला : वड़ोडरा (गुजरात)

(निखिल स्तवन पाठ सुबह 9.00 बजे से 10 बजे तक)

आयोजक : अंतर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार, बड़ोदा, सम्पर्क सूत्र : पी.के. शुक्ला-9426583664, चिराग महेश्वरी-9725323930, कनुभाई सोनी-9737836800, सुनील सोनी-9925555035, विरल सोनी-9925234536, महेन्द्र सिंह राणा-98250 26711, हितेश शुक्ला-8141376295, विजय भाई दर्जी, हितेश बिरला, अपूर्व वोरा, कान्ति भाई परमार, रमाकान्त सोनी- 9725880140, ज्योति पाटिल, प्रकाश पटेल, अल्पेश राठवा, अजय अग्रवाल, विरेन्द्र शर्मा, मनोज महेश्वरी, राजेश भट्ट, रोहित मोरे, कमलेश शर्मा, यतिन पंडया, रेवजी पटेल, मुकेश पढियार, अशोक परमार, भावेश पटेल, ललित प्रसाद, भूपेन्द्र भाई सुथार

आगामी माह में विभिन्न शहरों में आयोजित होने वाले साधना शिविर

04 अप्रैल, 2021

त्रिशक्ति साधना शिविर

शिविर स्थल :

नामधारी गार्डन, सीसमो होटल, कल्पना एसकोयर,
जिला : **भुवनेश्वर** (उड़ीसा)

आयोजक-भुवनेश्वर : 9199409003, 8144904640, 8210257911, 9437001098, 9438525977, 9437358366, 8327728674, 8249804350, 9438642786, 77899 29600, 8917672820, 9776184113

11 अप्रैल, 2021

श्री निखिलेश्वरानन्दजी देह स्थापन प्रयोग एवं दीक्षा शिविर

शिविर स्थल :

शिक्षण संगीत आश्रम, स्वामी श्री वल्लभदास मार्ग,
निअर गुरु कृपा हॉटल, प्लॉट नं. 6, सायन (पूर्व),
जिला : **मुम्बई-400022**

(सायन स्टेशन वॉकेबल 5 मिनिट)

आयोजक-मुम्बई : तुलसी महतो-9967163865, संतलाल पाल -9768076888, यशवंत देसाई-9869802170, नागसेन पवार -9867621153, अजय मांचरेकर, मानव, पीयूष, सुनील साल्वी, श्रीनिवास, गुरु, रोहित शेट्ठी, मनोज झा, राकेश तिवारी, हमप्रसाद पाण्डे, बुद्धिराम पाण्डे, गंगा, जिया, सीता, सोनू, दिलीप झा, उपाधे, पूर्णिमा (नेपाल), प्रकाश सिंह, संजय गायकवाड़, गोरखनाथ, बसन्ती, पीताम्बर (नेपाल), रामेश्वर, अनयसिंह, जी.डी. पाटिल, रवि पाटिल, मोहनी सैनी, हरिभाई विश्वकर्मा, सुहासिनी दयालकर, गायत्री दयालकर, अजय कुमार सिंह, प्रवीण राय, वीरेन्द्र, श्यामसुन्दर, भावप्रसाद पाण्डे, रवि साहू, राकेश तिवारी, भाव प्रकाश, निर्मल कुमार, राघवेन्द्र प्रताप, प्रवीण भारद्वाज, प्रीतम भारद्वाज, संतोष अम्बेडकर, राजकुमार मिश्रा, अनीता हंसराज भारद्वाज, अरविन्द अरोड़ा, राहुल पाण्ड्या, विवेक पवार, गीता, ममता, राजेश उपाध्याय

14 अप्रैल, 2021

भगवती दुर्गा साधना शिविर

शिविर स्थल :

जानोलकर मंगल कार्यालय, केशव नगर, रिंग रोड
जिला : **अकोला** (महाराष्ट्र)

(निखिल स्तवन पाठ सुबह 9.00 बजे से 10 बजे तक)

आयोजक मण्डल : राजेश सोनोने-9823033719, रविंद्र अवचार- 9921138349, 9423468059, भास्कर कापडे-9623454354, विष्णु जायले-9623454353, आनंद गुप्ता, विनायकराव देशमुख- 94229 37169, पुंजाजी गावंडे-9527570406, श्याम दायमा-8805710711, राजू चिंचोळकर -9850574122, श्रीनिवास पावसाळे-9767605061, शंकरराव अंभोरे- 9960152144, राजेश राऊत-9145860760, दिनेश कोरे-98225 60901, संतोष दांडगे-9822730441, संजय शेन्डे-96044 83029, दयाराम घोडे-7350655850, धीरज टापरे-9975054742, गुणवंत जानोरकर -9226070462, किशोर नरहर पाटिल-97667 75911, राजेश पाटिल-9028465950, सुनील खंडारे-9623744190, सुनील जामनारे-9850333769, शरद पवार-9696323452, शशिकांत लोंढे- 7798130130, मनीष येन्डे-9326917415, गणेश काळे-98506 63935, संदीप बढे-7387393556, प्रह्लाद भरसाळदे-9766333084, गजानन बलोदे-9822716368, मंगेश सोनोने-9623454352, धनराज माळी- 8007727479, प्रवीण सोनोने-9405674015, ज्ञानेश्वर लिखार- 9860972211, अरुण म्हैसने-9923313939, नारायण इंगळे-9922072683, अरुण रावरकर- 9822943520, प्रवीण वाघमारे-7249390312, पांडुरंग मास्कर-9860279267, सौ. ममता घाटोळ-9552658461, अरुण पवार-9822808593, मुरलीधर शेटे-9850251078, दिलीप कुमरे-8975255794, कृष्णा रावणकार-9011883645, विजय भगत- 9075072619, शकील सर्जेकर-7841969809, पुरुषोत्तम निंबाळकर-9011929278, अवधूत सिरसाट-9766451677, किशोर चव्हाण- 9975957702, रामकृष्ण नवघरे-9850159069, प्रमोद सोनोने-9370549394, हरीभाऊ उकर्डे-9325811463, दीपक मालोकार-9921964053, सुधाकर पुंडकर-9637384570, विजय लोहकरे-81494 83987, राजेश सरोदे-9623408967, अंकुश मिसाळ- 9860674496, निलेश चव्हाण- 9579034331, महेंद्र पवार-8788364330, मनीष कनोजिया- 94229 88945, अशोक चव्हाण-9226893205, चंद्रपुर-वतन कोकास-9422114621, बालाघाट-नरेन्द्र बोम्प्रे-9406751186, गडचिरोली- दुल्लुराज बुइक-9422615423, यवतमाळ-श्रीकांत चौधरी-9822728916, अमरावती-रोहित काळे-8551975547, वर्धा-चंद्रकांत दौड-8379080867, नागपुर-वासुदेव ठाकरे -9764662006, किशोर वैद्य, सारंग चौधरी- 9921672114, भण्डारा -देवेन्द्र काटखाये-7020221640, नरेन्द्र काटेखाये-9403419979, गोंदिया -डी.के. सिंह-9226270872

21 अप्रैल, 2021

सद्गुरु जन्मोत्सव साधना शिविर

शिविर स्थल :

जिला : **मुरादाबाद** (उत्तरप्रदेश)

सम्पर्क सूत्र : पुष्पेन्द्रसिंह-9412342835, खिलेन्द्र सिंह-9837458090, मुनेन्द्रसिंह-9756700204, रणजीत सिंह-9027765397, आयोजक मण्डल-कैप्टन श्यामवीरसिंह-9997944895, डॉ. सतीश सक्सेना, युवराजसिंह-9627642048, नितिन अग्रवाल-9258890999, कुसुम लता यादव, रागिनी गुप्ता-8433446020, कृष्णकुमार मिश्रा- 98971 05859, यशवीरसिंह-9758337325, सोमपालसिंह, कर्मकेन्द्रसिंह, मुकुलसिंह, भूपेन्द्रसिंह, मनोज विश्नोई, अर्पित विश्नोई, योगेन्द्र चौहान, कुलवीरसिंह, सम्भल-मोनू कुमार, रिंकू सैनी, पदमसिंह, सतेन्द्रसिंह, सुरेन्द्रसिंह, विजेन्द्रसिंह, नागेन्द्रसिंह, अक्षय त्यागी, नीतूपाल, मिलन शर्मा, रामनाथ त्यागी, नवीन वर्मा, गजरौला-प्रेमनाथ उपाध्याय, श्यामसुन्दर कौशिक, शेखर वर्मा, विकास अग्रवाल, हरवेन्द्रसिंह, अनिल शर्मा, विनोद पाण्डे, अनिल राजपूत, गतेन्द्रसिंह, शत्रुध्न त्यागी, दीपक कोहली, बिजनौर-अनुराग त्यागी, सुरभि अग्रवाल, धामपुर-अनिल अग्रवाल, सुरेश रस्तौगी, राजकुमार रस्तौगी, काशीपुर-वी.के. मिश्रा, आसू मिश्रा, मयंक मिश्रा, हल्द्वानी-आनन्द राणा, हरीश प्रसाद, चन्द्रजीत भसीन, उधमसिंह नगर-सुनील रुहेला, हरभजनसिंह, सी.एस. पाण्डे, बरेली-राजेश प्रताप, लखीमपुरखीरी-भोलेशंकर सिंह, सरोज रस्तोगी, कानपुर-शैलेन्द्र सिंह-9721167706, श्रीमती नीलम- 8004793975, सुरेश पाण्डे, महेन्द्र सिंह, कायमगंज-अरुण कुमार शाक्य, रमाकान्त, लखनऊ-अजयकुमार सिंह, सतीश टण्डन, जयंत मिश्रा, नागपुर-वासुदेव ठाकरे, नैनीताल-पप्पन जोशी

इतने प्रयासों के बाद भी आज तंत्र के नाम से लोग भय खाते हैं तो उसके पीछे कारण यही है कि लोगों ने इसका उपयोग सभी के हित में करने के बजाय अपने निजी स्वार्थ और लालच में अधिक किया है। आजकल गांव और शहरों में ऐसे अनेक दुष्ट एवं स्वार्थी तांत्रिक कुछ रुपये लेकर किसी के ऊपर घटिया स्तर के टोने-टोटके कर देते हैं, जिससे एक सीधे-साधे व्यक्ति का सुखी जीवन बाधाओं एवं परेशानियों से भर जाता है। व्यक्ति समझ ही नहीं पाता कि क्यों अचानक उसके परिवार में लोग बीमार पड़ रहे हैं ? क्यों बच्चे पढ़ाई में पिछड़ रहे हैं ? क्यों घर में कलह हो रही है ? क्यों कमाई से अधिक खर्च की नौबत आ गई है ? क्यों हर जगह असफलता मिल रही है ? इन सबके पीछे प्रायः उनके ईर्ष्या करने वाले किसी शत्रु द्वारा किया गया तंत्र प्रयोग ही होते हैं।

ज्वालामालिनी दीक्षा सभी प्रकार के तंत्र प्रयोग समाप्त कर साधक के जीवन में आ रही सभी बाधाओं का नाश कर सौभाग्य पथ खोल देती है। इस दीक्षा को प्राप्त कर इससे सम्बन्धित मंत्र जप अवश्य करें।

योजना केवल 13, 14 एवं 21 मार्च 2021 इन दिनों के लिए है

किन्हीं पांच व्यक्तियों को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 2250/- 'नारायण मंत्र साधना विज्ञान, जोधपुर के बैंक के खाते में जमा करवा कर आप यह दीक्षा उपहार स्वरूप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। दीक्षा के लिए फोटो आप हमें संस्था के वाट्स अप नम्बर 8890543002 पर भेज दें। इसी वाट्स अप नम्बर पर पांचों सदस्यों के नाम एवं पते भी भेज दे। संस्था के बैंक खाते का विवरण पेज संख्या 64 पर देखें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन : 0291-2433623, 2432010, 7960039

दिल्ली कार्यालय - सिद्धाश्रम 8, सन्देश विहार, एम.एम. पब्लिक स्कूल के पास, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34
फोन नं. : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368

Printing Date : 15-16 February, 2021
Posting Date : 21-22 Feburary, 2021
Posting office At Jodhpur RMS

RNI No. RAJ/BIL/2010/34546
Postal Regd. No. Jodhpur/327/2019-2021
Licensed to post without prepayment
License No. RJ/WR/WPP/14/2018-
Valid up to 31.12.2021

माह : मार्च एवं अप्रैल में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली जी निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)
21 मार्च
16-17 अप्रैल

स्थान
सिद्धाश्रम (दिल्ली)
13-14 मार्च
18-19 अप्रैल

प्रेषक -
नारायण-मंत्र-साधना विज्ञान
गुरुधाम
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)
पोस्ट बॉक्स नं. : 69
फोन नं. : 0291-2432209, 7960039,
0291-2432010, 2433623
वाट्सअप नम्बर : 8890543002